Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दिसम्बर
मार्गशीर्ष

ओ३म्

२०००
२०५७

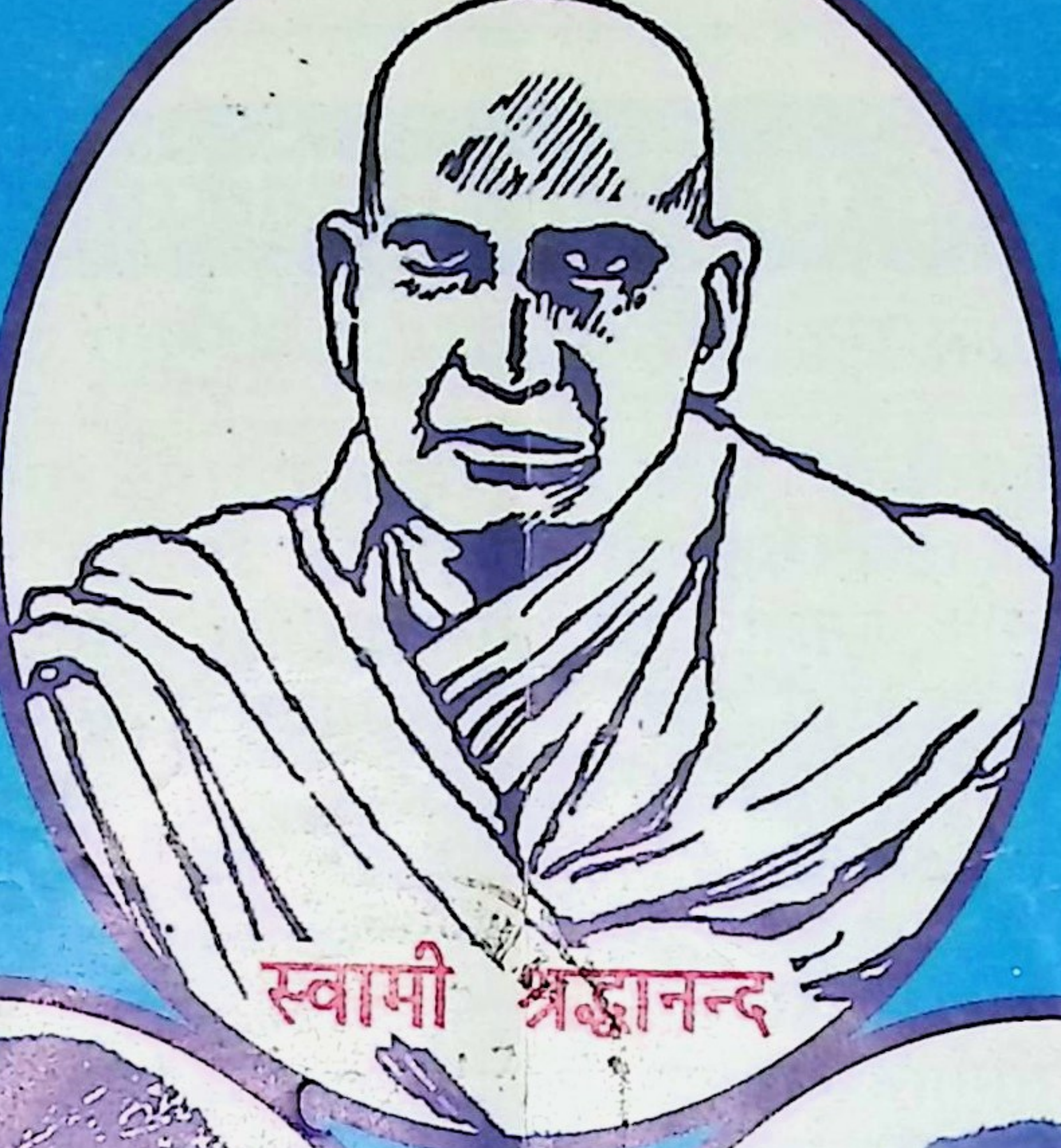

स्वामी श्रद्धानन्द

भाई परमानन्द

महात्मा वेदभिक्षुः

जनज्ञान

मासिक

साइबर सेपियन्स ३५४२९२९, ३५५१८१८

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जनज्ञान के सहयोगी पाठकों से आह्वान्!

कम से कम एक और परिवार में पहुचाएं ज़नज्ञान

'जनज्ञान' वैदिक संस्कृति, विशुद्ध राष्ट्रवाद तथा सबल समर्थ राष्ट्र के सृजन का प्रेरक माध्यम है। पत्रिकाएं तो सैकड़ों हैं। उनमें से अधिसंख्य विशुद्ध व्यावसायिक हैं, जबकि जनज्ञान एक 'अभियान' का सशक्त स्वर है। विद्यमान सामाजिक, राजनीतिक तथा राष्ट्र से संबद्ध विषयों पर निर्भीक टिप्पणियां जनज्ञान की विशेषता है।

- यह अभियान है आर्य मर्यादा के प्रति जागरण का।
- यह अभियान है हिन्दुत्व के तर्कसंगत पृष्ठ पोषण का।
- यह अभियान है सामाजिक समता भाव के स्फुरण का।
- यह अभियान है देशद्रोही तत्वों से समाज को जगाने का।
- यह अभियान है अपने विछुड़े बंधुओं को पुन: साथ लाने का।
- यह अभियान है तुष्टिकरण के चक्रव्यूह से राजनीति को छुड़ाने का।
- यह अभियान है कृणवन्तो विश्वमार्य्यम् के उद्घोष को गुंजाने का।
- यह अभियान है हिन्दुत्व के विश्व बंधुत्वमय स्वरूप को दर्शाने का।
- यदि यह अभियान आपको प्रिय है तो सहयोग का हाथ बढ़ाइये।
- अपने मित्रों, परिजनों में कम से कम एक और जनज्ञान का सदस्य बनाइए।
- यही है परिस्थिति का आह्वान् घर-घर में पहुंचे जनज्ञान
- सामग्री प्रकाशन में आपके सुझाव का होगा स्वागत
- क्योंकि आप हमारे परिजन हैं, नहीं है अभ्यागत

—सम्पादक

दयानंद संस्थान द्वारा प्रकाशित चार नए ग्रन्थ

स्व. पंडित चन्द्रगुप्त वेदालंकार की लोह लेखनी का उपहार

१. वृहत्तर भारत : मूल्य २०० रुपए

विख्यात लेखक और पत्रकार धनारसी सिंह की प्रेरक शैली का प्रतिदान

२. क्रांति यज्ञ के ब्रह्मा भाई परमानंद : मूल्य ३० रुपए

वेदमंत्रों की अंग्रेजी व हिन्दी भाषा में सरल व्याख्या सहित

३. वैदिक प्रेयर (VEDIC PARYER) मूल्य ३० रुपए

सामान्य जन के संध्या-वन्दन का सक्षम माध्यम

४. वैदिक सत्संगपद्धति - मूल्य ५ रुपए

इन चारों पुस्तकों की कुल मूल्य राशि २६५ रुपए २०० रुपए में प्राप्त करें! (डाक से मगाने पर २५ रू. पृथक होंगे।)

* * *

—दयानन्द संस्थान ३२८६ आर्य समाज मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली -५ फोन : ५७२४७४१, ५८१५४५७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ ओ३म् ॥

जनज्ञान

वेद
ऋक् यजु साम अथर्व

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली का प्रकाशन

हिन्दूराष्ट्र स्थापना हेतु संघर्ष करो

कार्यालय
2286 आर्य समाज मार्ग, करोल बाग,
नई दिल्ली-110005
दूरभाष : 5724741, 5815457

प्रधान कार्यालय
वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
लेखरामनगर (इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर
दिल्ली-36, दूरभाष : 7202249

संस्थापक : स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः

सम्पादक : पंडिता राकेश रानी
सह-सम्पादक : दिव्या आर्य

वार्षिक शुल्क-80 रु० आजीवन-501 रु०
एक प्रति - 8 रुपये
विदेश में वार्षिक शुल्क 350 रु.
आजीवन 5001 रु.
दिसम्बर 2000 वर्ष 34 अंक 8

सम्पादकीय

श्रद्धा की पूंजी कर संचित, परम आनंद था पाया वेद सुधा कर पान, उन्होंनें उर अरविंद खिलाया

स्वदेश के समक्ष चुनौतियों का अम्बार है। सीमा पर चुनौती उपस्थित है तो मातृभूमि भारत, में भी ऐसे तत्त्व सक्रिय हैं, जो अपने उन विदेशी आकाओं के संकेत पर अंगार दहकाने हेतु अनुकूल अवसर की खोज हेतु दृष्टि गड़ाए रहते हैं। देश में ऐसे बुद्धि जीवियों की एक पूरी फौज है जो 'बुद्धि के अजीर्ण" से ग्रस्त हैं। मातृभूमि को वंदनीय और वरदाम् मानने के स्थान पर वे इसे भौतिक संपदा मात्र मानते हैं। ऐसे ही बुद्धि वारिधियों ने स्वातन्त्र्य समर के दौरान द्विराष्ट्रवाद के मुस्लिम लीगी दुष्टाग्रह को सैद्धान्तिक आधार प्रदान करने की पतित मानसिकता दर्शायी थी। आज भी शत्रुता के आधार पर मातृभूमि के अंगच्छेदन के बाद अस्तित्व में आया पाकिस्तान जब भारत की एकता, अखंडता और सौहार्द भाव को भस्मसात करने के अपने नापाक इरादों की अभिव्यक्ति खुले आम कर रहा है, तब भी ये बुद्धिजीवी 'शठे शाठ्यम समाचरेत' के सत्य सिद्धान्त केअनुगमन के स्थान पर नागपंचमी जैसे अनुष्ठान का सद् परामर्श उन राष्ट्र नायकों को देते नहीं अघाते, जिन पर राष्ट्र रक्षा का पावन दायित्व है। कश्मीर की केसर क्यारियों में नफरत के अंगारे दहकाने वालों की फितरत पर ध्यान नहीं देने से 'बुद्धिजीवी' अपवित्रता की प्रतीक' कथित 'वास्तविक नियन्त्रण रेखा' की पवित्रता की बारम्बार दुहाई देकर 'सेक्युलरिज्म' के प्रति अपनी अनन्य निष्ठा का प्रदर्शन कर रहे हैं। स्पष्ट है कि देश आज दिग्भ्रमित सी स्थिति में भी त्रस्त है।

इन परिस्थितियों में जबकि अन्याय, अत्याचार और अविवेक की अनिष्ठकारक शक्तियां अपना प्रकोप दर्शा रही हैं तब हमें उन पुण्यात्माओं का स्मरण आ रहा है, जिनकी स्मृतियां आंग्ल कालदर्शिका के अनुसार इस दिसम्बर मास से जुड़ी हैं। वेद केज्ञान की पावन गंगा में आकंठ स्नान कर उन पुण्यात्माओं ने आसुरी प्रवृत्तियों के वाहकों को चुनौती देने हेतु कर्मक्षेत्र में अवतरित होकर संघर्ष का पथ अपनाया था। ऐसे महान

मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक : पंडिता राकेश रानी 2286 आर्य समाज मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-110005 द्वारा डीलक्स आफसेट प्रिन्टर्स 305/4 शहजादा बाग दिल्ली से मुद्रित एवं प्रकाशित।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पुण्यात्माओं की जीवन गाथा आर्यावर्त्त, भारतवर्ष अथवा हिन्दुस्थान के इतिहास की शाश्वत और प्रेरक दास्तान है। उन पुण्यात्माओं में अग्रगण्य थे देव दयानंद जिनका अंतिम लक्ष्य जहां विश्व बन्धुत्व और "सर्वे सुखिना भवन्तु" के आह्वान को जग जीवन में साकार करना था। किंतु उन्होंने इस तथ्य का भी प्रतिपादन किया था कि सबल और अजेय भारत ही इस संदेश को विश्व से स्वीकृत कराने में समर्थ सिद्ध हो सकता है। उनका तपः पूत जीवन वृत्त इसी तथ्य का गवाह है। महान मनीषी और क्रांति तथा आध्यात्मिकता दोनों ही क्षेत्रों में अपना कीर्तिमान स्थापित करने वाले योगी श्री अरविंद का जीवन वृत्त भी उसी वेद वर्णित तथ्य और पथ के अनुगमन की गवाही दे रहा है। देव दयानंद और श्री अरविंद के जीवन में एक सांझा तत्त्व था वेद के सिद्धान्तों के अनुरूप चिन्तन और मनन के निष्कर्ष के आधार पर राष्ट्र शक्ति का जागरण। उन्होंने इस सत्य का साक्षात्कार किया था कि संसार को स्वाधीन भारत की आवश्यकता है। ऐसे पूर्ण स्वराज्य से महिमा मंडित भारत की जो पाश्चात्य भौतिकवाद के स्थूल रंग से मुक्त हो। विदेशी शक्ति और विदेशी सभ्यता के साए से आक्रान्त भारत ही वह तेजस्वी रूप धारण कर सकता है। इसी चिन्तन की पुण्य सलिला में अवगाहन कर अनेक वरेण्य जन कर्मक्षेत्र में अवतरित होकर अपने जीवन की समिधाएं राष्ट्र जागृति के महायज्ञ में समर्पित कर धन्य हो गए। उनकी अडिग आस्था थी अथर्ववेद के भूमिसूक्त में हुए इस उद्बोधन में—

यस्यां समुद्र उत सिंधुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः संभभूवः।
यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत् सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु॥

यह दिसम्बर मास स्मरण दिलाता है महर्षि अरविन्द, अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, देवता स्वरूप भाई परमानन्द सरीखे राष्ट्रीय स्वातन्त्र्य समर के उन महान पुरोधाओं का जिन्होंने वेद के आह्वान की गुरुता को समझकर राष्ट्रीय स्वातन्त्र्य समर में योगदान कर दिग्भ्रमित देश को दिशा दान दिया था। यह मास स्मृति दिलाता है उस कर्मयोगी महात्मा वेदभिक्षुः की भी जिन्होंने देव दयानन्द के वेद प्रचार अभियान को अपने जीवन का लक्ष्य मानकर, अपनी किशोर अवस्था में ही स्वातन्त्र्य समर में सक्रिय योगदान दिया था और स्वतन्त्र भारत में सक्रिय अराष्ट्रीय शक्तियों के विरूद्ध वे आजीवन संघर्ष रत रहे थे।

५ दिसम्बर महर्षि अरविन्द के देह त्याग की तिथि है और ८ दिसम्बर देवता स्वरूप भाई परमानंद का पुण्य स्मृति दिवस है। २३ दिसम्बर बलिदान दिवस है, अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द का/ जबकि २० दिसम्बर पुण्यतिथि है इन पुण्यात्माओं के प्रेरक जीवन से प्रेरणा ग्रहण कर संघर्ष का कंटकाकीर्ण पथ अपनाने वाले महात्मा वेदभिक्षुः की जो 'जनज्ञान' और 'दयानंद संस्थान' को अपने अधूरे सपनों की धरोहर सौंप गए हैं। इस मास से स्मृतियां जुड़ी हैं काकोरी कांड के रामप्रसाद बिस्मिल और अशफाकउल्ला खाँ सरीखे उन महानायकों की भी, जिन्होंने क्रांतिपथ का वरण कर अपने जीवन प्रसून मातृभूमि की बंधन मुक्ति हेतु स्वातन्त्र्य लक्ष्मी के श्री चरणों में समर्पित किए थे।

खंडित भारत की स्वतन्त्रता का यह ५४ वां वर्ष है। इस तथ्य से नेत्र नहीं मुंदे जा सकते कि स्वदेश के भाग्य गगन पर निराशाजनक परिस्थितियों के सघन घन दिन प्रतिदिन उमड़ते-घुमड़ते जा रहे हैं। राजनीतिज्ञ जहां संपदा अर्जन और सुख सुविधाओं के संचयन में संलग्न हैं, वहीं उनके चरित्र के स्मरण को लेकर देश का हर राष्ट्रभक्त चिंतित है, भयग्रस्त है। व्यक्तिगत महिमा से मंडित होने के लिए वे राष्ट्र जीवन केलिए संजीवनी सिद्ध हुई मान्यताओं को खंडित करने को जीवन विधा बना बैठे हैं। सत्तातन्त्र का भटकाव उन मनीषियों के सपनों को अंगार लगाता सा लगता है, जिन्होंने मातृभूमि की बंधन मुक्ति हेतु अपनी जीवन समिधाएं समर्पित की थीं। जो ऋषि बंकिम के आनदंमठ में प्रस्तुत "वन्देमातरम्" के महामंत्र का सार वध स्तम्भों पर झूल कर स्पष्ट कर गए थे।

विद्यमान स्थितियां यह सुस्पष्ट कर रही हैं कि स्वतन्त्र भारत में सत्ता के सूत्रधार स्वदेश को जिस दिशा में जाने-अनजाने धकेल रहे हैं, वह इस राष्ट्र की प्रकृति के अनुकूल और अनुरूप नहीं है। वैश्वीकरण और उदारवाद जैसे दो फलकों वाली कैंची राष्ट्र के राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक जीवन को अपनी धार से तार-तार कर देने में रत है। राष्ट्र के कर्णधारों ने भारत की आत्मशक्ति के केन्द्र को समझे बिना, भारत राष्ट्र के आत्मतत्व का साक्षात्कार किए बिना सत्तातंत्र पर वर्चस्व को ही जीवन का मूल मंत्र मान लिया है। इस प्रवृत्ति के चलते उन्होंने राष्ट्र को जिस ओर धकेला है, वह विनाश, ह्रास और विखंडन की ओर से जाने वाला कुपथ है। वैदिक चिन्तन के अनुरूप राष्ट्रीयता में आध्यात्मिकता की अनुभूति के स्थान पर राष्ट्रीयता के भौतिक राष्ट्रवाद का परिणाम ओढ़ाने की जो भयंकर भूल की गयी है उसी का भारी मूल्य आज यह देवभूमि चुकाती हुई प्रतीत हो रही है। जब देश को मात्र भौतिक जड़ पदार्थों का समुच्चय मान लिया जाएगा तो उसमें अवस्थित उस सनातन दिव्यत्व का दर्शन कैसे हो पाएगा ? अमर बलिदानी श्रद्धानन्द ने वेदज्ञान की पावन गंगा में आकंठ स्नान कर अनुभूत किया

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस अंक में पढ़ें

(आवश्यक नहीं कि सम्पादक लेखकों की रचनाओं में अभिव्यक्त सभी विचारों से पूर्णतः सहमत हो।)

सम्पादकीय १
सामयिक विचार–शिव सेना का मर्यादाहीन आचरण ४
महात्मा वेदभिक्षुः की वेदवाणी ५
आपके पत्र ६
वेद विचार- स्तुता मया वर्दा वेद माता –ज्ञान चन्द ८
चिंतन मनन-ईश्वर मत-मतान्तरों की वोलियाँ–स्वामी रामस्वरूप १०
अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द – ब्र. विश्वेन्द्र आर्य ११
महान सैनानी-स्वामी श्रद्धानन्द –विजेन्द्र सिंहल १३
देवता स्वरूप भाई परमानन्द का देवत्व–महेन्द्र प्रताप १५
महात्मा वेदभिक्षुः – डॉ. सीताराम सहगल १७
पं.रामप्रसाद विस्मिल –रामबिहारी विश्वकर्मा १८
डॉ. अम्बेडकर : एक मूल्यांकन –शिवकुमार मिश्र १९
राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी –रा. वि. वि. २२
यज्ञ-वेदी में छिपा है नगर नियोजन का रहस्य–डॉ. उदयनारायण २३
स्व-राज सु-राजः स्व भाषा और सु-भाषा–विश्वम्भर प्रसाद २५
अमर आग–अटलबिहारी वाजपेयी २६
शिक्षा के विषय में नवीन अवधारणा २७
कश्मीर विलय–समस्या एवं समाधान – श्यामलाल शर्मा २९
विश्व व्यापी आतंकवाद और भारत – आनन्दशंकर पडंया ३३
चन्द्रमा : कितने तथ्य कितनी धारणायें ३३
नशा व सामिस भोजन –श्री रामनिवास लखोटिया ३६
समाचार दर्शन ४८

था, अपने चिंतन में वेद के पावन ज्ञान को उतार कर योगी अरविन्द ने अपनी साधना से उसका साक्षात्कार किया था। देवता स्वरूप भाई परमानन्द वैदिक धर्म के प्रचार और मातृभूमि की बंधन मुक्ति हेतु ही क्रांति पथ के पथिक बने थे। राम प्रसाद बिस्मिल और उनके संपर्क में आए अशफाक ने "माता भूमि पुत्रोऽहम" के वैदिक संदेश को हृदय में धरकर अंगारों बिछे पथ का अनुगमन किया था। इन ज्योति पुंजों के दिव्य आलोक्ति जीवन वृत्त के आलोक में महात्मा वेदभिक्षुः ने अपने कर्त्तव्य पथ का चयन किया था।

भारत के भाग्य विधाता होने के दावेदारों, देश के समक्ष विद्यमान समस्याओं का समाधान खोजने के सारे प्रयास आयातित बुद्धिवाद से संक्रमित हैं। उसी का यह कुपरिणाम है कि उन्हें राष्ट्रीयता के विशुद्ध भाव में सांप्रदायिकता की गंध आती है और साम्प्रदायिकता की नंगी तस्वीर में उन्हें राष्ट्रीय ऐक्य की मोहक मूर्ति का दर्शन हो रहा है। सत्ता के आसन पर आसीन रहने के लिए आज आदर्शों को पददलित करना नीति प्रदर्शन माना जा रहा है। सामान्य जन अपने लिए आदर्श जन की खोज में रत हैं, जबकि "बुद्धिवादी' कहे जाने वाले बड़े लोग इस सत्य का साक्षात्कार नहीं कर पा रहे हैं कि मात्र भौतिकता और राष्ट्र की स्थूल संकल्पना से प्रेरित धाराएं भारत की वास्तविक भावना का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकतीं, क्योंकि यह एक आध्यात्मिक राष्ट्र है। यहां के राष्ट्र जीवन की समस्याओं का समाधान, भावी चुनौतियों का उत्तर आध्यात्मिक भाव भूमि पर अधिष्ठित आंदोलनों से ही मिल सकेगा। क्योंकि भारतीय समाज का सामूहिक मन आध्यात्मिकता में ही रचा बसा है। 'यथानि जीर्णानि यथा विहाय' और आत्मा के आध्यात्मिक भाव ने स्वामी श्रद्धानन्द को संगीनों के समक्ष सीना तानने का सत् साहस प्रदान किया था। श्री अरविन्द ने तो पूर्ण स्वातन्त्र्य और स्वराज्य का वर्णन करते हुए स्वतंत्रता संग्राम को आध्यात्मिक सोपान पर ही अधिष्ठित किया था। उन सभी की सोच के अनुरूप महात्मा वेदभिक्षुः ने भी वेद और हिन्दुत्व के प्रचार को ही विशुद्ध राष्ट्रवादी अभियान का सुदृढ़ आधार माना था।

स्वराष्ट्र के समक्ष विद्यमान परिस्थितियों पर ध्यान जाता है तो यही तथ्य उभर कर सामने आता है कि आज भी नेतृत्व आत्मप्रसिद्धि में ही राष्ट्र की अभिवृद्धि के विक्रत चिन्तन से ग्रस्त है। संघर्ष के स्थान पर संघर्ष विराम को रामबाण औषधि मानकर कुरुक्षेत्र की समर भूमि में खड़े अर्जुन के समान आज का नेतृत्व मोहग्रस्त है। ऐसी स्थिति में भारत के भाग्य नियन्ता वही बन सकेंगे, जो अर्जुन के समान मोह के मकड़जाल से मुक्त होकर अपने सम्पूर्ण कर्मो से अहम् को पृथक कर उन्हें ईश्वर को समर्पित कर समरांगण में उतरेंगे। उनके कर्म कौशल से ही राष्ट्र को अलौकिक दिव्यता की सिद्धि कराने वाले जागरण अभियान से विशुद्ध राष्ट्रवाद और राष्ट्रीयता तथा आत्म निर्भरता और आत्म गौरव की वह चतुरगिणी धारा प्रवाहित होगी, जिसमें मजहवी कट्टरतावाद घृणित जातिवाद और तुष्टिकरण के त्रिताप घुल जाएंगे। उनसे मुक्त हो सकेगी आर्यावर्त, भारतवर्ष अथवा हिन्दुस्थान की यहपावन वसुंधरा। उसी से उदित होगा भारत का विश्व गुरू स्वरूप, सनातन प्रकृति और प्रवृत्ति के अनुसार उदात्त, भव्य, दिव्य और मानवतावादी तथा "सर्वे भवन्तु सुखिनः" का जीवंत प्रतिमान। □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सामयिक-विचार

शिवसेना का मर्यादाहीन आचरण

कश्मीर में रमजान के दौरान एकतरफा संघर्ष विराम के भारत सरकार के फैसले का आगे विरोध न करने की शिवसेना की घोषणा से केन्द्र की वाजपेयी सरकार राहत की सांस भले ही ले ले, लेकिन शिव सैनिकों का आचरण मर्यादाहीन और अलोकतांत्रिक ही माना जाएगा। वाजपेयी सरकार के एकतरफा फैसले के बारे में विभिन्न राजनीतिक दलों की अलग-अलग राय हो सकती है और उसका समर्थन या विरोध करना हर राजनीतिक पार्टी का अधिकार है लेकिन केन्द्र सरकार में भागीदार राजनीतिक पार्टी को ऐसे मुद्दों पर सोच समझ कर निर्णय करना चाहिए। शिवसेना के समर्थकों ने भारत सरकार के फैसले का विरोध संसद के अंदर तो किया ही है, लेकिन संसद के बाहर प्रधानमंत्री का पुतला जलाकर तो उन्होंने सभी लोकतांत्रिक मर्यादाओं का खुलकर हनन किया है। अधिक खंदजनक स्थिति तो यह है कि ऐसे मर्यादाहीन आचरण के बाद उन्होंने भारत सरकार के फैसले का भविष्य में विरोध नहीं करने की भी घोषणा कर डाली। संघर्ष विराम की घोषणा का विरोध और कुछ घंटों के बाद ही विरोध न करने का फैसला करके उन्होंने यह प्रमाणित कर दिया है कि शिवसेना के नेताओं को नाक से आगे देखने की आदत ही नहीं है। सरकार में शामिल होने की स्थिति में उन्हें कुछ मर्यादाओं का पालन करना चाहिए और यदि वे भारत सरकार के फैसले से सैद्धान्तिक दृष्टि से नाखुश थे तो फिर उन्हें सरकार में बने रहने का कोई हक ही नहीं रह जाता। यह बात सही है कि राजग सरकार भी इस दृष्टि से कम दोषी नहीं है। उसने भी अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए शिवसेना प्रमुख बाल ठाकरे के सामने समर्पण ही किया है अन्यथा प्रधानमंत्री के विशेष दूत के रूप में केन्द्रीय राज्यमंत्री अरुण शौरी को ठाकरे को राजी रखने के लिए भेजने की क्या आवश्यकता थी ? सरकार को बचाना प्रधानमंत्री की जिम्मेदारी अवश्य हो सकती है लेकिन इस तरह के मर्यादाहीन आचरण को बर्दाश्त करना राजग की छवि को गिराने वाला ही होगा। शिवसेना के नेता और मुख्य रूप से बाल ठाकरे थोड़े-थोड़े अन्तराल में केन्द्रीय सरकार की आलोचना करते रहे हैं। उन्हें इस बात से भी नाराजगी रही है कि उनके मंत्रियों को महत्त्वपूर्ण मंत्रालय नहीं दिए गए। भाजपा अध्यक्ष बंगारू लक्ष्मण के मुसलमानों को प्रसन्न करने के लिए उठाए गए कदमों से भी ठाकरे अप्रसन्न रहे हैं। किसी भी मिलीजुली सरकार में भागीदार पार्टी को अपने दायित्व को भी समझना होगा। सरकार के अंदर रह कर मर्यादाहीन आचरण करना उस पार्टी की छवि को भी गिराने वाला ही होगा। शिवसेना की यह शिकायत भी वाजिब हो सकती है कि वाजपेयी महत्त्वपूर्ण और गंभीर फैसले लेते समय उनकी पार्टी से परामर्श नहीं करते, लेकिन विरोध प्रकट करने का ऐसा तरीका किसी भी सूरत में वाजिब नहीं माना जा सकता।

यह बात सही है कि वाजपेयी के एकतरफा संघर्ष विराम के फैसले के सम्बन्ध में मतभेद है। वाजपेयी सरकार ऐसा मानकर चलती है कि रमजान के महीने में संघर्ष विराम से कश्मीर के उग्र वातावरण में बदलाव आएगा और आतंककारी संघर्ष के बजाय सीधे रास्ते पर आएंगे, लेकिन संघर्ष विराम सरकार की एकतरफा घोषणा के बाद आतंककारियों ने दो दिन लगातार हिन्दुओं की हत्या करके यह साफ कर दिया है कि उन पर भारत सरकार के नरम रवैये का कोई असर नहीं पड़ा है। आतंककारी संगठनों में ही कुछ ने भारत सरकार के फैसले का स्वागत अवश्य किया है लेकिन बातचीत के लिए जो शर्ते उन्होंने रखी हैं उनसे ऐसा नहीं लगता कि आतंककारी संगठन ईमानदारी से बातचीत के लिए तैयार हैं। केन्द्र सरकार अभी तक यही मानकर चल रही है कि उसके शांति प्रयासों से आतंककारी खुले दिल से बातचीत के लिए आगे आएंगे लेकिन जैसे हालात अभी कश्मीर में हैं उनसे नहीं लगता कि आतंककारियों के मानस में बदलाव लाने में सरकार को कोई सफलता मिल पाएगी। पाकिस्तान के सैन्य शासक द्विपक्षीय वार्ता को सफल नहीं होने देंगे। और आतंककारी संगठन पाकिस्तान की शह पर ही हिंसा का मार्ग अपनाएं हुए हैं। सरकार को इन सब बातों को ध्यान में रखना ही होगा।

जहां तक पाकिस्तान का सम्बन्ध है वह भारत के साथ कभी मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रखना ही नहीं चाहता। हमारे शांति प्रयासों को वह हमेशा से हमारी कमजोरी मानकर चलता है आखिर भारत सरकार कब तक ऐसी परिस्थिति को सहन करती रहेगी ? दो पड़ोसी देशों के बीच मैत्री एकतरफा तो हो नहीं सकती, हमें इस बात का भी ध्यान तो रख कर चलना ही होगा। जहां तक शिवसेना के नेताओं का सवाल है उनका आचरण तो निश्चय ही मर्यादाहीन है लेकिन उनकी यह शिकायत है कि गंभीर मामलों में उनसे परामर्श नहीं किया जाता। इस पर वाजपेयी को सोच-विचार करना होगा। एकतरफा संघर्ष विराम से फैसले के बाद जो कुछ हुआ है उसके लिए शिवसेना तो निश्चित रूप से दोषी है लेकिन सरकार भी कम जिम्मेदार नहीं। सत्ता में बने रहने और सरकार को बचाने के लिए सिद्धान्तों और नीतियों का त्याग लोकतांत्रिक मान्यताओं पर गहरा आघात साबित होगा।

(राजस्थान पत्रिका से साभार २७ नवम्बर २०००)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा वेदभिक्षुः की अमर वाणी

बुद्धि के द्वार बन्द मत करो

मैं जीवन के अन्तिम कगार पर खड़ा हूं। डाक्टरों ने मधुमेह और अलसर बता दिया है। पैरों में सूजन रहती है। पिछले वर्ष पक्षाघात का आक्रमण भी हो चुका है, फिर भी मन से स्वस्थ रहकर कार्य में लगा हूं। बहुत कुछ करने की इच्छा है। पिछले २८ वर्षों से निरन्तर आर्यसमाज का संदेश फैला रहा हूं। कभी भी आराम नहीं किया। अपने लिए, परिवार के लिए, कुछ भी नहीं जोड़ा। सभी को काम में लगाया और जो सम्भव हुआ, किया।

सफलता भी अपूर्व मिली। असफलता मिली नहीं। जो सोचा वह पूरा हुआ। अब संसार में वैदिक विचारधारा के सम्राज्य की स्थापना के उद्देश्य से वेदमंदिर बनाने में जुट गया हूं। भीषण गरमी में भी बिहार-उत्तरप्रदेश -राजस्थान गया। दिन रात एक ही इच्छा है कि प्रकाश स्तम्भ के रूप में वेदमन्दिर बन जाए। बनेगा, यह मेरा विश्वास है। पूज्यपाद महात्मा आनन्द स्वामी जी ने कहा था बिरला मन्दिर से भी सुन्दर बनाना वेदमन्दिर। मैं इसे संसार के सभी व्यक्तियों का तीर्थ बनाना चाहता हूं। मत-वाद-जाति-देश से ऊपर उठकर मनुष्य को मानवता के धर्म का सन्देश देने में वेद मन्दिर समर्थ हो, यह मेरी इच्छा है।

जो कहा वह सदा किया। मैं आपसे कहता हूं कि न मेरी सुनो न किसी और की, अपनी बुद्धि से परखो हमारे काम को। यदि आप यह स्वीकार करें कि दयानन्द संस्थान सचमुच दयानन्द का कार्य कर रहा है, तो सहयोग दें। हमें करोड़ों-अरबों रुपये चाहियें। हमें इस्लाम-ईसाइयत-कम्यूनिज्म और सारी दीवारों को उखाड़ फेंकना है। क्या यह सब बिना साधनों के होगा ? बताओ- आप ही कहो, क्या बिना हथियार युद्ध जीता जा सकता है ? हम लड़ रहे हैं और लड़ेंगे, जीवन के अन्तिम सांस तक लड़ेंगे। काल से भी लड़ेंगे और जीतेंगे। प्रश्न केवल यह है कि क्या आप इस युद्ध में एक सैनिक बनकर हमारे साथ नहीं चल सकते।

आप जो देंगे, हम स्वाहा कर देंगे, परिणाम आपके सामने है, देश में वेद का डंका बज रहा है। अब संसार में भी बजाना है।

ब्राह्मण हूं, जन्म से भी, कर्म से भी। ब्राह्मण का काम है झोली फैलाना। देश धर्म और वेद की रक्षा के लिए आप से मांगता हूं यह कहकर कि आंखें खोलो, सत्य को परखो— और यदि विश्वास हो तो मूक दर्शक मत बनो, हमारी झोली भर दो, हम वचन देते हैं कि संसार में वैदिक पताका लहराने के लिए अपने प्राणों की अन्तिम सांस तक भी हमारा संघर्ष जारी रहेगा। हमें ही नहीं जो भी हमारे बाद हमारा स्थान ग्रहण करेगा उसे भी सर्वस्व की आहुति देनी होगी।

बात बातों से बनती नहीं है कभी,
प्राण अर्पित करो, बात बन जाएगी।
जिन्दगी का सफर अब है थोड़ा बचा,
साथ दे दो सभी, राह जगमगाएगी।
साथ अपने चलो, बांधों कफन शीश पर,
शहीदों की टोली, जमाने को बदल जाएगी।

"बहुत सोचने पर भी हम नहीं समझ पा रहे कि आर्यसमाज के अधिकारियों को क्या हो गया है कि वे ऋषि दयानन्द के मार्ग से भटक कर पता नहीं कहां जा रहे हैं ? बड़े-बड़े भवनों में बैठे प्रधानों और मन्त्रियों के मस्तिष्क इतने विकृत हो चुके हैं कि उन्हें यह ज्ञात ही नहीं कि आखिर उनका कर्त्तव्य क्या था ? हमने आर्यसमाज को अपनी इच्छा के अनुसार बना लिया है। इस पथभ्रष्टता को कैसे बदला जाए, यह सब समझ नहीं पा रहे क्योंकि नीचे से ऊपर तक सब बिगड़ चुके हैं। कहीं आर्यसमाज के लक्ष्य के प्रति प्यार नहीं दीखता। सब आर्य समाज से अपने को बना रहे दीखते हैं। नगर-नगर में आर्यसमाज को युद्ध शिविर के रूप में देखने की हमारी इच्छा है। पर आर्यसमाज के कर्णधार ही प्रगति के मार्ग की बाधा बन गए। बाड़ खेत को खा रही है तो रक्षा कौन करे ? ऋषि दयानन्द की दिव्य ज्योति से अन्धकार मिटाने का व्रत लेकर तूफानों से टकराने को कौन तैयार है ?"

सोचने का समय नहीं हम काम कर रहे हैं काम के लिए— तन दो, मन दो, धन दो, कुछ भी नहीं दे सकते हों तो आशीर्वाद दो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आपके पत्र

चंडीगढ़ की राजभाषा अंग्रेजी क्यों ?

यह जानकर आश्चर्य और खेद हुआ कि संघ शासित क्षेत्र चंडीगढ़ के प्रशासन ने असंवैधानिक रूप से अंग्रेजी को वहां के राजभाषा घोषित किया हुआ है। तथा सरकारी काम अनिवार्यतः अंग्रेज़ी में किया जा रहा है। चंडीगढ़ के प्रशासन को ऐसा करने का अधिकार ही नहीं है; क्योंकि यह एक संघशासित क्षेत्र है तथा इसकी अपनी विधान सभा नहीं है। यह तो केंन्द्र सरकार का काम है कि वह वहाँ बोली जाने वाली भाषाओं के आंकड़ों को देखकर वहाँ की राजभाषा का निश्चय करे। सरकारी आंकड़ों के अनुसार चंडीगढ़ की जनसंख्या में ५५ प्रतिशत, हिन्दी भाषी, ४० प्रतिशत पंजाबी भाषी तथा शेष ५ प्रतिशत में अंग्रेज़ी समेत बंगला, उर्दू, तमिल, तेलगू, उड़िया, मराठी इत्यादि अन्य भाषा-भाषी हैं। चंडीगढ़ में हरियाणा तथा पंजाब की राजधानियाँ स्थित हैं। इन राज्यों की राज भाषा भी क्रमशः हिंदी, पंजाबी हैं, अंग्रेज़ी नहीं। केन्द्र ने भाषायी विभाजन में चंडीगढ़ को 'ख' क्षेत्रों में रखा है, जहाँ स्थित केंन्द्र सरकार के कार्यालयों का काम हिन्दी में होना अपेक्षित है। चंडीगढ़ प्रशासन का कार्यालय भी केन्द्र सरकार का कार्यालय है। चंडीगढ़ तथा पड़ौसी राज्यों की जनता तथा धार्मिक सामाजिक, राजनैतिक संगठनों को जागरूक होकर अंग्रेज़ी की मनमानी का संगठित प्रतिकार करना चाहिए।

श्यामलाल, महासचिव, राजभाषा संघर्ष समिति, ए-४/१५३, सैक्टर-४, रोहिणी, दिल्ली - ८५

नए महाविद्यालयों में प्रशासनिक कार्य हिंदी में हों।

महोदया,

माननीय उच्च शिक्षा मंत्री जी को लिखे पत्र में मैंने मांग की थी कि दिल्ली सरकार दुवारा शुरु किए जा रहे नए महाविद्यालयों में प्रशासनिक कार्य प्रारंभ से ही हिंदी में किया जाए तथा ऐसे कर्मचारियों को नियुक्ति में प्राथमिकता दी जाए, जो हिंदी में कार्य करने में सक्षम तथा तत्पर हों।

परिषद् के इस सुझाव को मानते हुए निदेशक (उच्च शिक्षा) श्री ए. एम. अवस्थी ने पत्र संख्या डी. एच. ई. ३ [५९]/ २०००-२००१/१३०४ दिनांक १८/९/२००० के अनुसार दिल्ली सरकार दुवारा दिल्ली में प्रयोजित सभी महाविद्यालयों के प्राचार्यों को इस संबंध में आवश्यककार्रवाई करने का अनुरोध किया है। और की गई कार्रवाई की जानकारी भी मांगी है।

विश्वविद्यालय हिंदी परिषद, निदेशक (उच्च शिक्षा) की इस कार्रवाई का स्वागत करती है।

— विश्वविद्यालय हिन्दी परिषद : रानी बाग दिल्ली

जै जै आर्य समाज

आर्य हमारा नाम है - वेद हमारा धाम
ओ३म् हमारा ईष्ट है- सत्य हमारा काम
संगठित होकर सब मिल बोलो-जै जै आर्य समाज ॥आर्य...
सुनो भरत सुत जरा तो सोचो-मिली आजादी कैसे-
सबसे पहले देव दयानंद बिगुल बजाया जैसे
अंग्रेजों का राज-एक न थी कोई आवाज
कदम-कदम सब चल मिल बोलो; जै जै आर्य समाज ॥ आर्य...
श्रद्धा उद्यम-लेख भगत, वेद भिक्षुःबनाये
किसने, लक्ष्मी, सावरकर बिस्मिल
सुखदेव, गुरू, वर्मा, दत्त किसने जाये आजाद
मालवीय-बन्दा, लाल-पाल-बाल की आवाज
हम सबकी माता आर्य समाज
चहुं दिशा में गर्जन, तर्जनकर बोलो जै जै आर्य समाज ॥ आर्य..
सारे जग को आर्य बनाने का लें, हम अब पावन सकंल्प
मानवता की रक्षा का न बचा कोई अन्य विकल्प
ओ३म् ध्वजा उठाकर बोलो- जै जै आर्य समाज
आर्य हमारा नाम - वेद हमारा धाम।
ओ३म् हमारा ईष है, सत्य हमारा काम ॥

—चन्द्रशेखर चि. आर्य, अजनी आर. वी. ॥, ४१३, रेलवे कालोनी अपनी नागपुर ४४०००३ (म. रा.)

हृदय से आभारी हूं

परम आदरणीया बहिन, सादर नमस्ते!

मैं आपसे १३ नवम्बर को मिला और "जन-ज्ञान" पत्रिका का आजीवन सदस्य भी बना। तब आपने मुझे जो प्यार दिया तथा सम्मान दिया साथ ही वैदिक साहित्य का सुंदर उपहार भी दिया, इसके लिये मैं आपका हृदय से आभार व्यक्त करता हूं। वह समय मेरे लिये अविस्मरणीय रहेगा। ईश्वर आपको शतायु करें ताकि आप देश, धर्म व समाज की सेवा इसी भांति निरन्तर करती रहें और वेद प्रचार का उत्तम कार्य आपके द्वारा इसी भांति नहीं बल्कि और तीव्र गति से होता रहे। आप स्व. वेद भिक्षुःजी की इच्छा वेद-प्रचार के कार्य को पूर्ण करने में लगी हुई हैं। यह आपका सद् प्रचार अति सहरानीय है। मैं वेद प्रचार के कार्य को देश व ईश्वर भक्ति का सब से बड़ा कार्य मानता हूँ।

—खुशहाल चन्द्र आर्य, १८० महात्मा गांधी रोड, (दो तल्ला) कलकत्ता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद प्रसार यज्ञ में सहयोग समिधा का आह्वान्

यज्ञार्थात् कर्मणोन्यत्र लोकोज्यं कर्मवन्धन :"

योगेश्वर श्री कृष्ण ने गीता में निर्देश किया है कि-

"यज्ञ" के अतिरिक्त सभी कर्म इस लोक में बन्धनकारक हैं, मुक्ति के विरोधी हैं।

'यज्ञ' क्या है ? " इदन्न मम"- यह मेरा या मेरे लिए नहीं है- इस भावना के साथ समर्पित कर्म का नाम ही "यज्ञ" है।

"वेद का पढ़ना, पढ़ाना सभी आर्यों का परम धर्म है"

विश्व की अबतक प्राप्त पुरातम ग्रन्थ माला चतुर्वेद हैं। वेदों के मन्तव्य व भावना सरल भाव-भाषा में जन-जन तक पहुंचाने का कार्य हमने प्रारंभ किया हुआ है। ३३ वर्षों से हर आंधी, झंझावात, संघर्ष व विरोध के बावजूद हम वेदों का तत्त्व देश-विदेश में प्रसारित करने के यत्न में लगे हुए हैं। आइए इस अनुपम ज्ञान-यज्ञ में आप अपनी भी आहुति प्रदान करें। आत्मशुद्धि, आत्मतृप्ति, आत्म कल्याणार्थ आगे बढ़िए। वैसे तो किसी प्रकार की कोई भी हवि-प्रदान करें, स्वीकार है हमें। पर कुछ योजना निम्नप्रकार प्रस्तुत है। उसमें धन-समर्पण कारी महदाशय व्यक्ति को एक सुन्दर, मढ़ने, लायक, प्रेरणाप्रद यश-पत्रक (सर्टिफिकेट) प्रदान किया जाएगा।

वेदार्थ महारथी रू. १,००००० /- $ २००० /-

वेद-रत्न रू. ५१,००० /- $ १००० /-

वेद-विभूषण रू. २५,००० /- $ ५०० /-

वेद -श्री रू. ११००० /- $ २५० /-

अलंकृत यश-पत्रक उपाधि के साथ चारों वेदों का हिन्दी भाष्य बड़ा सत्यार्थ प्रकाश एवं अन्य उपयोगी साहित्य साथ में प्रेषित किया जाएगा तथा 'जनज्ञान' पत्रिका में प्रशस्ति के प्रकाशन के साथ आजीवन 'जनज्ञान' भेजा जाता रहेगा।

वेदों के प्रसार-विस्तार से ही भारत का उद्धार, हिन्दुस्थान का नव निर्माण होगा।

वेद प्रसारार्थ आपके द्वारा, आप ही के निमित्त, आप ही के प्रतिनिधि—

दयानंद संस्थान, पंडिता राकेशरानी,अध्यक्ष

एवं

स्वामी जगदीश्वरानन्द (आचार्य), डा. धर्मवीर (मंत्री), श्री ज्ञानचन्द्र (विशिष्ठ सहयोगी), श्री वेदप्रकाश सिंह (प्रतिनिधि दयानंद संस्थान 80-15, 41st Ave, Apt. 241, Elin hurst, Kueens, Ny. 11373, Tel. : 718-205-8518 – न्यूयार्क)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्तुता मया वरदा वेदमाता ....

—ज्ञानचन्द्र

भारत के समस्त व्यक्तिवादी धर्म जानते हुए भी वेदों की उपेक्षा करते हैं। उन गुरुवादी सम्प्रदायों में यह अभ्यास हो जाता है कि अपने गुरु के वचनों को वेदों से भी अधिक महत्त्व दें क्योंकि उनकी मान्यता है कि वेद तो ऋषियों के अन्तर में अवतरित पुरावाक् मात्र हैं परन्तु उनका गुरु तो साक्षात् 'परब्रह्म' ही है। यह एक ऐसी बात है जिस पर अविराम चर्चा, शास्त्रार्थ एवं गहन वैचारिक आदान-प्रदान की जरूरत है अन्यथा भारतीयों विशेष कर हिन्दुओं का भयावह एक त्रासद अनैक्य और अमतैक्य कभी समाप्त न होगा और सर्वश्रेष्ठ और सर्वोच्च होने पर भी आर्य जाति पिटती रहेगी एवं आर्य धर्म क्षीण होता रहेगा। जब ओशों रजनीश जैसे प्रकाण्ड अध्यात्म पंडित एवं नव-दिशा-निर्देशक, अत्याधुनिक संन्यासी भी वेदों को "निन्यानवे प्रतिशत" व्यर्थ मानते हैं (उपनिषद् शून्य संवाद' पृष्ठ ७६ प्रिंट १९९८) तो उसका अर्थ यही निकलता है कि वे स्वयं सौ-फीसदी ठीक हैं और फिर उनका भक्त व शिष्य समुदाय एक-प्रतिशत सच की तरफ जाएगा ही क्यों वह अपने गुरु के सौ-फीसदी सच की ओर ही जाएगा। प्रत्येक सम्प्रदाय, मत और पंथ का गुरु उनके शिष्यों के द्वारा सर्वार्थ सत्य-प्रकाशक माना जाता है। इस स्थिति में इन सब परस्पर विरोधी विचार वाले पंथों में विरोध घटेगा कैसे। सभी पंथों के गुरू व आदि-आरम्भक परम् श्रेष्ठ और वेदों से भी उच्चतम वाणी बोल रहे हैं। तो अब ऐक्य और एकात्मता आएगी कहां से। इस स्थिति में तो बन लिया भारत पुनः "जगद्गुरू"। इतने जगद्गुरू, परस्पर विरोधी वचन व श्रद्धा रखने वाले सैकड़ों जगद्गुरू सिवाय भयंकर बरबादी के हमें क्या दे सकते हैं। एक ही उपाय है कि वेदवादी जन वेदों का अध्ययन, मनन, चिन्तन, मंथन, प्रकाशन बहुत तीव्र, गहन और व्यापक कर दें। वेद रूपी माता की स्तुति का यह मानसिक ध्यान एवं शाब्दिक प्रस्तुतन् इसीलिए यहां दिया जा रहा है।

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्र चोदयन्तां पावमानी द्विजानाम् आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणम् ब्रह्म वर्चसम् महां दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम् — अथर्व १८/७१

'वरदा' से अर्थ है श्रेष्ठ वस्तु, गुण, स्थिति व सम्पत्ति को देने वाली। वरदा' अर्थात् श्रेष्ठ को, चुने हुए को अभीष्ट को, भद्र को देने वाली। वेद को ऋषि अन्तर ने अपने परम -व्योम में "मां' के रूप में अनुभव किया, क्योंकि 'मां' सदा देती है प्रदान करती है। संतान के लिए माता संतान के पिता को अपना प्रेम और देह प्रदान करती है, गर्भ में शिशु को नव-मास का सर्व प्रकार सुरक्षित निवास और पुनः पोषण प्रदान करती है, जन्म के उपरान्त दुग्ध, सेवा, शुश्रुषा, स्नेह, हृदय व अन्तरात्मा प्रदान करती है। तथा अपने तन, मन व सम्पत्ति का सर्वोत्तम अपनी सन्तान को समर्पित कर देती है। सर्वकाल तक, सामर्थ्य से अधिक श्रेष्ठतम को प्रदान करनेवाली देवी ही की संज्ञा है 'माता'। वेद ने क्या दिया और क्या दे रहे हैं। इसकी सूची बहुत लंबी है। इस कृतघ्न हिन्दु नामक जाति में कुछ कृतज्ञ आर्य-बुद्धि जन यदि वेंदों के अवदान की सूची बनाएंगे तो उसे समझने में उन्हें वर्षों लग जाएंगे।

क्रूर, कठोर, दयामाया विहीन इस वाह्य प्रकृति, इस अत्यन्त परूष जड़ प्रकृति के कुठाराघातों से आरंभिक मानवता कभी की नष्ट और विलुप्त हो गई होती यदि वेद ने जीने का सही तरीका, यजन, भजन और अर्जन की उपयुक्त प्रणालियाँ न प्रस्तुत की होतीं। **पशु स्वभाव का वर्बर मानव समाज कब का एक दूसरे को समाप्त कर चुका होता यदि मनु जैसे मानव- नेताओं और आंगिरादि शास्त्र प्रणेताओं ने ईश्वरीय प्रेरणा को पहचान कर अन्तस् में उसे शब्दाकार में ग्रहणकर 'वेद' के रूप में मानव संतति को न दिया होता। सम्पूर्ण विश्व को 'वेद' का उपकार एक स्वर से स्वीकार करना चाहिए और सभवतः वह दिन बहुत दूर नहीं जब आधुनिक विज्ञान अपने अनुसंधानों से यह प्रमाणित कर देगा कि मानव के विश्व व्यापक ज्ञान- विज्ञान, आचार, व्यवहार, युद्ध, चिकित्सा, अर्थशास्त्र एवं 'आध्यात्मिक खोज'- सबके मूल स्रोत, मौलिक सूत्र विन्दु 'वेद' ही हैं।** हे बीस हजार से ऊपर 'मंत्रों' वाली दिव्यदेह धारी, शब्दाकृति वेद धात्री एवं वेद मातृ आध्यात्मिजन्मा (पहले भौतिक जन्म पुनः आध्यात्मिक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रूप से स्वान्तर में जन्म लेने वाले प्रभु समर्पित आर्य जन) जनों को प्रेरणा, उत्साह, लक्ष्योन्मुखता, प्रज्ञान-संबोधि प्रदान करने वाली हो तथा उन्हें पवित्र और पावन करने वाली हो, सदा उनके दुरितों को दूर हटाती एवं भद्रों को निकट बुलाती रहती हो।

'आयुः' अर्थात् इस लोक में सुदीर्घतम निवास एवं इच्छा-मृत्यु, 'प्राण' अर्थात् सतत वर्धमान एवं सर्वदा सघन होती हुई शुद्ध जीवन-ऊर्जा, 'प्रजा' अर्थात् देहजा संतति एवं मनजा संतति अर्थात् मित्र एवं सहयोगी 'पशु' अर्थात् पशुधन व लाइवस्टॉक, तथा अन्य वे जीवित संसाधन और सहायक जो हमारे द्वारा निर्देशित व गाइड किए जाते हैं जो या तो गुणपाश रस्सी आदि से बाँधे जा सकते हैं या कार्यपाश में अर्थात् समाजोपयोगी कार्य-व्यवहारों में लगाए जा सकते हैं। वे मानवप्राणी या मानवेतर प्राणी सभी 'पशु' संज्ञा में सम्मिलित होते हैं। ये सब आयु, प्राण, प्रजा व पशु आप हमें उपलब्ध कराएँ। यह समस्त उपलब्धि हमें शत क्रतु व सहस्त्रक्रतु बनाने के लिए याचित की जा रही है ताकि स्व का और समाज का विशालतम भला किया जा सके।

आयु-प्राण-प्रजा व पशु जैसे साधनों के द्वारा यदि हम 'इदन्न मम' के समर्पित भाव से कर्म करें तभी हमारी संज्ञा होगी "क्रतु"। समर्पित कर्म करने वाला ही होता है "क्रतु" और उसे ही प्राप्त होती है "कीर्ति"। कीर्ति इस मंत्र-सम्राट की पाँचवीं याचना है। आयु-प्राण-प्रजा व पशु के सही व सुदक्ष प्रयोग से प्राप्त होती है कीर्ति और इन पांचों वस्तुओं और वृत्ति के द्वारा उत्पन्न होता है "द्रविण"। **कीर्तिमन्त होकर साधनों का सही प्रयोग करके जो प्राप्त होता है, वह सुपथ से प्राप्त हुआ द्रवीभूत सौभाग्य ही "द्रविणम्" है या आज की भाषा में "अर्थ" है। शेष सब 'अनर्थ' है 'अद्रव्य' है अतः निस्सार अनर्थ मात्र है "अद्रविणम्" है जिससे न यहाँ लाभ न वहाँ लाभ। वह कुपथ से प्राप्त अनर्थ रूपी अर्थ भोग-विलास, अहंतृप्ति, दुःशासन, अनैतिकता एवं अनाचार का ही साधन होगा।** उससे श्रेयस् तो प्राप्त हो ही नहीं सकता। प्रेयस् भी उससे दूर है वह 'अकीर्तिकर' कर्म वेद को अभीष्ट नहीं है। आयु, प्राण, प्रजा, पशु, कीर्ति एवं द्रविण में बाद ब्रह्मवर्चस् की प्राप्ति की भूमिका निर्मित होती है।

'ब्रह्म' के सहस्रों अर्थ हैं परन्तु सीधा समझ में आने वाला सरल अर्थ है सदा बृहत्, विस्तृत एवं वर्धित होने वाला मौलिक तत्त्व। 'ब्रह्म' मौलिक सर्वसमावेशी शून्य है जो स्वयं सदा परिपूर्ण, एकरस एवं स्वयं-संतुष्ट होने पर भी जड़ प्रकृति से अल्पाधिक परिशासित दृष्टा को सदा वर्धमान और विवर्धमान् महसूस होता है। परब्रह्म क्योंकि सर्वथा मन-वाक् अगोचर है अतः सीमित बुद्धि एवं अल्पशक्ति साधक को साधना की दृष्टि से सदा प्रगतिवान् लगता है। ऐसी अवर्णनीय एवं अव्याख्येम परम् तत्त्व को 'ब्रह्म' नाम दिया वेदों ने। ऐसा 'नाम' और ऐसी निरूपम संज्ञा सम्पूर्ण विश्व के श्रेष्ठतम साहित्य में नहीं है। भगवान्, ईश्वर शब्द या परमात्मा शब्द भी अत्यन्त छोटा पड़ जाता है इस चिर नूतन् चिरंजीवी, सदानवीन एवं सदाजीवी इस दिव्य 'ब्रह्म' शब्द के सामने।

'ब्रह्म' एक अकथनीय दिव्य ज्योति प्रभा है जो शुद्ध व पूर्ण समर्पित हृदयों में चमकती है वह दिव्य चमक, अपार्थिव तेज व साधक की अंतर्निहित पवित्रता से परिपूर्ण सत्य -प्रभा 'वर्चस' कही जाती है। वेदों का अंतिम कार्य, सर्वोच्च वरदान यह 'ब्रह्मवर्चस्' ही है जो यह अपने श्रद्धान्वित् अनुशीलकों को प्रदान करते हैं।

अतः पतंजलि भाष्यकार ने कहा कि ब्रह्मोपासक को "निष्कारण" वेद पढ़ने चाहिए। अनाश्रित व फलेच्छा रहित होकर निष्कामना से पवित्र कर्त्तव्य जानकर आनन्द संग्रह व ज्ञानवृद्धि के स्वाभाविक फलों को स्वयंमेव प्राप्त करता हुआ श्रद्धालु जन वेद अवश्य पढ़े। ब्रह्म ऐसे पाठक को प्राप्त होता ही है।

हे वरदा वेद माता आप यह सब भक्त साधक को प्रदान करके साधक के शीर्षस्थ विन्दु 'ब्रह्म लोक' में विचरण करती हो। ब्रह्म सर्वत्र है, अतः साधक के मूल अस्तित्व में ही है साधना से विशुद्ध हुए 'ब्रह्मवर्चस्' प्राप्त 'होता' के वर्चस्-मूल ब्रह्म में आप परिव्रजन, विचरण व संचरण करती ही रहती हो। आप हे वेद माता सदा मेरे अन्तर्हृदय के ब्रह्मधाम में विचरती हो।

अत्यन्त गहन, अतीव सार-गर्भित, बहुल अर्थभरित इस ऋचा को प्रातः -सायं भी और सम्भव हो सके तो रात्रि-वासर स्मरण करते रहना चाहिए।

श्री अरविन्द चेतना समाज, ६५६२/९, चमेलियान रोड, दिल्ली – ११०००६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ईश्वर मत-मतान्तरों की बोलियों से परे

— स्वामी रामस्वरूप

एक बार तानसेन के गुरू स्वामी हरिदास अपने शिष्यों के साथ जंगल से गुजर रहे थे। वहां उन्हें अचानक शेर की गर्जना पास से ही सुनाई दी। सब डर गए और छिप गए परन्तु गर्जना आती ही रही। गुरूजी ने गौर से सुना और कुछ समझ कर धीरे-धीरे उस गर्जना की ओर बढ़े तो देखा एक बालक मुँह से शेर की गर्जना पैदा कर रहा है। उस बालक का नाम तन्ना था। स्वामी हरिदास जी ने वह बालक उसके माता-पिता से ले लिया और उसे संगीत की शिक्षा देकर तानसेन बना दिया। तानसेन बचपन में कई पशु-पक्षियों की आवाज़ें निकालने में सिद्धहस्त था। परन्तु ईश्वर की लीला देखो कि तरह-तरह की इन आवाजों को निकालने का कोई लाभ उसे नहीं था। परन्तु जब सब पशु-पक्षियों की आवाजें छोड़कर संगीत की लहरों में ईश्वर के गुणगान तानसेन जी ने गाए और स्वयं अपनी आवाज़ में गाए तो उनका जीवन ईश्वर बन्दगी में कुछ अंश में लग गया। और वह बादशाह अकबर के दरबार के नवरत्नों में से एक रत्न बने। कहावत है कि जब कौआ हंस की चाल चलता है तो वह अपनी भी चाल भूल जाता है। आज इंसान के चोले में हम कई प्रकार के पशु-पक्षियों की बोलियाँ, विषय-विकार की बोलियाँ, लोभ-लालच की बोलियाँ, फिल्मी एवं पॉप संगीत की ऊँची तरगों की बोलियाँ, अभिमान-अहंकार की बोलियाँ, उग्रवाद और भ्रष्टाचार की बोलियाँ तथा ऐसी ही अनगिनत इंसानियत को नष्ट करने वाली बोलियाँ बोलकर ईश्वर की दी हुई पृथ्वी पर अकड़ -अकड़ कर चलते -फिरते हैं। प्रायः धर्मगुरू धर्महीन बोलियाँ बोलकर धर्म समझाने में और अधिकतर नेता भ्रष्टाचार और झूठ का जामा पहनकर अपने को पाक-साफ सिद्ध करने की बोलियाँ बोलकर जनता को ठगने में सफल से दिखाई पड़ रहे हैं। सारी कठिनाई, अशान्त वातावरण, चोरी-डकैती, पर्यावरण समस्या, अशिक्षा एवं कुशिक्षा, असुरक्षा, अन्याय इत्यादि असंख्य रूपों में जनता को ही सहन करनी पड़ती है। सतयुग, द्वापर, त्रेता इन बीते तीनों युगों में यदि हम झांके तो उस समय प्राणी केवल अपनी ही स्वाभाविक बोली चारों वेदों के रूप में बोलकर पृथिवी पर भौतिक एवं अध्यात्मिक दोनों उन्नतियों को उच्च शिखर पर ले गए थे। और वर्तमान जैसी कोई भी समस्या जनता में अशांति नहीं फैला सकी थी। हम मनुष्य हैं हम मनुष्य तथा राष्ट्र-निर्माण एवं समाज सुधार का हेतु बनें। आज यह विडम्बना ही है कि एक मत कहता है ऐ जीवन तू निश्चय कर कि तू ईश्वर है वही अन्य धर्म गुरू चिल्ला-चिल्लाकर कह रहे हैं कि शांति के लिए श्रीराम, श्रीकृष्ण, भगवान की शरण में आओ, जाप करो, सत्संग में आओ, जीवन सफल बनाओं इत्यादि-इत्यादि अपनी -अपनी बोलियाँ बोल रहे हैं। परन्तु ऊधर कहीं देश एवं जनता की समस्याएँ दिन-प्रतिदिन उग्ररूप धारण किए जा रही हैं। रोज़ी-रोटी, कपड़ा, मकान आम जनता तक सुलभ नहीं हैं। झुग्गी-झोपड़ियाँ जहाँ गंदगी की चरम सीमा दृष्टिगोचर होती हैं, बीमारियों का गढ़ बनती जा रही हैं। राष्ट्र-निर्माण, उन्नति नगण्य प्रायः है। क्या अच्छा हो कि नेता एवं धर्म-गुरू इक्कीसवीं शताब्दी में राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान का संकल्प करके वैसे ही उपदेश एवं आचरण जनता को धारण करने की शिक्षा दें। अथर्ववेद में बड़ा स्पष्ट वर्णन धर्म, गुरु एवं राजनीति के विषय में एक ही मंत्र में साथ-साथ किया है। अथर्ववेद मंत्र १९/४१/१ में कहा है कि मानव कल्याण की इच्छा करते हुए इस पृथिवी पर ऋषियों ने तप तथा व्रत की शिक्षा का पहले स्वयं अनुष्ठान किया और फिर उससे प्राप्त हुई शक्ति के द्वारा राष्ट्र-बल तथा पराक्रम को सिद्ध किया। ऋषियों द्वारा मानव कल्याणार्थ राष्ट्र-निर्माण के व्रत की ऐसी पावन परम्परा पिछले तीनों युगों में भारतभूमि पर विद्या प्रसार, कर्त्तव्यबोध , हर्ष-उल्लास, पुरूषार्थ, भाईचारा, सुरक्षा, समृद्धि एवं धर्म आदि अनेक गुणों द्वारा प्रजा का पालन करती रही है। आज धर्म-गुरूओं एवं नेताओं को अथर्ववेद के इस भाव का सम्मान करके कि धर्म के वास्तविक अर्थ है। 'जनता को कर्त्तव्य बोध एवं राष्ट्र-निर्माण पर ध्यान केन्द्रित कराने जैसी शिक्षा प्रदान करके' अपने को अनुग्रहीत करना "यही धर्म कहा गया है। जिसे मनु, दशरथ, जनक, हरीशचन्द्र आदि असंख्य राजाओं/ राजनेताओं और गुरु वसिष्ठ, विश्वामित्र, व्यास मुनि जैसे असंख्य ऋषियों ने भली-भांति निभाया था।

—योगाचार्य वेद मंदिर, योल कैम्प, योल बाजार (हि.प्र.)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द

— ब्र. विश्वेन्द्र आर्य, ऊँचागाँव, नसीमपुर, (हाथरस)

जब भारत दासता की जंजीरों में जकड़ा हुआ था, अंग्रेज देश में मनमानी कर रहे थे, उनके विरोध में कोई आवाज नहीं निकाल सकता था। ऐसे समय में कौन था वह महामानव जिसने अंग्रेजों के दमनचक्र से फैली निराशा और दीनता के बीच पहले क्रान्ति का शंख फूंककर भारत के पौरूष का परिचय दिया ? कौन था जिसने संगीनों क सामने अपनी छाती तानी थी ? कौन था जिसने हिन्दूसंगठन का महामंत्र गुंजाया था ? कौन था जिसने सबसे पहले दिल्ली की जामा मस्जिद पर खड़े होकर बड़े गम्भीर स्वर में वेदमंत्र 'त्वं हि नः वसी त्वं माता शतकृतो" के साथ देशवासियों को सम्बोधित किया ? कहां से प्रारम्भ होता बलिदानों की कथा का पहला अध्याय ?

रक्त से लिखी इस कहानी के पात्र हैं युगपुरूष स्वामी श्रद्धानन्द ऐसे महामानव का जन्म फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी सं. १९१३ की जालन्धर के अन्तर्गत तलवन में हुआ था। इनके पिता का नाम 'लाला नानकचन्द' था। सन् १८५७ का स्वतंत्रता संग्राम आरम्भ हुआ, उसी समय लाला नानकचन्द' बरेली में पुलिस इंस्पेक्टर बने। स्वामी श्रद्धानन्द का राशि का नाम वृहस्पति रखा गया, तथा बोलचाल का नाम मुंशीराम। और 'मुंशीराम' नाम ही अन्त तक प्रचलित भी रहा। मुंशीराम अपने माता पिता की सबसे छोटी सन्तान थे। बच्चों में सबसे छोटे तथा पिता की पुलिस की नौकरी के कारण बालक मुंशीराम को अत्यधिक लाड़ प्यार मिला जिसके कारण उनके जीवन पर उल्टा प्रभाव पड़ा।

कुछ समय बाद्र उनके पिता का स्थानान्तरण बरेली से काशी हो गया। काशी में ही दस वर्ष की आयु में 'मुंशीराम' का यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। मुंशीराम केपिता परम शिवभक्त थे। मद मांस से परहेज रखते थे। लेकिन उनके पुत्र को इससे कोई परहेज नहीं था। नियमित. पढ़ाई के अभाव में वे जो हाथ में आया उसको ही पढ़ने लगे। उसी काल में उनमें अंग्रेजी उपन्यास पढ़ने की रुचि पैदा हुई, अंग्रेजी उपन्यासों ने उनके मस्तिष्क को विकृत कर दिया। इसके उपरान्त इनकी डार्विन वैयम आदि पश्चिमी दार्शनिकों के ग्रन्थ पढ़ने को मिले। इन ग्रन्थों को पढ़कर इन्होंने अनीश्वरवाद और नास्तिकता को स्वीकार कर लिया। क्योंकि इससे पूर्व वे पौराणिक हिन्दू धर्म तथा विश्व में सर्वाधिक प्रसार प्राप्त ईसाई मत की दुर्बलताओं को जान चुके थे। संशय, कुण्ठा और निराशा से आक्रान्त इस युवक के हृदय में एक आशा की किरण उस समय उत्पन्न हो गयी, जब पिता जी ने कहा कि "शहर में संस्कृत के एक विद्वान सन्यासी आए हैं तुम भी दर्शन कर आओ।" 'मुशीराम ने सोचा कि भला भारत का एक काषाय वस्त्रधारी तथा संस्कृत जानने वाला सन्यासी अपने प्रवचनों में सिवाय पोंगापंथी प्रवचनों के कौन सी बुद्धिमत्ता की बात कहेंगे ? लेकिन कोतूहलवश महर्षि दयानन्द से मिलने के लिए वह पहुँच ही गये। तथा महर्षि दयानन्द के प्रबुद्ध व्याख्यान सुनकर उनका सारा जीवन आलोकित हो गया। पारस के समीप लोहा जाकर सोने में बदल गया अर्थात् उनका जीवन दयानन्द के आदर्शामृत का पान करके सुवर्णमय हो गया। वे चुम्बक के द्वारा खिंचे लोहे की तरह स्वामी जी के चरणों के निकट आये और प्रणिधान पूर्वक कहने लगे कि -'महाराज ईश्वर सिद्धि में आपकी युक्तियाँ अपूर्व हैं, आपके तर्क अकाट्य हैं, मेरी बुद्धि ने तो आपके द्वारा निरुपित ईश्वर की सत्यता को स्वीकार कर लिया है, किन्तु आत्मा में अभी परमात्मा के अस्तित्व का विश्वास जमता नहीं दीख पड़ता।" सन्यासी ने उत्तर दिया, युवक! मैंने भी तर्क और प्रमाण पूर्वक ही परम सत्ता को लोगों के सामने सिद्ध किया है। यह तो अब ईश्वर स्वयं ही तुम्हें अपने भक्त के रूप में स्वीकार कर अपने स्वयं का दर्शन करायेगा, तब तुम्हारी आत्मा में उस परमात्मा का प्रकाश स्वतः ही प्रकाशित होगा।"इसी प्ररांग में सन्यासी ने एकउपनिषद् वाक्य पड़ा—

नायमात्यां प्रवचनेन लभ्यो, न मेधया न बहुना श्रुतेन।
यमेवैश वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैप, आत्मा विवृणुते ननूँ स्वाम॥

इस आत्मा को हम न तो प्रवचनों से प्राप्त करते हैं, और न मेधा के द्वारा अथवा बहुश्रुत होकर ही इसे प्राप्त किया जा सकता है। वह तो स्वयं ही इस भक्त के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आगे अपने स्वरूप को स्पष्ट करता है, जिसे अपने भक्त और उपासक के रूप में चुन लेता है।

स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन में वह परिवर्तन की घड़ी थी। संशय निराशा नास्तिकता और विलासजन्य अनाचार पूर्ण जीवन व्यतीत करने की कालरात्रि का अन्त हुआ, अज्ञान का कुहासा हटा, ज्ञानशक्ति और कर्म की उषा अपना सौम्य प्रकाश फैलाती हुई उनके जीवन में उतरी।

लाहौर में आर्यसमाज के सम्पर्क में आकर जब प्रथम बार आर्यसमाज बच्छोवाली की वेदी से भाषण दिया तो आर्यसमाज के वयोवृद्ध प्रधान लाला साईदास की आँखों से आँसू झलकने लगे, उन्होंने गद्-गद् कण्ठ से घोषणा की कि—"आज आर्य समाज में एक नवीन शक्ति ने प्रवेश किया है, देखते हैं यह आर्यसमाज को डुबोती है या तारती है।"

तत्पश्चात् २६-११-१८९८ के अधिवेशन में आर्यप्रतिनिधि सभा ने गुरुकुल की स्थापना का प्रस्ताव स्वीकार किया तो श्री मुंशीराम ने उसकी योजना बनाकर सभा को सौंपी और स्वयं घोषणा कर दी कि "जब तक मैं गुरुकुल के लिए तीस हजार रूपया एकत्रित नहीं कर लूँगा, "तब तक घर में पैर नहीं रखुँगा।" ये मुशीराम के प्रगाढ़ आत्मविश्वास की परीक्षा थी। ऐसी विकट परिस्थिति में उन्होंने लखनऊ पेशावर और मद्रास तक का दौरा करके अपने प्रण (प्रतिज्ञा) को पूरा किया और अपने परिश्रम तथा अपूर्व त्याग का परिचय देते हुए महात्मा मुंशीराम ने गंगा के किनारे हरिद्वार से पाँच मील की दूरी पर गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की। इसके लिए मुंशी अमरसिंह ने अपनी भूमि दी तथा स्वयं मुंशीराम ने अपने पुत्रों— इन्द्र और हरिश्चन्द्र को गुरूकुल माता को अर्पित कर दिया, कुछ कालबाद अपना सारा पुस्तकालय गुरुकुल की भेंट कर दिया तथा उसके बाद सद्धर्म प्रचारक प्रेस भी उन्होंने गुरुकुल माता को भेंट कर दिया। अब रही लगभग तीस हजार रुपये लागत की कमी उसके लिए जालन्धर की कोठी, वह भी उन्होंने गुरुकुल के दसवें वार्षिकोत्सव पर गुरूकुल को भेंट कर दी। यह सर्वमेध यज्ञ उन्होंने तब किया था, जब वे गुरूकुल से अपने निर्वाह हेतु कुछ भी नहीं लेते थे, तथा स्वयं पर छत्तीस हजार रूपये का ऋण भी था।

मुख्याधिष्ठाता तथा आचार्य के रूप में वर्षो तक गुरुकुल का संचालन कर महात्मा मुंशीराम ने गुरुकुल कांगड़ी को एक आदर्श शिक्षण संस्था का रूप माना, जिसे देखकर विदेशी-शिक्षा-शास्त्रियों के भी आश्चर्य की सीमा न रही। परन्तु मुंशीराम का जीवन व्यापक कार्यक्षेत्र में उतरने के लिए बना था। जब रोलट एक्ट के विरोध में होने वाली दिल्ली नगर की हड़ताल का नेतृत्व स्वामी श्रद्धानन्द ने किया तो एक बार तो, अंग्रेज पुलिस को भी अपने हथियार डाल देने पड़े, निर्भीक मृत्युञ्जयी सन्यासी को संगीनों का सामना करते देखकर अंग्रेज सार्जेन्ट की पिस्तौल भी झुक गई तथा सन्यासी हिन्दू मुसलमानों के असंख्य समुदाय का नेतृत्व करता हुए जामा-मस्जिद के मिम्बर पर जा खड़ा हुआ, जहाँ उपदेश देने का अधिकार इस्लाम के इतिहास में अब तक किसी भी ग़ैरमुस्लिम को प्राप्त नहीं हुआ था। लेकिन उसी स्थान से निर्भीक सन्यासी ने बड़े ही गंभीर स्वर में 'त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो' इस ऋग्वेद के मंत्र का पाठ करते हुए देशवासियों को संबोधित किया तो देशवासी मन्त्रमुग्ध भाव से उनकी कल्याणकारी प्रेरणा देने वाली वाणी को बड़े ही ध्यान से सुनते रहे।

स्वामी जी १९२६ के दिसम्बर महीने में अपने हिन्दू संगठन अभियान के क्रम में बनारस का दौरा करके लौटे थे कि रोगग्रस्त हो गये। अभी इलाज चल रहा था। लेकिन डाक्टर के मना करने पर भी गुरूकुल इन्द्रप्रस्थ हो आये, रोग ने जोर पकड़ा, पहले डा. सुखदेव का और बाद में डा. अन्सारी का इलाज चला, प्रकृति सुधर रही थी कि २३ दिसम्बर सन् १९२६ को एक दुष्ट अब्दुल रशीद ने पूज्यपाद स्वामी जी की हत्या कर दी। उस समय आसाम में कांग्रेस का अधिवेशन चल रहा था, हिन्दू मुस्लिम भाई-भाई के नारे लगाए जा रहे थे, और इधर इस दुष्ट ने घोर कुकृत्य कर डाला। उस समय वह दुष्ट, पापी, अपनी सीमा का उल्लंघन कर गया, जब उसने श्रद्धानन्द जैसे तेजस्वी सन्यासी को हमसे सदा-सदा के लिए जुदा कर दिया। भारत माता के उद्यान में खिलखिलाता वह पुष्प उस दुष्ट राक्षस ने तोड़ दिया। लेकिन आर्य ! आप कितने क्षमाशील हो आपने प्रतिक्रिया के रूप में किसी विधर्मी का एक कुत्ता भी नहीं मारा। आप धन्य हो क्योंकि आप जानते थे कि उनके बलिदान से रिक्त हुए स्थान की पूर्ति किसी भी प्रकार संम्भव नहीं।

आचार्य दयानन्द ने भी तो कहा था- "मैं किसी को कैद कराने नहीं आया अपितु कैद से छुड़ाने आया हूँ।" तथा विष देने वाले को भी धन देकर नेपाल भेज दिया। इसी प्रकार आर्यो! आपने भी उस श्रद्धानन्द के हत्यारे से कुछ नहीं कहा। आप धन्य हो, इसीलिए तो महात्मा गांधी ने नोआखली के भ्रमण में अपने सैक्रेटरी निर्मल कुमार बोस से कहा था —"भगवान मुझे भी श्रद्धानन्द जैसी मौत दे।"

—ऊँचा गांव नसीरपुर (हाथरस)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महान सेनानी-स्वामी श्रद्धानन्द

— विजेन्द्र सिंहल

कौन जानता था कि पंजाब प्रांत केजालन्धर जनपद के ग्राम तलवन मे विक्रमी संवत् १९१३ फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को जो बालक नानकचन्द्र के घर में जन्म लेगा, वह जगत् विख्यात स्वामी श्रद्धानन्द होगा। इनका जन्म का नाम बृहस्पति रखा गया था पर बाद में मुन्शीराम नाम रख दिया। मुन्शीराम जी की शिक्षा -दीक्षा उत्तर प्रदेश के भिन्न—भिन्न नगरों में हुई। यौवन काल में स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन मौज मस्तियों व मदिरा पान में अधिक बीता। नास्तिकता की छाप भी उन पर थी। उनका ईश्वर व धर्म पर से विश्वास ही उठ गया था। इसका कारण था हिन्दू धर्म का पाखन्ड और अंग्रेजों का ईसाई धर्म का प्रचार जिससे मुन्शीराम अंग्रेजों के परम भक्त बन गये। वे धर्म को महा ढोंग समझते थे।

संवंत् १९८६ में श्रावण माह की १४ वीं तिथि को स्वामी दयानन्द जी का बरेली आगमन हुआ। मुंशीराम के पिता वहां पर कोतवाल थे। स्वामी जी के पहुंचते ही कोतवाल साहब की वहां डयूटी लग गई कि वे ऐसी व्यवस्था करें कि स्वामी दयानन्द जी के व्याख्यान के अवसर पर कोई झगड़ा फसाद न होने पाये। पिता ने स्वामी जी का भाषण सुना व मुंशी राम जी को भी प्रेरित किया कि वे भी उनके विचार सुनें। स्वामी दयानन्द जी के शास्त्रार्थ को सुन कर नास्तिक मुंशीराम भी अस्तिकता की ओर उन्मुख हो गये। ठीक ही कहा है कि पारस को छूकर लोहा भी सोना बन जाता है। मुंशीराम जी की उत्सुकता दिन प्रतिदिन स्वामी दयानन्द की ओर बढ़ने लगीं और वे बड़ी गम्भीरता से स्वामी जी की दिनचर्या का अध्ययन करने लगे। मुन्शीराम उस समय आश्चर्य चकित रह गये जब उन्होंने यह देखा कि अंग्रेजी न जानने वाला व्यक्ति भी इतना तर्क-सम्मत और अकाट्य प्रमाणों के साथ व्याख्यान देने में समर्थ हो सकता है। मुन्शीराम तो यह मान बैठे थे कि जो व्यक्ति अंग्रेजी नहीं जानता, वह कुछ भी नहीं जानता। स्वामी दयानन्द जी के साथ मुन्शीराम शंका समाधान करते रहते थे। अंततः उनको यह अहसास होने लगा कि जो व्यक्ति संस्कृत या वेद नहीं पढ़ा, वह कुछ भी नहीं पढ़ा। परन्तु ऐसा मानने के बाद भी मन नहीं माना और अन्त में स्वामी दयानन्द जी ने कह दिया कि जब तुममें श्रद्धा उत्पन्न होगी तभी तुम्हारा मन मानेगा। कुछ ही दिनों बाद मुन्शीराम जी स्वामी श्रद्धानन्द हो गये और महर्षि दयानन्द के लक्ष्य, वेद प्रचार गुरूकुल शिक्षा प्रणाली, नारी उद्धार, दलितोद्धार वैदिक शिक्षा पद्धति, धर्मान्तरण को रोकने, राष्ट्रीय भावना और राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने जैसे कार्यो की ओर बढ़ चले।

सन् १९०२ ई. में स्वामी जी ने हरिद्वार में गुरुकुल कांगडी खोला। अपने संकल्प को पूरा करने के लिए उन्होंने सबसे पहले अपने ही धन की आहुति गुरुकुल रूपी यज्ञकुंड में डाली। पढ़ाने के लिए स्वयं आचार्य का भार सम्भाला। और अपने ही दोनों बच्चों को उसमें प्रवेश दिलाया, धीरे-धीरे गुरुकुल की धूम मच गई और उसके विद्यार्थी चारों ओर वेद का प्रकाश फैलाने लगे।

उन दिनों दलित लोगों को ईसाई और मुसलमान बनाने का अभियान और कुचक्र जोरों पर थे। स्वामी श्रद्धानन्द ने अभियान चलाया लोग फिर से वैदिक धर्म की दीक्षा लेने लगे। लोगों में इतना जागरण आया कि ईसाई धर्म के प्रचार का सपना देखने वालों के मन्सूबे धरे के धरे रह गये। स्वामी जी ने अपने कार्यों से विश्व के इतिहास में एक पृष्ठ और जोड़ दिया। जामा मस्जिद या किसी भी मस्जिद से कोई गैर- मुसलमान नहीं बोल सकता था। परन्तु स्वामी श्रद्धानन्द ने सन् १९१९ के अप्रैल माह में दिल्ली की जामा मस्जिद के अन्दर वेद मन्त्रों को गुंजाया था। वह ऋग्वेद का मंत्र था "ओ३म् त्वं ही नः पिता वसो, त्वं माता शतक्रतो व भूविथ अया ते मुर्म्नीमहे।"

राष्ट्रीय आन्दोलन में भी स्वामी जी की भूमिका कम नहीं थी। वह राष्ट्रीय कांग्रेस के भी नेता रहे। सन् १९१९ में ही जब स्वामी जी विशाल जन सभा का नेतृत्व कर रहे थे और चांदनी चौक घन्टाघर पर जुलूस आया तो इस निडर संन्यासी ने अंग्रेजों की नंगी संगीनों के सामने अपनी चौड़ी छाती खोल कर बुलन्द शेर की दहाड़ सी आवाज में कहा कि साहस है तो चलाओ गोलियां पहले मेरी छाती छलनी होगी, फिर किसी और की। उस शेर की दहाड़ से ब्रिटिश साम्राज्य कांप गया और संगीनें झुक गई। बाद में कांग्रेस की अकर्मण्यता देख कर स्वामी जी ने कांग्रेस से त्याग पत्र दे दिया। मोहनदास करमचन्द को सर्वप्रथम 'महात्मा' की पदवी देने वाले स्वामी श्रद्धानन्द ही थे। जब गांधी जी गुरुकुल कांगड़ी गये तो स्वामी जी ने सर्वप्रथम उन्हें 'महात्मा' के नाम से पुकारा। महात्मा गांधी की महानता पहचानने वाले स्वामी श्रद्धानंद वास्तव में महान थे। २३ दिसम्बर को स्वामी जी का बलिदान दिवस है जो पुकार-पुकार कर कह रहा है कि आर्यसमाज के कर्णधारों फिर समय आ गया है जब हर धर्म स्थल की मीनारों में वेदमन्त्रों का उच्चारण गूंज उठे।

— के-१३/१०, डी. एल. एफ. कुतुब इन्क्लेव, गुड़गावं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

८ दिसम्बर, जिनकी पुण्य तिथि है।

देवता स्वरूप भाई परमानन्द का देवत्व

—महेन्द्रप्रताप

भारतीय स्वातन्त्र्य समर के उद्भट महानायकों में अग्रगण्य थे पंजाब की बलिदानी धरा पर जन्मे भाई परमानन्द। त्याग, तपस्या और बलिदान की भावना उन्हें पैतृक सम्पदा के रूप में प्राप्त हुई थी। देव दयानंद के दर्शन ने उनका पथ प्रदर्शन किया था। मातृभूमि को ब्रिटिश दासता से मुक्ति हेतु वे स्वयं समरांगण में उतरे थे। उन्होंने करतारसिंह सराबा और सरदार भगतसिंह को भी क्रांतिमंत्र की दीक्षा दी थी। वह इतिहासकार थे तो इतिहास सृष्टा और भविष्य दृष्टा भी। हिन्दुत्व को वह राष्ट्रोत्थान का महामंत्र मानते थे और सबल सुदृढ़ हिन्दू समाज उनकी दृष्टि में था इस महान राष्ट्र का मेरुदंड।परतन्त्र मातृभूमि की बंधनमुक्ति के लिए जो राष्ट्रभक्त संघर्ष का पथ अपनाते हैं वे दो राहों में से किसी एक का अनुगमन करते हैं। इनमें से एक है, जन जागरण द्वारा संवैधानिक मार्ग से स्वातन्त्र्य के वंदन अर्चन कर स्वराज्य के बाद सुराज्य के सृजन का। दूसरा मार्ग है, उसी लक्ष्य की सिद्धि हेतु क्रांति की ज्वालमालाओं से होकर गुजरने का।

भाई परमानन्द के विषय में यह प्रश्न स्वाभाविक है कि वह किस कोटि के महापुरुष और किस पथ के पथिक थे ? इस प्रश्न का उत्तर यही प्रश्न कि वह क्या नहीं थे और किस पथ के पथिक नहीं थे ?

किशोरावस्था में ही वैदिक धर्म में दीक्षित होकर वे केवल आध्यात्मिक पथ पर अग्रसर नहीं हुए, अपितु इहलौकिक उन्नति भी मर्यादापूर्वक उपलब्ध की जो आर्यसमाज के छठे नियम की चरितार्थता थी कि संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। यहाँ शारीरिक का अर्थ केवल स्थूल शरीर नहीं है अपितु सूक्ष्म शरीर भी है जिसमें मन, बुद्धि अहंकार और प्राण भी समाविष्ट हैं। भाई जी पर वैदिक धर्म की छाप सम्पूर्णता में पड़ी थी। लोग समझते हैं कि कर्मकाण्ड का अभिप्राय सन्ध्या हवन तथा व्यक्तिगत उन्नति के कर्म होते हैं परन्तु वास्तव में धर्मानुकूल एवं यज्ञमन सभी क्रियाकलाप कर्मकाण्ड की परिधि में आ जाते हैं। भाई जी ने इस व्यापक अर्थ में ज्ञान-काण्ड के साथ कर्मकाण्ड को भी ग्रहण किया। श्रेष्ठ ज्ञान और कर्म के बिना उपासना निर्जीव होती है। भाई जी की उपासना फलवती थी। तभी तो वह निर्भय और अनासक्त जीवन के मानदण्ड बन सके। डी. ए. वी. कालेज में केवल ३५ रु. मासिक पर अध्यापन-कार्य, निर्धनता का जीवन व्रत, मृत्युदण्ड सुना दिये जाने पर भी निश्चिन्त भाव से जेल में ८ घण्टे गहरी नींद सोना उनकी देहात्मबोध से परे की आत्मस्थिति का पर्याप्त प्रमाण है। अमेरिका में एक अपराधी को मृत्युदण्ड सुनाया गया तो मृत्यु के भय, चिन्ता और क्लेश से रात भर में उसके सारे बाल सफेद हो गये। सरोजिनी नायडू के पिता श्री अघोरनाथ चट्टोपाध्याय की सन्ध्या समय मृत्यु हुई और उनकी माता जी के बाल भी शोक से सवेरा होते-होते सफेद हो गये थे। भाई जी की आत्मस्थिति का कुछ अनुमान इन घटनाओं से तुलनाकर लगाया जा सकता है।

मनुष्य तीन एषणाओं-पुत्रैषणा, वित्तैषणा और लोकैषणा से ग्रस्त रहता है। लोकैषणा से श्रेष्ठ पुरूष भी कठिनता से बच पाते हैं। अनेक साधु-संत भी आत्मस्तुति तथा पर-निन्दा रत देखे जाते हैं। भाई जी ने पुत्रोत्पत्ति से पितृऋण चुकाया परन्तु सारी सम्पत्ति हिन्दू महासभा भवन बनाने में लगा दी। इस प्रकार पुत्र में कोई आसक्ति नहीं रखी। निर्धनता का व्रत लेकर अपरिग्रह का पालन किया अर्थात् उपार्जित धन का अपने शरीर पर न्यूनतम व्यय किया परन्तु सामाजिक कार्यों पर व्यय करने में कोई कसर न की। इस प्रकार वह वित्तैषणा से भी मुक्त थे।

भाई जी का सारा जीवन -बलिदान और निरभिमानता का उदाहरण है। वैर, विद्वेष और घृणा मानो उनकी मानसिक रचना के तत्त्व थे ही नहीं। अपने पुराने साथी वीर सावरकर तथा बर्मा के बौद्ध भिक्षु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उत्तम को हिन्दू महासभा में लाने का श्रेय उन्हीं को है। उन कार्यकर्त्ताओं को भाई जी के जीवन से शिक्षा लेनी चाहिए जो किसी योग्य व्यक्ति की टाँग खिंचाई में लगे रहते हैं और संगठन को अपनी जेब में रखते हैं तथा उनका जनाधार नहीं बनने देते।

भाई जी जब विरोध करते हैं तो उसका आधार सत्य-न्यायाधारित लोक कल्याण होता है, कोई रुढ़ि या व्यक्तिगत रागद्वेष नहीं। वह अंग्रेजों का विरोध अन्याय-निवारण के लिए करते हैं। **मुस्लिम साम्प्रदायिकता का विरोध करते हैं क्योंकि वह निराधार है, अन्याय है और राष्ट्रघाती है, परन्तु जब मोहम्मद अली जैसे कट्टर मुस्लिम साम्प्रदायिक नेता की माँ का देहान्त होता है तो शोकसंवेदना प्रकट करने जाते हैं।** जब सारा भारत आत्मविस्मृति की बाढ़ में डूब कर राजनीति में हिन्दुत्व के विनाश पर तुला हुआ है, गांधी जी धर्म और राष्ट्रीयता की अलग और असंगत व्याख्या कर राजनीति को पथभ्रष्ट कर रहे हैं और उनकेअनुयायी भाई जी को पराजित और अपमानित करने के लिए उचित अनुचित का कोई ध्यान नहीं रखते तब भी भाई जी उस अन्धेरे और अन्धड़ में अकेले चट्टान की तरह अडिग खड़े रहते हैं मानों किसी और युग और लोक में खड़े होकर उसका दूर से अवलोकन कर रहे हों। ऐसे व्यक्ति को लोकेषणा से भी मुक्त नहीं तो क्या कहा जायेगा।

वैदिक धर्म के प्रचारार्थ भाई जी ने भारत भ्रमण ही नहीं किया अपितु ब्रह्मदेश तथा दक्षिण अफ्रीका की भी यात्रा की। **भाई जी का धर्म राष्ट्रीयता को भी सुदृढ़ करता था, इसीलिए भिक्षु उत्तम और गांधी जी दोनों ही उनके व्याख्यानों से प्रभावित हुए। दक्षिण अफ्रीका में गान्धी जी को देशभक्ति का पाठ भाई जी के भाषणों से ही मिला और उन्होंने भाई जी को दो मास अपने घर पर रखा।**

भाई जी के साहित्य, भाषणों और सम्पर्क से कितने ही युवक भारत की स्वन्त्रता के लिए बलिपथगामी हुए। आश्चर्यजनक है, उन्होंने अमेरिका में औषधि निर्माण की शिक्षा ग्रहण की और भारत में आकर यह उद्योग लगाया, परन्तु वह उद्योग देशभक्त क्रान्ति-पन्थियों का मिलन स्थल बना और बम निर्माण की विद्या के प्रसाद का केन्द्र भी। **लाला हरदयाल जैसे मेधावी और उद्भट विद्वान भी जब बुद्ध की तरह वैराग्य के मार्ग पर चलकर एक अमेरिकी द्वीप में एकान्तवास कर रहे थे तो भाई जी ही उन्हें पुनः क्रान्ति के मार्ग पर लाये।** भाई जी जब अन्दमान में आजीवन कारावास की यन्त्रणा झेल रहे थे तब गांधी जी ने सी. एफ. एण्ड्रयूज को भाई जी को छुड़ाने का कार्य सौंपा। एण्ड्रयूज लाहौर गये और भाई जी की पत्नी से मिले और अंग्रेजी अत्याचार की चक्की में पिसते उनके परिवार को देखा तो उन्होंने दो अत्यन्त मार्मिक लेख लिखे। इस प्रत्यक्ष प्रभाव के अतिरिक्त परोक्ष रूप में उन्होंने क्या किया उसका कोई लेखा-जोखा अभी तक उपलब्ध नहीं हुआ है। परन्तु यह तथ्य है कि भाई जी को आजीवन कारावास पूरा होने से पूर्व ही पाँच वर्ष बाद मुक्त कर दिया गया। अन्दमान से वापिस आने के बाद गांधीजी ने उन्हें राष्ट्रीय विद्यापीठ (विश्वविद्यालय) लाहौर का प्रथम कुलपति बनाया।

परन्तु भाई जी ने व्यक्तिगत सम्बन्धों या आभार को अपने कर्तव्यपालन में कभी आड़े नहीं आने दिया। जब कांग्रेस और गांधी जी मुस्लिम साम्प्रदायिकता के आगे घुटने टेक रहे थे तो उन्होंने क्षुब्ध होकर कांग्रेस त्याग दी। उन्होंने हिन्दूसंघ नाम की एक संस्था भी बनायी पर हिन्दू महासभा में उसका विलय कर वह स्वयं भी हिन्दू महासभा से जुड़ गये और अन्तिम श्वास तक उससे जुड़े रहे। भाई जी दर्शन और इतिहास के तलदर्शी विद्वान थे। उन्होंने १९०४ में निष्कर्ष निकाला किमुसलमान किसी अन्य जनसमुदाय के साथ मिलकर साझा राष्ट्र नहीं बना सकते। अतः आवश्यकता पड़ने पर मुसलमानों को सिन्ध नदी के पार भेज कर शेष भारत को हिन्दू राज्य घोषित कर दिया जाय। इस सत्य को अन्य हिन्दुत्वनिष्ठ नेताओं ने बाद में अनुभव कर १९२४-२५ में इसकी घोषणा की तथा तदनुकूल पग उठाये। जब ला. लाजपतराय ने यह कहा कि मुसलमान अंग्रेजों से अच्छे हैं और वह हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए समर्पित हो गये तो भाई जी ने बहुत दुःखपूर्वक कहा कि आज हमारी ३२ वर्ष की मित्रता का अन्त हो गया; हमारे रास्ते अलग-अलग हो गये। **भाई जी भविष्यद्रष्टा थे। जब मुस्लिम लीग ने सिन्ध को मुम्बई प्रान्त से अलग करने की मांग की तो भाई जी तथा हिन्दू महासभा ने इसका विरोध किया। भाई जी ने कहा कि सिन्ध से लेकर पश्चिमोत्तर सीमाप्रान्त तक एक अखण्ड मुस्लिम बहुमतीय भूभाग बन जाएगा और मुसलमान अलग स्वदेश (होमलैण्ड) की मांग करेंगे। मोती लाल नेहरू ने कहा कि यह कहने वाला पागल है। कांग्रेस ने मुस्लिम लीग की मांग स्वीकार कर ली जिस**

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पर अंग्रेज सरकार ने प्रसन्नतापूर्वक मुहर लगा दी। बाद का इतिहास साक्षी है कि भाई जी पागल थे या मोतीलाल नेहरू अभिमानी व अशिष्ट।

१९४६ के निर्वाचन में भाई जी के विरुद्ध लाहौर में कांग्रेसी हिन्दुओं ने भाई जी की अर्थी निकाली। तो भाई जी ने मुस्करा कर कहा कि ये भोले हिन्दू मेरी नहीं अपनी अर्थी निकाल रहे हैं जो सत्य सिद्ध हुआ। काश! हिन्दुओं ने विवेकपूर्वक राजनीति की होती तो ये दिन न देखने पड़ते। भाई जी को यह श्रेय है कि उन्होंने इतिहास को राष्ट्रीय दृष्टि से पढ़ना और समझना सिखाया। प्रसिद्ध इतिहासकार पं. भगवद्दत्त ने लिखा है कि भाई परमानन्द जैसा इतिहासकार गत एक हजार वर्ष में नहीं हुआ।

भाई जी सामाजिक संगठन का महत्त्व बहुत आंकते थे। उन्होंने यह समझ लिया था कि जात-पांत हिन्दू संगठन में बहुत बड़ी कठोर और व्यावहारिक बाधा है। अतः इस बाधा को तोड़ने के लिए उन्होंने लाहौर में जात-पात तोड़क मण्डल बनवाया और प्रसिद्ध विद्वान श्री सन्तराम बी. ए. को उसका काम सौंपा।

भाई जी पर-उपदेश कुशल व्याख्याता नहीं थे। जो कहते थे, करते थे। सो उन्होंने सर्वविध ब्राह्मण होते हुए भी अपनी पुत्री का विवाह क्षत्रिय कुलोत्पन्न प्रो. धर्मवीर से किया। महात्मा का लक्षण है—मनस्यैकम्, वचस्येकम् महात्मनः। मन-वचन-कर्म से एक हो, वह महात्मा होता है। भाई जी को यों ही देवतास्वरूप नहीं कह दिया गया था और न वीर सावरकर ने व्यर्थ में उन्हें करोड़ों में एक कहा था। —हि. म. स. भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।

(परमात्मा की अमर वाणी)

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

आज ही अपने तथा अपने मित्रों के परिवारों में लायें।

पुस्तकालय संस्करण
मूल्य १६००/- रु० का १२००/- रु० में

उपहार संस्करण (बढ़िया पेपर)
मूल्य ३०००/- रु० का २२५०/- रु० में

★ ★ ★

२००/- रु० का बढ़िया साहित्य 'पुस्तकालय संस्करण' के साथ तथा ३५०/- रु० का साहित्य "उपहार संस्करण" के साथ प्राप्त करें।

□ □ □

वैदिक विचारधारा का प्रसारक *"जनज्ञान मासिक"* के नये सदस्य बनने पर गत वर्ष के जनज्ञान १२ अंक भेंट में दिये जायेंगे तथा प्रतिमास एक वर्ष तक जनज्ञान भेजा जायेगा। **वार्षिक शुल्क ८० रु० आजीवन शुल्क ५०१/- रु०**

आजीवन सदस्य बनने पर जनज्ञान के १२ अंक तथा विशेष उपहार *"लाइफ एण्ड टीचिंग ऑफ स्वामी दयानन्द"* (अंग्रेजी) में प्राप्त करें जिसका मूल्य दो सौ रुपए है।

व्यवस्थापक :- **दयानन्द संस्थान**, २२८६, आर्य समाज मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-११०००५
दूरभाष : ५७२४७४१, ५८१५४५७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा वेदभिक्षुः

— डॉ. सीताराम सहगल

महात्मा वेदभिक्षुः जी से मेरा परिचय नगण्य रहा है। सम्भवतः जीवन में मैंने उनसे दो-तीन बार बातचीत की थी। दिनांक १७/१०/८३ को मैंने उनके कार्यालय से The History of the Assassins पुस्तक की तीन कापियां खरीदी थीं। तब उन्होंने मेरा नाम और पता पूछा था। उत्तर में मैंने नाम और पता बताया था। उसके बाद अजमेर में दयानन्द संस्थान की दुकान पर जो महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण शताब्दी पर लगाई गई थी, दर्शनमात्र किए थे। एक बार फोन से भी बात हुई थी। यही था उनसे शारीरिक परिचय। लेकिन उनके यशः शरीर का परिचय पत्र-पत्रिकाओं से होता रहता था। वे जानदार व्यक्ति थे जैसा कि जीवन्त नसल के व्यक्तियों का होता है। उन्हें अपनी जाति, समाज और देश से लगाव था। दिन-रात उसके उत्थान के लिए चिन्तित रहते थे। उसी के लिए जीवन में संघर्षयुक्त भी रहे। उनका कार्यालय एक घोंसला-सा था परन्तु उसमें जो काम हुआ है वह आलीशान कोठियों में भी नहीं हुआ।

उनका पूर्व नाम भारतेन्द्र नाथ था। उनकी शिक्षा दीक्षा जेहलम में हुई थी। यह वह स्थान था जहां महाराज अश्वपति, कैकेयी के पिता दशरथ के कुटुम्बी और भरत के मामा राज्य करते थे। महर्षि लोग वहां जाकर उनसे ज्ञान की गुत्थियों को सुलझवाते थे। वह स्वाभाविक ही है कि ऐसी मिट्टी से बना-पला शरीर सृजनात्मक कार्य में अपने जीवन के क्षण-क्षण पल-पल को देश-सेवा में लगाता।

उन्होंने वेद की अपूर्व सेवा की जो अपने आप में ऐतिहासिक है। उन्होंने हजारों घरों में चारों वेदों के हिन्दी भाष्य पहुंचाए जो अपने आप में उनकी कीर्ति का उच्च मानदण्ड है। ऐसा कार्य आर्यसमाजी संस्थाओं ने नहीं किया, जो करना चाहिए था। वे महर्षि दयानन्द के सच्चे भक्तों में प्रमुख थे। यह उनका पुरुष सिंहत्व है। वेद में ठीक ही कहा है— **एतावनेव पुरुषः कृतं यस्य न नश्यति।** वे केवल ५४ वर्ष की अवस्था में ही दिवंगत हो गए यह आश्चर्य बन गया है। हमें इससे भी शिक्षा लेनी चाहिए जैसा कि राष्ट्रकवि कालिदास ने कहा है— शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।

श्रीमती राकेशरानी जी को धैर्य से उनके मिशन को तेजी से पूरा करना चाहिए जो वे कर रही हैं। भारत में सच्चे शब्दों में स्त्री को रत्न कहा गया है। देश का ऐसा ही रत्न राज्य चलाता रहा — जबकि पड़ोस के देशों में चारों ओर सेनाओं का शासन था। दयानन्द संस्थान प्रभु का प्रसाद है जो सब को स्वीकार्य और सेव्य है।

—डब्लू-४३, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली

अमर महात्मा वेदभिक्षुः के प्रति

हे कालजयी, हे युगपुरुष ! हे क्रांतिदूत— हे वेदभिक्षु;
है दिग्दिगन्त करता नमन! करता नमन- करता नमन ॥
तुम प्राण राष्ट्र के जीवन के! रस-गंध थे वैदिक उपवन के,
है आज बिलखती देश आन! ओ जीवन ! हिन्दू कण-कण के
हे कालजयी, हे युगपुरूष! हे क्रान्तिदूत- हे वेदभिक्षु,
है दिग्दिगन्त करता नमन! करता नमन- करता नमन ॥
अवरूद्ध "हृदय मन्दिर" सरिता! "संस्थान दयानन्द" है रोता,
"जनज्ञान" आर्ष साहित्यों का! लगता जैसे संधिराग मिटा।
हे कालजयी, हे युगपुरुष ! हे क्रान्तिदूत—हे वेदभिक्षु,
है दिग्दिगन्त करता नमन! करता नमन— करता नमन।
हिन्दुत्व-जय के प्रखर ऋभु! ओ राष्ट्रवाद के मुखर ऋभु,
तुम गये हो क्या कि चला गया! है आर्य राष्ट्र का संजाते ऋभु
हे कालजयी, हे युग पुरूष! हे क्रान्तिदूत— हे वेदभिक्षु;
है दिग्दिगन्त करता नमन! करता नमन— करता नमन ॥
दयानन्द के कार्य के संवाहक! ओ आर्यजगत् के प्रशस्त पावक
तूने अमर अगणित उपकार किये! संस्कृति की नाव के दक्ष नावक
हे कालजयी, हे युगपुरुष! हे क्रान्तिदूत—हे वेदभिक्षु;
है दिग्दिगन्त करता नमन! करता नमन- करता नमन ॥
तुम अमर हो कण-कण, जन-जन में! आह्लादित भारत के मन में
कृतित्व तुम्हारा गंध बना! शाश्वत, वैदिक धर्मानिन में!
हे कालजयी, हे युगपुरूष ! हे क्रान्तिदूत— हे वेदभिक्षु;
है दिग्दिगन्त करता नमन! करता नमन- करता नमन ॥

— बृजकिशोर अश्क

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१९ दिसम्बर बलिदान तिथि

पं. रामप्रसाद 'बिस्मिल'

— रामविहारी विश्वकर्मा

सहनशीलता और धैर्य की प्रतिमूर्ति पं. रामप्रसाद 'बिस्मिल' काकोरी कांड 'यज्ञ' के प्रमुख आयोजकों में से थे। उन्हीं के आग्रह पर 'हिन्दुस्तान प्रजातंत्र संघ' की कार्यकारिणी की बैठक ७ अगस्त १९२५ को शाहजहांपुर में हुई थी। उस बैठक में बिस्मिल के अलावा राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी, शचीन्द्रनाथ बख्शी, मन्मथनाथ गुप्ता, मुकुन्दीलाल गुप्ता, बनवारी लाल, चन्द्रशेखर आजाद, मुरारीलाल, केशव चक्रवर्ती और अशफाकउल्ला खां सम्मिलित थे। बिस्मिल ने बैठक को सम्बोधित करते हुए कहा था कि जब हम लोग धन जुटाने के लिए इधर-उधर हमले करते हैं तो यह डकैती कही जाती है और हम मासूम लोगों के प्राण ले लेते हैं, इससे बेहतर यह है कि हमें सरकारी खजानों को ही लूटना चाहिए। चन्द्रशेखर आजाद ने भी इसका खुलकर समर्थन किया परन्तु अशफाकउल्ला खां ने इसे व्यर्थ के खून-खच्चर में फंसने की कार्यवाही बताया। बिस्मिल ने जब चतुराई के साथ अपने कार्यक्रम की रूपरेखा रखी तो सभी की शंकाओं का निवारण हो गया और अंत में बिस्मिल के प्रस्ताव पर सभी ने हामी भर ली। बिस्मिल ने सहारनपुर लखनऊ पैसेंजर ट्रेन में सभी क्रांतिकारियों को अलग-अलग डयूटी पर तैनात कर दिया और कार्रवाई को अंजाम दिलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। उन्होंने ट्रेन लूटने से पहले जंजीर खींचने का बहुत अच्छा नाटक किया और यात्रियों को पता भी नहीं चलने पाया। एक ही झटके में सारी कार्रवाई कर ली गई। एक क्रांतिकारी ने वहां से रवाना होते समय भूल से अपनी खादी की चादर छोड़ दी और वहीं इन क्रांतिकारियों को पकड़वाने में बहुत सहायक सिद्ध हुई। पं. रामप्रसाद 'बिस्मिल' बहुत ही सीधे-सादे और निर्भीक तथा वैदिक धर्म के प्रति आस्थावान राष्ट्रभक्त थे। यदि वे चाहते तो अन्य क्रांतिकारियों की तरह भेष बदलकर कहीं भी छिप सकते थे लेकिन उन्होंने कभी भी ऐसा नहीं किया। उन्हें जेल से यदि कहीं ले जाया जाता था तो बिना हथकड़ी ले जाया जाता था। फिर भी, वे धोखा देकर भागने की बात सोचते तक नहीं थे। क्रांतिकारियों को एक बार उन्हें लखनऊ जेल से भगा लेने की तरकीब सूझी लेकिन बिस्मिल ने पहरे पर बैठे सिपाही को धोखा नहीं दिया। जेल में उन्हें हवन करने की सुविधा दी जाती थी। वे पक्के आर्यसमाजी थे। जेल बैरक में भी प्रतिदिन उनका हवन कार्यक्रम चलता रहता था।

राम प्रसाद 'बिस्मिल' जेल में भी अपना खाना खुद पकाते थे। वे किसी के हाथ का नहीं खाते थे। रामप्रसाद 'बिस्मिल' प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। जब सेशन्स जज की अदालत में कार्यवाही चल रही थी तो उन्होंने कहा :

"जज साहब! हम जानते हैं कि आप हमें क्या दंड देंगे। हमें फांसी की सजा दी जाएगी और हमारे जो होंठ इस समय अदालत में हिल रहे हैं, वे कुछ दिन बाद बंद हो जाएंगे। हमारा बोलना, काम करना, हिलना और यहां तक कि जीना और सांस लेना भी सरकार के विरूद्ध समझा जाता है। न्याय के नाम पर शीघ्र ही गला घोंट दिया जाएगा। मैं जानता हूं कि मैं मरूंगा, किन्तु मैं मरने से नहीं डरता। किन्तु जनाब ! क्या इससे सरकार का उद्देश्य पूरा हो जाएगा ? मैं तो कहता हूं कि हमारा खून नये क्रांतिकारियों को जन्म देगा और एक दिन विदेशियों के तांडव नृत्य की यहां समाप्ति होगी। मैं मरूंगा, किन्तु फिर जन्म लूंगा और मातृभूमि का उद्धार करूंगा।"

इस तरह का वक्तव्य कोई असाधारण व्यक्ति ही दे सकता है। पं. रामप्रसाद ने 'बिस्मिल' नाम से शेरो-शायरी की उनके अल्फाज आज भी लोगों के कंठहार बने हुए हैं। **'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है। देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।** इसे स्वतंत्रता-पूर्व भारत में युवा-जागृति के मूल मंत्र की तरह दुहराया जाता था।

रामप्रसाद 'बिस्मिल' ने गोरखपुर जेल में रहते हुए अपनी आत्मकथा भी लिख डाली। हालांकि प्रकाशित होते ही उसकी प्रतियां जब्त कर ली गईं तथापि उसका अपेक्षित प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सका। क्रांतिकारी युवकों के लिए बिस्मिल की आत्मकथा मानो गीता है। उसकी शैली बहुत प्रभावशाली है। १९ दिसम्बर १९२७ की सुबह जब बिस्मिल को फांसी चढ़ाने के लिए ले जाया गया और उनसे आखिरी ख्वाहिश पूछी गयी तो उन्होंने एक वाक्य कहा : "मैं अंग्रेजी साम्राज्य का विनाश चाहता हूं।" फांसी दिए जाने से पूर्व उन्होंने जो शब्द कहे, वे एक प्रकार से जीवन का सार प्रस्तुत करते हैं—

"मालिक! तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे।
बाकी न मैं रहूं, न मेरी आरजू रहे॥
जब तक कि तन में जान, रगों में लहू रहे,
तेरा ही जिक्र या तेरी ही जूस्तजू रहे॥"

— पंडारा रोड, नई दिल्ली

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

६ दिसम्बर जिनकी पुण्यतिथि है

डा. अम्बेडकर : एक मूल्यांकन

—शिवकुमार मिश्र

६ दिसम्बर, डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर की पुण्य तिथि है आज से ४५ वर्ष पहले सन् १९५६ में उन्होंने चिरविदाई ली थी। इसे राष्ट्रीय जीवन की अपूर्णनीय क्षति ही कहा जा सकता है। दलित सत्ताधिकार का पक्षधर हमेशा के लिए विदा हो गया। आज डॉ. अम्बेडकर सशरीर हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनका जुझारू संघर्ष और कालजयी चिन्तन इतिहास का अध्याय बन गया है जिससे पीड़ित मानवता प्रेरणा ले सकती है। वर्ग विहीन समाज की स्थापना का सपना अम्बेडकर ने संजोया था। वह सामूहिक खेती और उद्योग के राष्ट्रीयकरण के हिमायती थे, इस बिन्दू पर वह मार्क्सवाद के निकट थे लेकिन पश्चिम के लोकतंत्र पर उनकी अटूट आस्था थी और इस आस्था और अनुराग की वजह से वह भारत जैसे देश के लिए मार्क्सवाद को अनुपयुक्त मानते थे। सामाजिक क्रान्ति उनका साधन और समानता साध्य थी। दलित वर्ग को ज़ाति व वर्ण व्यवस्था की गुलामी से निजात दिलाना जरूरी था जिससे वे अपने सामाजिक अधिकारों को पहचान सके।

डा. अम्बेडकर का पांडित्य अद्भुत था। उनका लेखन काल १९१६ से १९५६ तक, अर्थात् ४० वर्षो का है। सन् १९१६ की ९ मई को उन्होंने १८ पृष्ठों का एक निबन्ध अमरीका के कोलम्बिया विश्व विद्यालय के सेमीनार में पढ़ा था, जिस का नाम कास्ट् इन इन्डिया में देअर मैकेनिज्म जेनेसिस एंड डवलपमेन्ट था "इस निबन्ध में 'भारतीय समाज में व्याप्त जातिभेद और अस्पृश्यता का अनूठा विश्लेषण, पेश किया था। अंम्बेडकर की दूसरी प्रमुख रचना 'एनीहिलेशन आफ़ कास्ट' अथवा 'जाति प्रथा का उन्मूलन' थी। साठ पृष्ठों की यह रचना उन्होंने सन् १९३६ में लिखी थी। इन दो रचनाओं ने जाति प्रथा को समझने की नयी दृष्टि दी। जाति के विभिन्न तत्वों का विश्लेपण करते हुए डाक्टर अम्बेडकर ने भारत के साम्यवादियों के बारे में कहा : "वे अपने युरोपीय सहयोगियों का अनुगमन करते हुए भारत में भी इतिहास की आर्थिक व्याख्या को लागू करना चाहते हैं। वे मानव को एक आर्थिक जंतु मानते हैं। इसलिए उस की गतिविधियाँ तथा आकांक्षाऐं आर्थिक तत्त्वों द्वारा प्रतिबद्ध हैं। अतः सम्पत्ति ही सत्ता का एकमात्र साधन है। इसलिए वे उपदेश देते हैं कि राजनीतिक तथा सामाजिक सुधार भीमकाय भ्रम के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। अतः धन की बराबरी का सुधार अवश्य ही अन्य सुधारों के ऊपर होना चाहिए।"

जाति प्रथा का विश्लेषण करते हुए डॉ. अम्बेडकर ने कहा :- जाति मुख्य रूप से हिन्दुओं की श्वांस है। किन्तु हिंदुओं ने वायु को सब जगह दूपित बना दिया है जिससे हर कोई सिख, मुसलमान , तथा ईसाई सभी पीड़ित हैं। अतः जाति विरोधी लड़ाई अन्य राष्ट्रीय मुद्दों 'स्वराज' से भी कठिन है। स्वराज की लड़ाई में सारा देश एक तरफ, किन्तु जाति विरोधी लड़ाई सारे देश के विरुद्ध है। अतः वह स्वराज्य से अधिक महत्त्वपूर्ण है। स्वराज प्राप्ति का कोई महत्त्व नहीं हैं, यदि इसे सुरक्षित रखा न जा सके।"

अम्बेडकर के चिन्तन की आभा के आलोक में सारा भारत जगमगा उठा। कांग्रेस, हिन्दू महासभा और मुस्लिम लीग ने दलित चेतना के प्रति अम्बेडकर के नजरिये को नये परिप्रेक्ष्य में समझना शुरु किया। गांधी, लाला हरदयाल, वीर सावरकर और मौहम्मदअली जिन्ना ने दलित एजेन्डे पर अम्बेडकर से विचार विनिमय किया। इतिहास के इन्हीं क्षणों में मुम्बई प्रेसिडेंसी के गर्वनर ने डा. अम्बेंडकर को सन् १९२७ में विधान सभा के लिए नामित किया था। १९३२ में उन्हें दूसरी बार नामांकित किया गया था। इस तरह डा. अम्बेडकर का संसदीय राजनीति में प्रवेश हुआ था। इसे दलित चेतना का उत्कर्प ही कहा जा सकता है।

गांधी जी के दलित सरोकार भी विलक्षण थे। राष्ट्रीय आज़ादी गांधी की प्राथमिकता थी। इस के लिए गांधी ने दलित मुक्ति के सवाल को स्वराज्य से जोड़ा था। 'हरिजन' पत्र का प्रकाशन 'हरिजन सेवक संघ' और 'आदिम जन जाति संघ' की स्थापना इसी सच की प्रखर अभिव्यक्ति कही जा सकती है। १९२० की कलकत्ता कांग्रेस ने दस सूत्री कार्यक्रम तैयार किया था जिसमें एक सूत्र अस्पृश्यता के खात्मे के प्रति कांग्रेस की वचनबद्धता थी। असहयोग सत्याग्रह ने भी छूआछूत को मिटाने के लिए जनजागरण किया था और कांग्रेस ने १९२२ में बारदोली कार्यक्रम बनाया था। इस कार्यक्रम की बुनियादी भावना भी जातिभेद खत्म करने और अस्पृश्यता को जड़मूल से मिटाना था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जातिवाद और अस्पृश्यता की खिलाफ़त करने वाले संघर्ष पर गांधी और अम्बेंडकर में फर्क था। फर्क प्राथमिक्ता को लेकर था। गांधी की प्राथमिकता स्वराज्य थी तो अम्वेंडकर के लिए स्वराज्य से पहली प्राथमिकता सामाजिक मुक्ति थी। लन्दन में दूसरा गोलमेज सम्मेलन ७ सितम्बर १९३१ को हुआ। इस सम्मेलन में अम्बेडकर ने कहा कि सभी सम्प्रदायों को उनकी जनसंख्या के अनुपात से सत्ता में अधिकार दिये जायें। दलित जातियों के लिए विशेष प्रतिनिधित्व और पृथक मतदान की दलील दी। इससे गांधी जी विचलित हो गये। अपने भाषण के दरमियान **गांधी जी ने कहा कि "मैं अम्बेडकर की योग्यता का सम्मान करता हूँ पर अपने जीवन में उन्होंने जो मुसीवतें झेली हैं उनकी कडुवाहट में वे न्याय को भुला बैठे हैं।" इस पर अम्बेडकर मौन हो गये।**

अंगरेजी राज ने १९ अगस्त १९३२ को कम्यूनल अवार्ड (साम्प्रदायिक पंचाट) की घोषणा की। इसमें दलित वर्ग के लिए विशेष प्रतिनिधित्व और पृथक मतदान को स्वीकार किया गया था। गांधी और कांग्रेस ने रैम्जे मेकडोनल्ड की व्यवस्था का सतत विरोध किया और गांधी जी ने दलित वर्ग को हिन्दुओं से पृथक करने के खिलाफ आमरण अनशन किया। इसके बाद पूना पैक्ट हुआ। गांधी जी ने अनशन छोड़ा और आंबेडकर ने गांधी की दलील को मान्यता देकर महात्मा के प्राणों की रक्षा की। पूना समझौते से सुरक्षित स्थानों का कोटा बढ़ गया। अंग्रेज ने दलित वर्ग के लिए ६७ स्थान आरक्षित किये थे लेकिन गांधी और कांग्रेस ने प्रांतीय एसेम्बलियों के लिए १४८ स्थान सुरक्षित मान कर दलित उत्थान की ओर कदम बढ़ाये थे।

गांधी देश के सर्वमान्य नेता थे। दलित वर्ग में भी गांधी जी की मान्यता थी। जनाधार की दृष्टि में अम्बेंडकर कमजोर थे। सन् १९३७, ४६ के आम चुनाव में दलित वर्ग के लिए आरक्षित स्थान १५१ थे तब कांग्रेस ने १४१ सीटें जीती थीं। इस से गांधी और कांग्रेस का ठोस जनाधार ही झलकता था।

स्वराज के बाद २६ जनवरी १९५० को नया संविधान लागू हुआ। नये संविधान में लोक सभा की ७२ सीट सुरक्षित थीं। कांग्रेस ने ५८ रिजर्व सीट जीत कर अपनी जनप्रियता उजागर की थी। लेकिन प्रथम लोकसभा में अम्बेडकर नहीं चुने गये। वह कांग्रेस के कजरोलकर से चुनाव हार गये। सन् १९५४ में भंडारा उपचुनाव था। अम्बेडकर ने उपचुनाव लड़ा। वह कांग्रेस के ब्रोकर से पुनः चुनाव में पराजित हो गये।

वार वार की चुनाव पराजय ने आरक्षण के सरोकारों पर अम्बेडकर को नयी दृष्टि दी और वह दलित वर्ग के आरक्षण और राजनीति की जातिवादी धारा के आलोचक हो गये। अम्बेडकर ने २७ अगस्त १९५५ को दलित फेडरेशन की बैठक में आरक्षण के खिलाफ प्रस्ताव पास कराया। इसे अम्बेडकर के चिन्तन में आये बदलाव का द्योतक कहा जा सकता है। जो अम्बेडकर जिन्दगी के चालीस बरस तक आरक्षण को सामाजिक न्याय की पहली शर्त समझते थे, वहीं इसकी अवधारणा में समायी खामियों और कमजोरियों को बेपर्दा करने में जुट गये। आरक्षण की कोख से जन्मे दलित नेतृत्व और अधिकारी वर्ग की कार गुजारियों से अंम्बेडकर आजिज आ गये थे। **आगरा की जनसभा में अम्बेडकर ने दलित वर्ग के अधिकारियों के सम्बन्ध में कहा था कि इन लोगों ने समाज के गरीबों के नाम पर नौकरी तो पाली है लेकिन समाज के दुःख दर्द इन की नजर से ओझल हैं।** दलित वर्ग के वर्गीय सरोकारों का यदि विश्लेषण किया जाये तो आज भी ९४.५ फीसद दलित भूख, तबाही और बरबादी के सागर में गोते लगा रहे हैं। दलित वर्ग में ०.५ फीसदी 'इलिट' हैं जो सुख और सुविधा की चादर ओढ़ कर दलित उत्थान के सपने संजोय रहे हैं। यह दलित समाज का सुविधा भोगी वर्ग है। धन और धरती इस वर्ग की मंजिल है। इस नेतृत्व से जनता ने उम्मीद जतायी थी कि वे दलित वर्ग के हितों के लिए सर्वस्व त्यागी बन कर काम करेंगे-लेकिन इन का आचरण निज वैभव के अम्बार खड़ा करने में ही लगा हुआ था, और लगा है। इस बिन्दु पर नया दलित नेतृत्व अम्बेडकर के मापदंड पर खरा नहीं उतरा। अतएव वह आरक्षंण के ही विरोधी हो गये।

रिपब्लिकन पार्टी के प्रारूप और संविधान की रचना कर अम्बेडकर ने एक नया आदर्श स्थापित किया। आंबेडकर की राजनीतिक यात्रा 'इंडिपेंडेंट लेवर पाटी' से शुरू हुई थी। इस दल की स्थापना डॉ. अम्बेडकर ने पहली अगस्त १९३६ में की थी। इस दल ने १९३७ के चुनाव में हिस्सा लिया था और अम्बेडकर सहित उनके १२ साथी विधायक चुने गये थे। बाद में इंडिपेंडेंट लेवर पार्टी को १९-२० जुलाई १९४२ को नागपुर सम्मेलन में शेडयून्ड कास्ट फेडरेशन में तबदील कर दिया था। इस तरह वर्गीय राजनीति का जातीय रुपान्तर हो गया था।

रिपब्लिकन पार्टी को लोकतांत्रिक पार्टी बनाने का संकल्प डा. अम्बेडकर का था। इस पार्टी में समाजवादी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एस. एम. जोशी आचार्य पी. के. अत्रे को सम्मिलित करने का निमंत्रण डॉ. अम्बेडकर ने तैयार किया था। यह ५ दिसम्बर १९५६ की घटना है अर्थात् निर्वाण से एक दिन पूर्व ही डा. अम्बेडकर ने पत्र लिखा था। सर्व समाज की लोकतांत्रिक पार्टी बनाने की डा. अम्बेडकर की कोशिश का मकसद जातिवादी राजनीति को तिलांजलि देना ही माना जा सकता है। लेकिन अपने संकल्प को पूरा करने से पहले ही डॉ. अम्बेडकर को निर्वाण प्राप्त हो गया।

जातिवाद विरोधी संघर्ष में गांधीवादियों, समाजवादियों और साम्यवादियों की भी भूमिका थी। इस भूमिका का सामाजिक आधार आर्यसमाज, ब्रह्मसमाज और प्रार्थनासमाज ने पहले ही तैयार किया था।

गांधी और अम्बेडकर एक दूसरे के पूरक थे। गांधी के मन में अम्बेडकर के ज्ञान और प्रतिभा का सम्मान था। इसलिए गांधी की पहलकदमी पर राष्ट्रीय नेतृत्व ने अम्बेडकर को संविधान सभा का सदस्य बनाया था। तब संविधान सभा के २९६ सदस्य थे जिस में कांग्रेस के २०५ सदस्य चुने गये थे। मुस्लिम लीग ने भी ७३ सीट जीती थी। बाद में, मुस्लिम लीग संविधान सभा का बहिष्कार, पृथक संविधान सभा के गठन और पाकिस्तान के निर्माण की मांग पर अड़ गई। संविधान सभा से मुस्लिम लीग के हटने के बाद सांसदों की तादाद २२३ हो गयी थी। डा. अम्बेडकर की संविधान सभा की सदस्यता तब समाप्त हो गयी क्योंकि वह मुस्लिम लीग के सहयोग से ही संविधान सभा में चुने गये थे।

गांधी का अंम्बेडकर को संविधान सभा का सदस्य पुनः बनाये जाने का आग्रह महात्मा गांधी की सदाशयता को ही उजागर करता है। कांग्रेस का एक वर्ग गांधी की "पहलकदम का विरोधी था। वह अम्बेडकर को संविधान सभा का सदस्य बनाये जाने का विरोधी था। इस वर्ग का तर्क था कि अम्बेडकर ने २ जुलाई, सन १९४१ को वायसराय की कौंसिल का सदस्य बन कर राष्ट्रीय हितों की अनदेखी की है। 'पाकिस्तान के बारे में' 'कांग्रेस और गांधी ने अछूतों के लिए क्या किया ?' जैसी रचनाएं रच कर अम्बेडकर ने राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष को कमजोर बनाया था। तब सरदार पटेल और राजेन्द्र बाबू ने एक मुहावरा घड़ा था : 'अतीत को भूलो और माफ़ करो'। इस तरह गांधी के आग्रह को राष्ट्रीय नेतृत्व में मंजूर कर राष्ट्रीय पुन निर्माण में अम्बेडकर के योगदान को रेखांकित किया था।

अम्बेडकर ने नये संविधान की रचना में उल्लेखनीय योगदान दिया था। वह संविधान की मसविदा कमेटी के सदस्य और अन्ततः उसके चेयरमैन चुने गये थे। स्वतंत्र भारत के पहले कानून मंत्री भी डा. बाबा साहब अम्बेडकर को बनाया गया था। नये भारत के निर्माण में डॉ. अम्बेडकर की भूमिका का देश ने उच्च मूल्यांकन किया था। पंड़ित जवाहर लाल नेहरू ने डॉ. अम्बेडकर को "हमारे संविधान के प्रधान शिल्पी" कह कर अलंकृत किया था।

'झूठे देवता की पूजा' के चर्चित लेखक और राजनीतिक विश्लेषक अरूण शौरी ने आंबेडकर को गांधी का दुश्मन करार दिया है। शौरी ने पूना पैक्ट के दरमियान अम्बेडकर की गांधी विषयक टिप्पणियों को उद्धृत किया है लेकिन अरूण शौरी ६ सितम्बर १९५४ के अम्बेडकर के उस भावोद्‌गार को भूल जाते हैं जिस में अम्बेडकर ने गांधी की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। अम्बेडकर ने अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति आयुक्त की १९५३ की रपट पर बोलते हुए राज्य सभा में कहा था।"...... गांधी जी की स्मृति में नमक टैक्स को हटा दिया गया है। मै गांधी जी का सम्मान करता हूँ और प्रस्ताव करता हूँ कि नमक टैक्स पर लेवी लगाकर एक 'ट्रस्ट फंड' गांधी के नाम पर बनाइए और गांधी ट्रस्ट फंड का इस्तेमाल अछूतों के विकास और पुर्नवास पर लगाइयें। हम सब मानते हैं कि दलित गांधी के लाड़ले थे। इस परियोजना पंर गांधी जी स्वर्ग से हमें आशीर्वाद देंगे। टैक्स पर लेवी लगा कर इस धनराशि से बंजर-परती जमीन का विकास करके और इस धरती पर अनुसूचित जाति के लोगों के पुर्नवास की परियोजना चालू कर हम गांधी की स्मृति को चिर स्थायी बना सकते हैं।"

अम्बेडकर द्वारा गांधी का पुनर्मूल्यांकन एक महत्त्वपूर्ण घटना है। आज इस घटना को सवर्ण ब्राह्मणवादी परम्परा और दलितवाद के जुझारु तेवरों ने झुंठला दिया है। 'सवर्ण मानसिकता अंम्बेडकर को नामंजूर कर रही है। तो दलितवाद के नाम परे सजने वाली राजनीतिक दुकानें गांधी की धवल काया पर कालिख पोतने में जुटी हुई हैं। सच इनके बीच में है। गांधी और अम्बेडकर एक दूसरे के पूरक कहे जा सकते हैं। जो लोग गांधी-अम्बेडकर को पृथक करते हैं वह अनजान हैं। ज्ञानी वही हो सकते हैं जो गांधी और अम्बेडकर में समन्वय तलाशते हैं।

—IX/७९ए जज कालोनी, वैशाली (गाजियावाद)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जो २७ दिसम्बर को बलिदान हुए

राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी

— रा. वि. वि.

काकोरी कांड के शहीदों ने मातृभूमि की बलिवेदी को अपने रक्त से सिंचित करके स्वतंत्रता देवी के प्रति अपने जिस कर्त्तव्य का निर्वाह किया, वह भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में अपनी तरह का अप्रतिम उदाहरण है। इस कांड के चारों अभियुक्त— राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी, पं. रामप्रसाद 'बिस्मिल' ठाकुर रोशनसिंह और अशफाकउल्ला खां को फांसी की सजा दी गई। यदि ध्यान से देखा जाए तो इन क्रांतिकारियों की मातृभूमि के प्रति आगाध श्रद्धा थी तभी तो चने और सत्तू खाकर साधन विहीन होते हुए भी इतनी कम आयु में वे आजादी का अलख जगाते रहे। इन युवकों के पास न तो खाने के लिए कुछ सही साधन था और न ही वस्त्र या कोई सुविधा लेकिन आजादी के ये दीवाने दिन-रात इस चिन्ता में घुलते रहते थे कि ब्रिटिश दासता से आखिर देश को कैसे मुक्ति दिलाई जाए। इन्होंने यह महसूस किया कि आजादी के इस यज्ञ में उचित योगदान करने के लिए आवश्यक है कि कुछ पैसे जुटाये जाएं। इसके लिए उनके मन में विचार आया कि क्यों न सरकार के खजाने को ही लूटा जाए। उन्होंने लखनऊ से लगभग १४ किलोमीटर दूरी पर स्थित काकोरी के पास ९ अगस्त १९२५ को रेलगाड़ी पर हमला करने की योजना बनाई। यूँ तो इसमें सात क्रांतिकारी शामिल हुए थे। लेकिन सबसे पहले राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी ने जंजीर खींची और बाकी अन्य क्रांतिकारी रेलगाड़ी से उतरकर यात्रियों को चेतावनी देते रहे। उन्होंने रूपये से भरी संदूक को नीचे गिराकर तोड़ डाला और उसमें से रूपये निकाल लिए।

यह ब्रिटिश सरकार की मांद में घुसकर उसे सोने से जगाने जैसा था। पुलिस तेजी से हरकत में आयी और एक के बाद एक सभी क्रांतिकारी पकड़े गए तथा उन्हें फांसी की सजा दी गई। इन सभी क्रांतिकारियों में आजादी की ऐसी मस्ती भरी थी कि वे किसी भी अन्य बात की परवाह ही नहीं करते थे। उन्हें जब भी जेल से अदालत ले जाया जाता था तो आजादी के तराने उनके होठों पर थिरकने लगते थे। पं. रामप्रसाद 'बिस्मिल' का एक गीत बहुत ज्यादा प्रसिद्ध था—

'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना बाजु-ए-कातिल में है।"

उनकी इस मस्ती की वजह से जेल अधिकारियों से प्रायः झगड़े हो जाया करते थे। लेकिन उन्हें इसकी कोई परवाह नहीं थी। राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी को सिर्फ दो बातों का शौक था- एक तो पुस्तकें पढ़ना और दूसरा व्यायाम करना। लाहिड़ी को इस बात का पक्का विश्वास था कि उन्हें ज्यादा दिन जेल में सड़ते रहने की नौबत नहीं आयेगी, जल्दी ही उन्हें फांसी दी जाएगी और इस नश्वर शरीर को मुक्ति मिल जाएगी। यों तो काकोरी कांड के अभियुक्तों को दिसम्बर में १९ तारीख को फांसी की सजा दी जानी थी लेकिन राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी को दो दिन पहले यानी १७ दिसम्बर को ही फांसी के तख्ते पर चढ़ा दिया गया। लाहिड़ी ने उस दिन भी रोजाना की ही तरह ५०० दण्ड और ५०० बैठक लगाईं। ईश्वर की पूजा करना तो जेल में नित्यकर्म में शामिल ही था। जब जेलर उन्हें जज के पास ले जा रहा था तो वे बहुत उत्साहित थे। जेलर ने जज को सारी बातें बताईं तो उसने पूछा कि ईश्वर की पूजा की बात तो मेरे समझ में आती है, लेकिन ये ५००-५०० दंड-बैठक की बात में मेरी समझ में बिल्कुल नहीं आती। लाहिड़ी ने जज को जो जवाब दिया वह काबिले-तारीफ है और लाहिड़ी जैसा ही कोई आजादी का दीवाना ऐसी बात कह सकता था। उन्होंने कहा, 'जज साहब, व्यायाम करना मेरा नित्य का नियम रहा है। मैंने व्यायाम करने में कभी नागा नहीं किया। फिर जीवन के आखिरी दिन मृत्यु के भय से मैं अपना नित्य का नियम क्यों छोड़ता ? व्यायाम करने का एक दूसरा कारण भी है और वह यह कि हम हिन्दू लोग पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं। मैंने जीवन के आखिरी दिन भी व्यायाम इसीलिए किया कि तगड़ा हो जाऊं और जब मुझे-दूसरा जन्म मिले तो मैं तगड़ा ही आऊं जिससे ब्रिटिश सरकार के खिलाफ फिर युद्ध कर सकूं।"

ऐसा करारा जवाब जाहिड़ी जैसा देशभक्त ही दे सकता था। फांसी के तख्ते पर चढ़कर लाहिड़ी ने "भारत माता की जय" और 'वंदे मातरम्' के तुमुल घोष से आसपास के वातावरण को गुंजित कर दिया। उस समय राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी की आयु मात्र बाइस वर्ष थी, लेकिन इस अल्पायु में ही इस संसार से कूच कर जाने वाले लाहिड़ी की कोमल काया में फौलादी निश्चय कूट-कूट कर भरा था। बंगाल के पवना जिले के मोहनपुर ग्राम में २३ जून १९२१ में जन्मे राजेन्द्रनाथ को बचपन में ही बंग-भंग की त्रासदी झेलनी पडी थी। उस समय उनकी आयु ९ वर्ष थी। उनकी साहित्यिक अभिरुचि को देखते हुए उन्हें बंग साहित्य परिषद का सचिव चुना गया था। 'बंगवाणी' और 'शंख' जैसी पत्रिकाओं में उनके लेख नियमित रूप से छपते रहते थे। हस्तलिखित मासिक पत्रिका 'अग्रदूत' का सम्पादन भी करते थे जो क्रांतिकारियों की अत्यंत प्रिय पत्रिका थी।

इस तरह उनके प्रारम्भिक जीवन में ही क्रांति के बीज अंकुरित और विकसित हो चुके थे जो बाद में सहयोगी क्रांतिकारियों के सान्निध्य में और अधिक परिपक्व हुए। आज भी तन-मन की इसी तरह की शक्ति से देश- सेवा का व्रत लेने वाले युवकों की भारत माता को आवश्यकता है। □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यज्ञ-वेदी में छिपा है नगर नियोजन का रहस्य

— डा. उदयनारायण उपाध्याय

यदि हम प्राचीन नगर-जीवन एवं नगर नियोजन (टाउन प्लानिंग) के विकास के इतिहास की विवेचना करें तो हमें इस तथ्य को स्वीकार करना पड़ेगा कि नगरों के उद्‌भव तथा निर्माण योजना में "याज्ञिक अनुष्ठानों' का महत्वपूर्ण योगदान रहा है; क्योंकि इन यज्ञस्थलियों की वैज्ञानिक निर्माण पद्धति ने 'मूल स्त्रोत" के रूप में हमारा सदैव मार्ग दर्शन किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन काल में भारतीयों के सम्पूर्ण कार्य-कलाप उनके अन्तःकरण की प्रेरणा "धार्मिक तथा दार्शनिक विचारों" के अनुरूप संपन्न होते थे। परिणामस्वरूप यज्ञ-शालाओं की "स्थापत्य-शैली" भी इन धार्मिक कृत्यों से अछूती नहीं रही और इसने नगर नियोजन की नवीन अवधारणा को जन्म दिया है, जिसमें उत्तरोत्तर तकनीकी एवं सामयिक आवश्यकताओं का समावेश होता गया।

वैदिक काल में यज्ञ, हवन आदि धार्मिक अनुष्ठानों के महत्त्वपूर्ण अंग थे। सम्भवतः इन्हीं धार्मिक कृत्यों से अनुप्राणित मानव-हाथों ने वास्तु (आर्किटेक्चर) को जन्म दिया, जिससे चित्ति एवं वेदिका का प्रादुर्भाव हुआ। ऐसा विदित होता है कि प्रारम्भ में इन यज्ञ वैदिकाओं की रचना मिट्टी, भूसा एवं गोबर के समिश्रण से की जाती थी, परन्तु कालान्तर में इनके निर्माण में कच्ची- पक्की ईंटों का प्रयोग होने लगा था। यहीं से आधुनिक नगर-नियोजन के प्राविधिक विज्ञान का श्री गणेश माना जाता है। इन यज्ञ- वेदिकाओं के निर्माण हेतु एक वेदिका को ईंटों की पांच तहों से बनाया जाता था। आच्छादन सामग्रियों में वंश (बांस) का जाल कायकधनी (रस्सी) प्राणः का उल्लेख आया है। छत पर फूस की कई छतें बिछाई जाती थीं, जिन्हें अर्हण कहते थे (अथर्व. वे. ९/३/३ तथा वैदिक इण्डेक्स भाग-२)। इस संबंध में सुप्रसिद्ध भारतीय इतिहासकार डा. राधा कुमुद मुखर्जी का स्पष्ट मत है कि भारतीयों को स्थापत्य विज्ञान एवं अन्य संबंधित विषयों का ज्ञान यज्ञस्थलियों/यज्ञशालाओं की निर्माण पद्धति से प्राप्त हुआ है। (हिन्दू सिविलाइजेशन, भाग-२)

अतएव हमें देखना है कि वैदिक "यज्ञ" स्थली से किस प्रकार टाउन प्लानिंग की अवधारणा को कार्यान्वित किया गया। शुल्वसूत्रों में यज्ञ वेदिका एवम् यज्ञशाला की निर्माण-पद्धति का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है, जहां 'राजसूय तथा अश्वमघ' यज्ञों का आयोजन होता था। राजसूय यज्ञ एक वर्ष की अवधि तक चलता था। वैदिक साहित्य, रामायण, भारत एवं सूत्र-ग्रन्थों में विभिन्न प्रकार के यज्ञों का उल्लेख है। वास्तव में यज्ञस्थली के भूमि। चयनोपरांत उस स्थल की "भूमि-शोधन-प्रक्रिया" द्वारा शुद्ध किया जाता था। उदाहरण स्वरूप प्रयाग ऐसा प्राचीन स्थल है जहां ब्रह्मा ने प्रथम यज्ञ " भूमि शोधन-संस्कार" के रूप में किया था। तदनन्तर इसकी नगर नियोजन योजना बनी। लाट्यायन श्रोत सूत्र (५.४.१०) से ज्ञात होता है कि थोड़ी अवधि वाले यज्ञों को 'अहीन' तथा लम्बी अवधि के यज्ञों को सत्र कहा जाता था। चूंकि ऐसा 'यज्ञस्थल' जहां एक वर्ष से बारह वर्ष की अवधि तक यज्ञ निरन्तर चलते रहते थे, निश्चित रूप से एक सुनियोजित ढंग से निर्मित करने हेतु उसे नगर नियोजन का प्रारुप दिया जाता था। सूत्र ग्रन्थों एवं जातकों से ज्ञात होता है कि यज्ञस्थली तो भूमि चयन प्रक्रिया समाप्त होने पर वास्तुविद्याचार्य उस स्थान पर 'भूमिशोधन संस्कार सम्पन्न करते थे, जो संभवतः नगर नियोजन की प्राथमिक प्रक्रिया होती थी। डा. वासुदेव शरण अग्रवाल ने भी (पाणिनि कालीन भारत पृष्ठ ४४२ में) इससे अपनी सहमति जताई है। पालि साहित्य में "वास्तुविद्याचार्य" के लिए 'वत्थु-विज्ञाचार्य' एवं जैन साहित्य में "वत्थुपढ़ागार" शब्दावली का प्रयोग किया गया है, जिनके द्वारा यज्ञस्थली का यज्ञोचित मापन कार्य सम्पादित होता था, जो नगर-नियोजन कार्य का प्रारम्भिक स्वरूप था। रामायण के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि श्री राम द्वारा आयोजित अश्वमेध यज्ञ में 'यज्ञवाट' का उल्लेख है, जो सम्भवतः 'यज्ञ-मंडप' की ओर संकेत करता है और यज्ञस्थली के चारों तरफ निर्मित किया जाता था। महाभारत कालीन युधिष्ठिर द्वारा आयोजित राजसूय यज्ञ भी एक विशाल यज्ञशाला में आयोजित था।

ऐसे यज्ञ, जो अधिकांशतः धार्मिक तथा राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं से अनुप्राणित होते थे, उनकी समृद्धि के भी सूत्र थे, जो बारह वर्षों तक चलते थे। अतएव सम्पूर्ण योजना एवं आवश्यक सुविधाएं जो टाऊन प्लानिंग के अनुरूप वांछित हैं, उनका समुचित प्रावधान यज्ञस्थली में स्वतः रहता था। रामायण कालीन 'अश्वमेध यज्ञ, में सम्मिलित होने के लिए आमंत्रित ऋषि, विद्वान, विभिन्न शाखाओं के विशेषज्ञ, गंधर्व, कवि, कलाकार, ज्योतिषी, विधिवेत्ता, संगीत एवं नृत्य के मर्मज्ञ तथा समाज के विशिष्ट समान्य व्यक्तियों के आवास भोजन तथा मनोरंजन आदि की व्यवस्था रहती थी। इस यज्ञ में घोड़ों तथा हाथियों एवं सैनिकों के लिए भी आवासीय व्यवस्था रहती थी—

"वाजीवारांणशालाबूच तथा शय्या गृहाणिच
भट्टानाम महदवासा वैदेशिका निवासिनाम्"
(रामायण १.१३.१२)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यहां रामायण में उल्लिखित 'शय्यागृह' सम्भवतः आधुनिक युग के सुविधा-सम्पन्न 'गेस्ट हाउस' के सदृश रहे होंगे। इन यज्ञस्थलियों में कच्चे तथा पक्के दोनों प्रकार के आवासीय भवनों का निर्माण होता था, जिसमें 'अतिथियों' को स्थान प्रदान किया जाता था। ऐसे आवासों को "अवस्थ" कहा जाता था जहां ब्राह्मण एवं अतिथियों को पूर्ण सम्मान दिया जाता था (अथर्ववेद ९.६. ७ तथा अष्टाध्यायी ८-५-२३) चूंकि ये यज्ञस्थलियां नगरों से बाहर निर्मित की जाती थीं, अतः वहां पर रहनेवाले राजकुमारों, विद्वानों, पुरोहितों, ऋत्विजों, एवं सैनिकों के लिए बाजार, मनोरंजन गृह, सरोवर, पुस्तकालय तथा स्वास्थ्य-केन्द्र की व्यवस्था का समुचित प्रावधान होता था।

पुरातात्विक अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि (सिंधु) नगर से प्राप्त मुहर (सील) पर अंकित 'होता-पोता-मंत्र' निश्चित रूप से याज्ञिक शब्द है। सम्भवतः इसी आधार पर डा. भंडारकर ने इस मुहर को किसी यज्ञस्थली से संबंधित बताया है। इसी प्रकार (सिंधु-सभ्यता के पुरा-स्थलों के आधुनिकतम उत्खननों से कई ऐसे महत्वपूर्ण साक्ष्य प्राप्त हुए हैं, जो याज्ञिक अनुष्ठानों के प्रवचन की पुष्टि करते हैं। वास्तव में इतिहास के विभिन्न कालखंडों में 'राजसूय एवं अश्वमेध' यज्ञों की विशिष्टता परिलक्षित होती है, जो अधिकांशतः राजाओं/ सम्राटों द्वारा अपनी "विजय स्मृति" में आयोजित किए जाते थे- ऐसे अश्वमेध यज्ञों का उल्लेख समसामयिक संस्कृत साहित्य, अभिलेखों तथा मुद्राओं में उपलब्ध है। पुष्यमित्र शुंग को दो अश्वमेध यज्ञकर्त्ता (अश्वमेध याजिनः) कहा गया है। इसी प्रकार गुप्त सम्राट् समुद्रगुप्त ने अपनी विजय-स्मृति को चिरस्थायी करने हेतु एक "अश्व मेध प्रकार" की स्वर्ण मुद्रा का निर्माण कराया, जिसके पृष्ठ-भाग का 'अश्वमेध पराक्रमः छन्द उत्कीर्ण है। इन मुद्राओं की आवश्यकता संभवतः यज्ञोपरान्त ब्राह्मणों की दक्षिणा देने के लिए पड़ी होगी, जो परम्परानुसार सम्पन्न होती थी।

इसके अतिरिक्त यदि हम प्रयाग में आयोजित होने वाले "महाकुम्भ" (प्रति १२ वर्ष में) पर दृष्टिपात करें, तो सहजरूप से यह बोध होता है कि एक माह पर्यन्त चलने वाला यह कुम्भ सुनियोजित ढंग से आयोजित एक "कुम्भ नगर' की भांति दिखलाई पड़ता है। तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि एक वर्ष से लेकर बारह वर्षों की अवधि तक संचालित होने वाले प्राचीन यज्ञों की निर्माण-योजना सभी पक्षों को समावेत करके वास्तुविद्याचार्य द्वारा बनायी जाती थी, जिसका विकसित स्वरूप आधुनिक नगर नियोजन में प्रतिविम्बित होता है। यह कहना सर्वथा औचित्यपूर्ण प्रतीत होता है कि प्राचीन यज्ञस्थलियों की योजना आधुनिक नगर नियोजन से सम्बंधित सभी तकनीकी ज्ञान का मूल-स्रोत एवं जन्मदात्री हमारी प्राचीन भारतीय यज्ञस्थलियां हैं, जिसके महत्वपूर्ण योगदान को नकारा नहीं जा सकता।

—९७, दुर्गापुर, लखनऊ

"जन-ज्ञान" प्रसार अभियान में योगदान ऋषि भक्तों-हिन्दुत्वनिष्ठों से आह्वान

- 'जनज्ञान मासिक' मात्र एक पत्रिका ही नहीं अपितु आन्दोलन है।
- राष्ट्रद्रोही तत्वों के षडयन्त्रों का भण्डाफोड़ और राष्ट्रभक्तों को सुस्पष्ट समर्थन ही हमारी नीति है।
- देव दयानन्द की विचारधारा का प्रचार-प्रसार हमारा संकल्प है।
- "सत्य के अर्थ" का प्रकाश हमारा व्रत है।
- वैदिकसंस्कृति और हिन्दुत्व की मानव-कल्याणकारिणी विचारधारा के हम प्रसारक हैं।
- राष्ट्र की एकता और अखण्डता तथा सुरक्षा के लिए जन-जागरण ही हमारा कार्यक्रम है।
- "जनज्ञान" व्यवसायिक नहीं एक वैचारिक मासिक पत्रिका है। वार्षिक शुल्क ८० रुपये है। आजीवन ५०१ रु० है।
- **अपने प्रतिष्ठान का विज्ञापन देकर हमारा सहयोग करें।**

आपका सहयोग ही जनज्ञान का सम्बल है। हमारा आप सब कृपालु पाठकों से आह्वान है कि राष्ट्रनिर्माण के इस अनुष्ठान को गतिमान रखने के लिए अपने सहयोग का हाथ और बढ़ायें। जनज्ञान को घर-घर में पहुँचाकर वैदिक संस्कृति और हिन्दुत्वनिष्ठा का प्रकाश फैलाएं।

अपने नगर में जनज्ञान की एजेन्सी स्थापित करें। नियम पत्र मंगायें।

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान, २२८६ आर्य समाज मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-११०००५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्व-राज सु-राजः स्व-भाषा और सु-भाषा

— विश्वम्भरप्रसाद गुप्त-"वन्धु"

'स्व' और 'सु' उपसर्गों का टकराव इतिहास में मानव-सभ्यता के साथ ही उत्पन्न हुआ है। इसे 'शासन' शब्द में जोड़कर देखिए। जनतंत्र विश्व में सबसे अच्छी शासन -पद्धति समझी जाती है, जिसकी परिभाषा 'जनता के लिए जनता द्वारा, जनता का शासन' सभी विद्वानों द्वारा मान्य है और जनता का अर्थ भी अधिसंख्य जन-समाज समझा जाता है, जो चुनावों का आधार होता है। फिर समाज के अधिकार सम्पन्न वर्ग में मानव की स्वाभाविक दुर्वलता के कारण 'सु' उपसर्ग (सुशासन अर्थात्, अच्छा शासन चाहे वह किसी का हो अपना या पराया) प्रिय होता रहा, क्योंकि इसमें अल्पशासक वर्ग शासितों पर कर-भार डालकर (और प्रायः उनका शोषण तक करके) सम्पन्न और सुविधा-भोगी जीवन जीता रहा है। किन्तु अधिकार-वंचित वर्ग में, जो प्रायः अधिसंख्य श्रमजीवी ही होता है, मानव के स्वाभाविक स्वाभिमान के कारण 'स्व' उपसर्ग (स्वशासन अर्थात् अपना शासन चाहे वह अच्छा हो या बुरा) प्रिय और वंदनीय होता रहा है।

इसी क्रम में सुशासन के लिए स्वशासन की बलि चढ़ाने तक की नौबत आ जाती है और कहा जाता है कि 'कुराज' के बजाय 'सुराज' की स्थापना करने के लिए किसी भी राजा का स्वागत होना चाहिए, फिर चाहे वह विदेशी ही क्यों न हो। ब्रिटिश साम्राज्यवाद या पूंजीवाद भी जब भारत में पूरी तरह जम गया तो वही शासन 'सुराज' कहकर जनता में लोकप्रिय बनाया गया और स्वभाषा की बलि देकर हममें भारत, भारतीयता और भारतीय संस्कृति से काटकर विदेशी भाषा अंग्रेजी की ललक पैदा की गई। कहा गया कि यही रोजी-रोटी, समृद्धि और अधिकार-सम्पन्नता प्रदान करने वाली 'सुभाषा' है। सुभाषा की यही मिथ्या कसौटी लोकप्रिय करके अंग्रेज़ी का चस्का बढ़ाया गया, जनता को बुद्धू बनाया गया और अंग्रेजों के चले जाने के बाद भी अंग्रेज़ी की गुलामी बरकरार रखी गई। यही वह कुटिल चाल थी। गहरा षडयंत्र था, उन चंद लोगों के स्वार्थ-साधन के लिए जो अंग्रेजी की अनिवार्यता का आश्रय लेकर अधिकार और सत्ता अपने अल्प वर्ग के हाथों में ही बनाए रखना चाहते हैं।

ऋषि की दिव्य दृष्टि :

यह कुटिल चाल पहचानने में उन्नीसवीं सदी के तमाम देश-भक्त, विद्वान्, लेखक, चिंतक, समाज-सुधारक विफल रहे और अंग्रेज़ी राज को, 'सुराज' कहकर प्रशंसा करते रहे। किसी ने यह ध्यान नहीं दिया कि मिथ्या कसौटी के कारण 'सु' के लिए 'स्व' की बलि चढ़ा देने से तथाकथित 'सुराज' तानाशाही का रूप ले सकता है। बस अपवाद थे तो केवल एक महर्षि दयानंद जिन्होंने वेद-ज्ञान के आधार पर डंके की चोट पर कहा कि "स्वदेशी राज कितना भी बुरा हो, वह अच्छे-से-अच्छे विदेशी राज से अच्छा ही है।" इस प्रकार 'स्वराज' को उस छद्म 'सुराज' पर वरीयता देकर उन्होंने षड्यंत्र का भंडा-फोड़ दिया।

महर्षि दयानंद ने न केवल स्वदेशी राज्य पर जोर दिया वरन् स्वदेशी भाषा-भूषा और स्वदेशी शिक्षा तक का खुलकर प्रचार किया। इस क्रांतिकारी आह्वान पर ब्रिटिश सरकार ने तो उनको सबसे खतरनाक सन्यासी घोषित किया, किन्तु सभी राष्ट्र-भक्त चिंतक और समाज-सुधारक उनके अनुयायी बने और स्वतंत्रता सेनानी 'होम-रूल' के बजाय पूर्ण स्वराज की मांग करने लगे। स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में सबसे अधिक महत्वपूर्ण यह स्वदेशी आंदोलन ही हो गया जिसकी पताका योगिराज अरविंद और फिर महात्मा गांधी ने फहराई थी। गांधी जी का सपना साकार करने में सभी स्वतंत्रता सेनानी एकजुट हो गए। फलस्वरूप आज़ादी मिली किन्तु अधूरी ही। भाषायी आज़ादी नहीं मिली। उसे भी प्राप्त करके अधूरी आज़ादी को पूर्ण स्वराज का रूप अभी देना है। यह एक पवित्र दायित्व है जो आप सब देश-भक्त शिक्षकों-अध्यापकों- प्राध्यापकों के सहयोग से ही पूरा हो सकता है।

हमारी स्वभाषा हिन्दी तो सुभाषा भी है :

'स्व' और 'सु' उपसर्गों में चाहे जितना टकराव, वर्ग-संघर्ष, विरोध और प्रतिकूलता हो, भारतीय भाषा के साथ मिलकर दोनों एक हो जाते हैं : यानी हमारी स्वभाषा, भारतीय भाषा हिन्दी ही सुभाषा (श्रेष्ठतम भाषा) भी है। संस्कृत संसार की सभी भाषाओं की जननी है और हिन्दी अत्यंत मधुर, वैज्ञानिक, पूर्णतया परिष्कृत (संस्कार की हुई अतएव श्रेष्ठ भाषा), सर्वथा सक्षम और पूर्णतः परिपूर्ण जीवंत भाषा है, ऐसा सभी श्रेष्ठ निष्पक्ष भाषा-विद् मानते हैं। यह सभी मनीषियों द्वारा पारस्परिक व्यवहार की, आपस में जुड़ने की भाषा के रूप में विकसित होकर एक महान् राष्ट्र भारत 'राष्ट्रभाषा' राजभाषा, योजक-भाषा, सम्पर्क-भाषा के आसन पर प्रतिष्ठापित है। यह संस्कृत से भी आवश्यकतानुसार सुधाकर परिपुष्ट हुई है। यह सभी प्रकार से सुभाषा कही जाने की अधिकारिणी है।

हिन्दी सुभाषा ही नहीं, विश्व की श्रेष्ठतम भाषा भी है। एक विद्वान् डा. जयंतीप्रसाद नौटियाल कहते हैं कि संसार में सबसे आधिक समझी जाने वाली भाषा हिन्दी है। यह संसार भर में उच्च स्तर तक पढ़ाई जाती है और विश्व भाषा बनने के मार्ग पर अग्रसर है क्योंकि यह जोड़ने वाली भाषा है। श्रेष्ठता का सबसे बड़ा प्रमाण और क्या होगा। इसी एक कारण से हमें अंग्रेजी नहीं, हिन्दी अपनाकर गौरवान्वित होना चाहिए। इसका प्रयोग करने में हमें गर्व अनुभव करना चाहिए; अंग्रेजी के अनावश्यक आकर्षण से बचना चाहिए। — १५४, लोक बिहार, दिल्ली

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अमर आग

— अटल विहारी वाजपेयी

कोटि कोटि आकुल हृदयों में
सुलग रही है जो चिनगारी,
अमर आग है अमर आग है।
उत्तर दिश में अजित दुर्ग सा,
जागरूक प्रहरी युग-युग का
मूर्तिमन्त स्थैर्य, धीरता की प्रतिमा सा
अटल अडिग नगरपति विशाल है।
नभ की छाती को छूता सा,
कीर्ति पुंज सा,
दिव्य दीपिका के प्रकाश में
झिलमिल झिलमिल
ज्योतिर्मय मां पूज्य भाल है।
कौन कह रहा है उसे हिमालय ?
वह तो हिमावृत्ति ज्वालागिरि,
अणु-अणु कण-कण गह्वर-कन्दर,
गुंजित ध्वनित कर रहा है अब तक,
डिम-डिम डमरू का भैरव स्वर।
गौरीशंकर के गिरि गह्वर,
शैल शिखर निर्झर, वन उपवन,
तरू तृण दीपित।
शंकर के तीसरे नयन की
प्रलय वह्नि में जगमग ज्योतित।
जिसको छूकर क्षण भर ही में,
काम रह गया था मुट्ठी भर।
यही आग ले प्रतिदिन प्राची,
अपना अरूण सुहाग सजाती,
और प्रखर दिनकर की, कंचन काया,
इसी आग में पल कर,
निशि-दिन जल, प्रति पल,
सृष्टि प्रलय पर्यन्त तमावृत,
जगती को रास्ता दिखाती
वही आग ले हिन्द महासागर की,
छाती है धधकाती।
लहर-लहर प्रज्वाल लपट बन,
पूर्व पश्चिमी घाटी को छू,
सदियों की हतभाग्य निशा में,
सोए शिलाखंड सुलगाती
नयन-नयन में यही आग ले,
कण्ठ-कण्ठ में प्रलय राग ले,
अब तक हिन्दुस्थान ज्यिा है।
इसी आग की दिव्य विभा ले,
सप्त सिंधु के कल कछार पर,
सुर-सरिता की धवल धार पर,
तीर-तटों पर, पर्णकुटी में पर्णासन पर,
कोटि-कोटि ऋषियों मुनियों ने,
दिव्य ज्ञान का सोम पिया था।
जिसका कुछ उच्छिष्ट मात्र,
बर्बर पश्चिम ने दया दान सा,
निज जीवन को सफल मान कर,
कर पसार कर,
सिर, आंखों पर धार लिया था।
वेद-वेद के मंत्र-मंत्र की पंक्ति-पंक्ति में
पंक्ति-पंक्ति के शब्द-शब्द में,
शब्द-शब्द के अक्षर स्वर में,
द्रिव्य ज्ञान आलोक प्रदीपित,
सत्यं, शिवं सुन्दरं शोभित,
कपिल, कणादि और जैमिन की,
स्वानुभूति का अमर प्रकाशन,
विशद विवेचन, प्रत्यालोचन,
ब्रह्म जगत माया का दर्शन,
कोटि-कोटि कण्ठों में गूंजा,
जो अति मंगल स्वर्गिक स्वर,
अमर राग है, अमर आग है।
यही आग सरयू के तट पर,
दशरथ जी के राजमहल में,
घन-समूह में चल चपला सी,
प्रगट हुई, प्रज्वलित हुई थी।
दैव्य दानवों के अधर्म से,
पीड़ित पुण्यभूमि का जन-जन,
शंकित मन-मन त्रसित विप्र,
आकुल मुनिवर गण,
बोल रही अधर्म की तूती,
दुस्तर हुआ धर्म का पालन,
तब स्वदेश-रक्षार्थ देश का,
सोया क्षत्रियत्व जागा था
राम-रूप में प्रकट हुई यह ज्वाला,
जिसने असुर जलाए देश बचाया
बाल्मीकि ने जिसको गाया।
चकाचौंध दुनिया ने देखी,
सीता के सतीत्व की ज्वाला,
विश्व चकित रह गया देख कर,
नारी की रक्षा निमित्ति जब,
नर क्या वानर ने भी अपना,
महाकाल की वेदी पर,
अगणित हो कर,
सस्मित हर्षित शीश चढ़ाया।
यही आग प्रज्वलित हुई थी,
यमुना की आकुल आहों से,
अत्याचार प्रपीड़ित ब्रज के
अश्रु सिंधु में बड़वानल बन।
कौन सह सका मां का क्रंदन ?
दीन देवकी ने कारा में,
सुलगाई थी यही आग जो,
कृष्ण रूप में फूट पड़ी थी।
जिसको छू कर मां के कर की कड़ियाँ,
पग की लड़ियां चट-चट टूट पड़ी थीं,
पांचजन्य का भैरव स्वर सुन
तड़प उठा था क्रुद्ध सुदर्शन
अर्जुन का गण्डीव, भीम की गदा,
धर्म का धर्म डट गया,
अमर भूमि में, समर भूमि में
धर्म भूमि में, कर्म भूमि में,
गूंज उठी गीता की वाणी,
मलमय जन-जन कल्याणी,
अपढ़ अजान विश्व ने पाई
शीश झुका कर एक धरोहर,
कौन दार्शनिक दे पाया है,
अब तक ऐसा जीवन दर्शन ?
कालिंदी के कल कछार पर,
कृष्ण कण्ठ से गूंजा जो स्वर
अमर राग है, अमर राग है,
कोटि-कोटि आकुल हृदयों में,
सुलग रही है जो चिनगारी,
अमर आग है, अमर आग है।

— प्रधान मंत्री, भारत सरकार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शिक्षा के विषय में नवीन अवधारणा

यहां प्रस्तुत है 'श्रीमाँ 'श्री अरविन्दाश्रम पांडिचेरी की पुरातन भारतीय शिक्षण पर आधारित शिक्षा के विषय में नवीन अवधारणा इस लेख में प्रस्तुत है।

मन की नमनीयता और विशालता बढ़ाने के लिये हमें केवल अनेक और बहुविध विषयों के अध्ययन की ओर ही नहीं, बल्कि, विशेषकर, एक ही विषय पर भिन्न दिशाओं से विचार करने की ओर ध्यान देना चाहिये। ऐसा करने से बालक व्यवहारिक तरीके से यह समझ जाएगा कि एक ही बौद्धिक समस्या का सामना, पिटारा तथा समाधान करने के बहुतेरे रास्ते हैं। इस तरह इसका मस्तिष्क सब प्रकार की कठोरताओं से मुक्त हो जाएगा और, साथ ही साथ, उसकी चिंतनशक्ति अधिक समृद्ध तथा नमनीय हो जायगी और कहीं अधिक बहुमुख एवं व्यापक समन्वय के लिये तैयार हो जायगी। इस तरीके से बच्चे में यह भाव भी भरा जा सकता है कि मानसिकज्ञान अत्यंत अपेक्षित वस्तु है और फिर धीरे-धीरे ज्ञान के एक अधिक सच्चे सद्गम के लिये उसमें अभीप्सा जगायी जा सकती है।

निःसंदेह जैसे-जैसे बच्चा अपने अध्ययन में अग्रसर होता है और उम्र में बड़ा होता है, वैसे-वैसे उसका मन भी परिपक्व होता है और सामान्य भावनाओं को ग्रहण करने में अधिकाधिक सक्षम होता है; और फिर, इसके साथ-साथ सदैव निश्चयात्मक भावकी आवश्यकता उत्पन्न हो जाती है, एक ज्ञानकी आवश्यकता महसूस होती है जो इसका अधिक स्थायी हो कि उसे आधार बनाकर एक मानसिक रचना तैयार की जा सके—ऐसी रचना तैयार की जा सके जो मस्तिष्क में एकत्र हुई सभी भिन्न और अस्त-व्यस्त और बहुधा विरोधी भावनाओं को सुव्यवस्थित तथा क्रमबद्ध करने दे। निश्चय ही, यदि हम अपने विचारों की अस्तव्यस्तता से बचना चाहें तो उन्हें इस प्रकार क्रमबद्ध करना बहुत ही आवश्यक है। सभी विरोधी चीजें प्रतिपूरक चीजों में रूपांतरित हो सकती हैं; पर उसके लिये हमें एक ऐसी उच्चतर भावना को ढूंढ़ निकालना होगा जो उन्हें सुसामंजस्य बनाने में समर्थ हो। यह सदा ही अच्छा हैं कि सभी समस्याओं पर संभाव्य सभी दृष्टिकोणों से विचार किया जाय ताकि पक्षपात और संकीर्णता से बचा जाय; पर अगर हमारे विचार को सक्रिय और सृष्टिक्षम होना हो तो उसे, प्रत्येक क्षेत्र में, गृहीत सभी दृष्टिकोणों का एक स्वाभाविक और युक्तिसंगत समन्वय होना चाहिये।

अगर तुम्हें अपने सभी विचारों को एक साथ शक्तिशाली तथा निर्माणकारी शक्ति का रूप देना हो तो तुम्हें अपने मासिक समन्वयकी केन्द्रीय भावना को चुनने में बहुत सावधानी रखनी चाहिये ; क्योंकि उसके ऊपर तुम्हारे समन्वय का मूल्य निर्भर करेगा। जितनी ऊंची और विशाल तुम्हारी केन्द्रीय भावना होगी और जितनी ही अधिक वह विश्वसनीय होगी, काल और देश से ऊपर उठी हुई होगी, उतनी ही अधिकऔर जटिल भावनाओं, धारणाओं और विचारों को वह सुव्यवस्थित और सुसमंजस बनाने में समर्थ होगी।

कहने की आवश्यकता नहीं किव्यवस्थित करने का कार्य तुरंत पूरा-का-पूरा नहीं किया जा सकता। मनको अगर उसे अपने बल और यौवन को बनाये रखना है तो, नित्य-निरंतर उत्पन्न होना होगा, सभी नये-नये ज्ञानों के प्रकाश में अपनी मान्यताओं को सुधारते रहना होगा, नयी मान्यताओं को शामिल करने के लिये अपने क्षेत्र को बढ़ाना होगा और इसके लिये अपने विचारों को फिर से श्रेणीबद्ध और सुसंगठित करना होगा ताकि उनमें से प्रत्येक विचारको, दूसरों के साथ उनके संबंधको देखते हुएं, अपना समुचित स्थान प्राप्त हो और इस तरह समूचा विचार-समुदाय सुसमंजस और सुव्यवस्थित हो जाय।

परंतु हमने अबतक जो कुछ कहा है, वह सब चिंतनशील मनसे संबध रखता है, उस मनसे संबंध रखता है जो ज्ञान प्राप्त करता है। पर ज्ञानार्जन मानसिक कार्य का केवल एक अंग है; कम से कम इतना ही प्रधान दूसरा अंग है रचनात्मक वृत्ति, रूप देखने की क्षमता और इसलिये कार्य के लिये तैयारी करने की क्षमता। मानसिक कार्य के इस अंशको, यद्यपि यह है बहुत ही महत्त्वपूर्ण, बहुत कम लोगों ने ही विशेष अध्ययन या अनुशीलन को विषय बनाया है। केवल वही लोग जो किसी कारणवश अपनी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ानसिकक्रियाओंपर कठोर नियंत्रण करना चाहते हैं, इस चनात्मक वृत्तिका निरीक्षण और अनुशासन करने की ात सोचते हैं, और फिर, जब वे इसके लिये प्रयास करने ागते हैं तब ऐसी महान् कठिनाइयां उनके सामने खड़ी ो जाती हैं जो अलंघ्य प्रतीत होती हैं।

फिर भी मनकी इस रचनात्मक क्रिया के ऊपर ियम स्थापित करना आत्म-शिक्षण का अत्यंत महत्त्वपूर्ण ंग है; यहां तक कहा जा सकता है किइसके बिना किसी ी प्रकार का मानसिक प्रभुत्व पाना संभव नहीं। अध्ययनका ाहांतक संबंध है, सभी विचार स्वीकार करने योग्य हैं और न सबको उस समन्वय के अंदर लेआना चाहिये जिसका ार्य ही होगा अधिकाधिक समृद्ध और बहुविध होना; पर, ार्यका जहांतक संबंध है, बात इससे एकदम भिन्न होगी। जेन बिचारों को हम स्वीकार करेंगे उन्हें कार्य रूप से रिणत करने के लिये हमें उनपर कठोर संयम स्थापित रना होगा। हमारे मानसिक समन्वय के आधारभूत केंद्रीय वेचारका साधारण झुकाव जिस ओर हो, उसी के साथ मेल ाने वाली भावनाओं को हमें कार्य रूप में अभिव्यक्त होने ना चाहिये। इसका अर्थ होता है कि हमारी मानसिक ेतना में जो भी विचार प्रवेश करे। उसे हमें केंद्रीय भावना ़ सामने ला रखना चाहिये। और अवतक एकत्र किये हुए वचारों के बीच में अगर उस विचार को अपना समुचित थान प्राप्त हो जाय तो उसे समन्वय के अंदर शामिल रना चाहिये ; अगर उसे अपना समुचित स्थान प्राप्त न ो तो उसे बाहर फेंकदेना चाहिये ताकि वह कार्य के ऊपर ोई भी प्रभाव न डाल सके। मानसिक पवित्रीकरण का यह ार्य खूब नियमित रूप से करना चाहिये और तभी अपने ार्यों के ऊपर हमारा पूर्ण अधिकार सुरक्षित रह कता है।

इस उद्देश्य की सिद्धि के लिये उत्तम यह है कि ोड़ा-सा समय दैनिक रूप से नियत रखा जाय तब हम पने विचारों को चुपचाप देखें और अपने समन्वय के ीतर यथास्थान सजाकर रखें। एक बार जहां इस बात ी आदत पड़ गयी कि फिर तुम अपने विचारों के ऊपर, ार्यादिके भीतर भी, संयम बनाये रख सकोगे और इस ोग्य हो जाओगे कि जो कार्य तुम कर रहे हो, उसके लये जो विचार उपयोगी नहीं है, उन्हें सामने न आने ा। विशेषकर, यदि सजगता और एकाग्रता की शक्ति को रंतर बढ़ाया जाय तो, हमारी ग्राह्य सक्रिय चेतना केवल उन्हीं विचारों को आने देगी जिनकी आवश्य कता होगी। और तब वे सब के सब अधिक शक्ति -सम्पंन्न और फलोत्पादक हो जायेंगे। और अगर, एकाग्रता तीव्र हो जानेपर, यह आवश्यक हो कि चिंतन बिलकुल किया ही न जाय तो समस्त मानसिक प्रकंपन बंद करके प्रायः पूर्ण निश्चल-नीरवता प्राप्त की जा सकती है। इस निश्चल-नीरवता के अंदर मनुष्य धीरे-धीरे उच्चतर मानस क्षेत्रों की ओर खुल सकता है और वहां से जो अंतः प्रेरणाएं आती हैं उन्हें स्मरण रखना सीख सकता है।

परंतु इस अवस्था के प्राप्त होने से पहले भी निश्चल-नीरवता अपने-आपमें अत्यंत उपयोगी चीज है। जिन लोगों का मन कुछ विकसित और क्रियाशील होता है उनमें से अधिकांश का मन कभी शांत नहीं रहता। दिन के समय, उसकी क्रियापर एक प्रकार का संयम रहता है; पर रात के समय, शरीर की निद्रा की अवस्था में, जाग्रत 'अवस्था के संयम के प्रायः संपूर्ण रूप में हट जाने पर मन अत्यधिक क्रियाशील हो जाता है। और उसकी सारी क्रियाएं बहुधा असंवद्ध होती हैं। इसके कारण मनपर एक प्रकार का जोर पड़ता है जो अंत में थकावट ले आता है और मानसिक शक्तियों को कम कर देता है।

असली बात यह है कि मानव सत्ता के अन्य सभी भागों के तरह मनको भी विश्राम की आवश्यकता होती है और उसे यह विश्राम तवतक नहीं मिल सकता जवतक कि हम यह न जान लें यह दिया कैसे जाता हैं। अपने मनको विश्राम देने की कला एक ऐसी चीज है जो हमें अवश्य आयत्त करनी चाहिये। मनको विश्राम देने का एक तरीका है मनके कार्य को बदलते रहना; जहांतक मानसिक वृत्तियों का संबंध है, निश्चल-नीरवता की शांति में कुछ मिनट बिताने का अर्थ होता है घंटों सोने की अपेक्षा कहीं अधिक लाभदायी विश्राम लेना।

जब हम अपनी इच्छानुसार मन को निश्चल-नीरव बनाना और ग्रहणशील निश्चल-नीरवता में उसे एकाग्र करना सीख जायेंगे तब ऐसी कोई समस्या नहीं रह जायगी जिसे हम हल न कर सकें, कोई ऐसी मानसिक कठिनाई नहीं रह जायगी जिसका कोई समाधान न प्राप्त हो जाय। जब विचार चंचल होता है तब वह अस्त-व्यस्त और शक्तिहीन हो जाता है; सजग शांति के अन्दर ही ज्योति प्रकट हो सकती है और मनुष्य की क्षमताओं के नवीन क्षेत्रों को उन्मुख कर सकती है। (बुलटिन, नवम्बर १९५१)

(— शेष अगले अंक में)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कशमीर विलय— समस्या एवं समाधान

—श्यामलाल शर्मा, मुख्य अभियन्ता (से. नि.)

१९४७ में ब्रिटिश पार्लियामेंट द्वारा भारतीय स्वतन्त्रता अधिनियम पारित किया गया जिसके अन्तर्गत रियासतों के शासकों को स्वतन्त्रता दी गई कि भारत या पाकिस्तान में इच्छानुसार विलय कर सकते हैं। अथवा चाहें तो अपनी स्वतंत्र सत्ता रख सकते हैं। जिसके कारण एक जटिल समस्या उत्पन्न हो गई और देश के अनेक खंड होने की सम्भावना पैदा हो ही गई तथा पाकिस्तान को भारत के अन्दर स्थित रियासतों को विलय हेतु प्रलोभन की कूटनीति चलाने का अवसर भी मिला। इस परिस्थिति से निपटने के लिए कुछ सूत्रों के अनुसार जिन्ना के सामने एक प्रस्ताव रखा गया कि जिसकी रियासत में जनता (बहुसंख्यक) शासक के धर्म ही नहीं है वहां विलय केवल जनमत के आधार पर ही तय किया जाये, कोई भी देशी शासक का अनुरोध न माने। यह प्रस्ताव जिन्ना ने ठुकरा दिया क्योंकि उनके लिए निम्नलिखित समस्यायें थीं।

१. कशमीर में यद्यपि मुस्लिम बहुमत था एवं वहां का शासक हिन्दू था परन्तु जनमत का परिणाम शेख अब्दुल्ला के रहते हुए पाकिस्तान के विरूद्ध जाने का सन्देह था, क्योंकि शेख अब्दुल्ला की जो महत्त्वाकांक्षा थी वह पाकिस्तान में विलय से ध्वस्त हो जाती एवं भारत विलय से नेहरु जी की निकटता में उन्हें उसके पूरा होने की प्रबल आशा थी।

२. भोपाल एवं हैदराबाद के मुस्लिम शासक जो पाकिस्तान में विलय के स्वप्न देख रहे थे एवं जिन्ना की दृष्टि उन पर टिकी थी, के ध्वस्त हो जाने का पूरा डर था। यही समस्या जूनागढ़ की थी। जहां के मुस्लिम शासक ने पाकिस्तान में विलय का निर्णय भी ले लिया था किन्तु सरदार पटेल के आगे उसकी चाल असफल ही नहीं हुई वरन उसे अचानक स्वयं के हित में पाकिस्तान को पलायन भी करना पड़ा था। कांग्रेस के इस प्रस्ताव को आधार बनाकर जो प्रक्रिया स्वरूप बातचीत की गई वह इस प्रकार थी।

१. लार्ड माउन्टवेटन के सुझाव पर जिन्ना ने दिनांक १ नवम्बर १९४७ को जो जल्दबाजीमें टिप्पणी की उससे बातचीत टूट गई। २७.१०.१९४७ को यद्यपि बी. पी. मेनन की मुलाकात पाकिस्तान के केबिनेट सचिव से हुई और जनमत के आधार पर सहमति हुई थी तथा किसी भी सरकार को ऐसे मामलों में विलय स्वीकार नहीं करना था। पाकिस्तान सितम्बर १९४७ से ही कश्मीर में सेना की निगरानी में कबाइलियों की घुसपैठ करा रहा था एवं हिन्दू-मुस्लिम दंगे भी आयोजित करा रहा था। २२ अक्तूबर १९४७ को पाकिस्तान ने पूरी तरह घाटी पर आक्रमण कर दिया था।

२. इस दशा में भारत ने २६ अक्तूबर १९४७ को महाराजा के भारत में विलय के प्रस्ताव को फिर भी सशर्त स्वीकार किया। लार्ड माउन्टबेटन ने विलय स्वीकार करते हुए स्पष्ट तौर पर लिखा था कि पाकिस्तान द्वारा किये गये आक्रमण को विफल करने के बाद जनता की राय ली जायेगी। यह अपनी ओर से दिया गया भारत का एकतरफा आवांछित वायदा आज तक भारत के लिए सिरदर्द है।

३. जिन्ना प्रारम्भ में इस पाकिस्तान के आक्रमण को नकारते रहे परन्तु माउन्टवेटन द्वारा इस आक्रमण के बारे में जिन्ना से पूछने पर उन्होंने प्रतिक्रियात्मक उत्तर देते हुए कहा "मैं इसको २४ घन्टे में बन्द करवा दूंगा।" इस उत्तर से स्पष्ट था कि कबाइलियों पर जिन्ना का कितना प्रभाव था।

काश्मीर युद्ध का अन्तः

२७ अक्तूबर १९४७ से भारत द्वारा प्रतिक्रियात्मक सैनिक कार्यवाही अति कठिन परिस्थितियों में की गयी, आरम्भ में भारतीय वायु सेना केविमानों से फौजी टुकड़ियां भेजी गई और वाद में १ नवम्बर १९४७ को सरदार पटेल एवं रक्षामंत्री सरदार बलदेवसिंह द्वारा श्रीनगर जाकर वस्तुस्थिति की स्वयं जांच कर निष्कर्ष वश भारत में विमान सुविधाओं को रोक कर सैनिकों एवं सामग्री का कश्मीर में पहुंचाना आरम्भ किया तथा कठिन परिस्थितियों से उवर कर पाकिस्तानी आक्रमण की रीढ़ तोड़कर आक्रमणकारियों को घाटी से खदेड़ना आरम्भ हो गया। दिसम्बर १९४७ तक अधिकतर घाटी को स्वतंत्र करा लिया गया। यद्यपि भारतीय सेना के आरम्भिक अभियान में कितने ही जवानों एवं अधिकारियों की बलि देनी पड़ी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इन वीर हुतात्माओं में ब्रिग्रेडियर राजेन्द्रसिंह, ले कर्नल रंजीतराय, मेजर सोमनाथ शर्मा, ब्रिगेडियर उस्मान शामिल थे। १ नवम्बर १९४८ को जब भारतीय सेना लगभग एक सप्ताह में ही पूरे कश्मीर को आक्रमणकारियों से खाली कराने की स्थिति में थी और सरदार पटेल ने पाकिस्तान प्रस्ताव जो अब बातचीत के लिए था अस्वीकार कर दिया था। नेहरू जी ने माउन्टबेटेन के परामर्श से संयुक्तराष्ट्र संघ में पाकिस्तान के विरूद्ध शिकायत दर्ज करते हुए युद्ध बन्द करने का आदेश कर दिया। यह निर्णय न केवल गलत ही था वरन आज तक कशमीर समस्या का कारण बना हुआ है। कोई भी देश (राष्ट्र) इस विजयी दशा में युद्ध बन्द करके संयुक्त राष्ट्रसंघ में जाने की सोच भी नहीं सकता था। कश्मीर का लगभग एक तिहाई भाग आज भी पाकिस्तान के अधिकार में है। नेहरू जी ने न केवल उपरोक्त गलती की वरन् एक तरफा अपनी ओर से पटेल की अवहेलना करके जनमत संग्रह कराने का ऐलान भी कर दिया। कैसी बिडम्बना है कि इस महापुरूष ने अपने निजी सिद्धान्तों के अन्तर्गत वास्तविकता को नकार कर देश के भविष्य केसाथ कितना भयंकर अन्याय किया जिसका परिणाम आज भी इस देश को अपने नौजवानों के बलिदान एवं अर्थ-व्यवस्था की अपार हानि के रूप में भुगतना पड़ रहा है।

धारा ३७० का परिणाम :

महाराज काश्मीर श्री हरिसिंह ने काश्मीर का भारत में विलय २६ अक्तूबर १९४७ को पूर्णरूप से कर दिया था किन्तु नेहरू ने महाराजा को काश्मीर छोड़ने के लिए शेख अब्दुल्ला की जिद पर मजबूर कर दिया। इस तरह कश्मीर का शासन शेख अब्दुल्ला ने अपनी शर्तों पर नेहरू की कृपा से सम्भाला। काश्मीर को विशेष दर्जा देने के लिए शेख अब्दुल्ला के दबाब में एक अलग विभाग के रूप में श्री गोपाल स्वामी आयंगर को उत्तरदायी बनाकर नेहरू जीने अपने आधीन कर दिया। शेख अब्दुल्ला के इशारे पर इन दोनों ने ही धारा-३०६ (ए) का प्रावधान रखा। कांग्रेस के आज के बड़बोले नेताओं को यह बताना उचित ही होगा कि उस समय कांग्रेस की कार्य-समिति ने इस प्रस्ताव को पूर्णतः निरस्त कर दिया था। तब नेहरू जी विदेश में थे और सरदार पटेल उपरोक्त बैठक में थे भी नहीं। गोपाल स्वामी आयंगर को उपरोक्त बैठक में वरिष्ठ कांग्रेसियों द्वारा बुरी तरह लताड़ा भी गया था अगले दिन सरदार पटेल की अनुनय बिनय की गयी तब उन्होंने अर्न्तराष्ट्रीय परिस्थितियों का हवाला देकर वरिष्ठ कांग्रेसी नेताओं को नेहरू जी की खातिर उनकी अनुपस्थिति में मनाया। इस पर भी शेख अब्दुल्ला कशमीर पहुंचते ही धारा ३०६ (ए) को मानने में मुकर गये। श्री आयंगर आवश्यक परिवर्तन करके पुनः सरदार पटेल से मिले परन्तु सरदार पटेल ने न केवल संशोधित धारा को अस्वीकार ही किया वरन श्री आयंगर को लिखकर बता भी दिया कि शेख अब्दुल्ला की क्या इच्छा है तथा उन पर विश्वास नहीं करना चाहिए क्योंकि जब भी उन्हें किसी निर्णय से मुकरना होता है वह कशमीरी जनता के हित के राग अलापने लगते हैं। बात में यह प्रावधान धारा ३७० के रूप में संविधान में निहित किया गया। इस विषय में निम्नलिखित तथ्य भी देखने योग्य हैं।

१. राजमोहन गांधी के अनुसार सरदार पटेल का यह कहना कि 'एक दिन जवाहर रोयेगा'।

२. २४ जुलाई १९५२ को सरदार पटेल की मृत्यु के बाद सदन में नेहरू का कहना था कि 'अब तक काश्मीर को पटेल ही देख रहे थे और उन्हीं की देख-रेख में धारा-३०६ (ए) ३७० का प्रारूप तैयार किया गया था।

३. श्री शंकरन ने अपनी पुस्तक में स्पष्टतः लिखा है कि शेख अब्दुल्ला की देखरेख में नेहरू जी ने धारा ३०६ (ए) ३७० का प्रारूप तैयार किया था। इस पुस्तक में यह भी लिखा है कि 'आयंगर द्वारा नेहरु जी के असत्य कथन पर चुप रहना सरदार पटेल की मृत्यु के बाद उनके साथ विश्वासघात था।

४. लोक-सभा में बाद में पूछे जाने पर कि संविधान की धारा ३७० को वह किस रूप में देखते हैं और मानते हैं, के उत्तर में नेहरू ने कहा था कि 'काश्मीर का पूर्ण रूप से भारत में विलय हो चुका है' जब श्री कामथ ने 'पूर्ण विलय शब्दावली पर उन्हें टोका तो नेहय जी का उत्तर था 'गत वर्षों में बहुत सारे केन्द्रीय कानून राज्यों पर लागू हुए हैं और भविष्य में भी लागू होंगे'। धारा ३७० को पूर्णरूप से खत्म करने का दायित्व राज्य की जनता पर छोड़ दिया था। वैसे यह धारा संविधान के भाग २१ के अन्दर उद्धृत है जो तात्कालिक प्रावधानों की श्रेणी में आती है। यह संविधान का स्थायी प्रावधान नहीं है। धारा ३७० के अन्तर्गत जो विशेष अधिकार काश्मीर को मिले हुए हैं उनमें निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं :-

१. कोई भी भारतीय नागरिक काश्मीर में न बस

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सकता है और न वहां पर सम्पत्ति का अधिकारी हो सकता है।

२. कोई भी काश्मीरी कन्या जो किसी अकशमीरी भारतीय नागरिक से विवाह करती है तो वह अपनी पैतृक एवं स्वअर्जित सम्पत्ति का मालिकाना हक खो देती है। साथ ही मताधिकार का हक भी समाप्त हो जाता है।

३. ऐसी शादी से पैदा सन्तान के भी सब अधिकार समाप्त हो जाते हैं।

५. एक पाकिस्तानी आतंकवादी काश्मीर घाटी में आकर नागरिक अधिकार पा लेता है जबकि भारतीय काश्मीरी नहीं।

६. धारा ३६० (वित्तीय आपातकाल) काश्मीर पर लागू नहीं होगी।

७. राष्ट्रीय आपातकाल की धारा ३५२ बिना काश्मीर सरकार की सहमति के लागू नहीं की जा सकती।

८. केन्द्रीय जांच ब्यूरों के अधिकार क्षेत्र से काश्मीर बाहर है।

९. सैनिक छावनी के लिए जगत निर्धारण का केन्द्रीय अधिकार काश्मीर में केवल वहां की सरकार की सहमति से है।

१०. सदन की कार्यवाही को प्रकाशित करने का अधिकार समाचार पत्रों को पूरे देश में है केवल काश्मीर में नहीं।

११. दल बदल विरोधी विधेयक पर निर्णय देने का अधिकार केन्द्र एवं राज्यों में लोकसभा एवं विधान सभा अध्यक्षों को है किन्तु काश्मीर में यह अधिकार लागू नहीं होता। जम्मू काश्मीर के भारत में विलय के बाद शेख अब्दुल्ला ने नेहरू के सहयोग एवं सहारे से निम्नलिखित अधिकार जो और किसी भारत के सूबे को प्राप्त नहीं थे, पा लिये थे—

१. जम्मू काश्मीर का मुख्य मंत्री 'प्रधानमंत्री कहलाया।

२. जम्मू काश्मीर का ध्वज अलग से फहराने लगा।

३. जम्मू काश्मीर के प्रधान 'सदरे रियासत' की नियुक्ति केन्द्रीय सरकार द्वारा न होकर वहां की विधायिका द्वारा की जाने लगी।

४. किसी भी भारतवासी को जम्मू काश्मीर की सीमा में घुसने के लिए परमिट लेना आवश्यक था।

५. काश्मीर का विधान अलग था जो वहां की विधायिका द्वारा निर्मित किया गया। उपरोक्त व्यवस्था धारा-३७० के साथ इस प्रदेश को एक बहुत निर्बल बन्धन से भारत के साथ जोड़ती थी। यहां तक कि काश्मीर एन्थम 'राष्ट्रगान' भी अलग था तथा 'काश्मीर' रेडियो (आकाशवाणी) का भी अलग नाम रखता था। इन परिस्थितियों के कारण शेख अब्दुल्ला निरंकुशता की सीमा पार करने लगे तथा इसका पहला मुखर विरोध डा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी द्वारा किया गया। जिन्हें जम्मू काश्मीर सीमा में बगैर परमिट के ११ मई १९५३ को न केवल गिरफ्तार किया गया वरन उनकी मृत्यु भी २३ जून १९५३ को अत्यन्त रहस्यमय परिस्थितियों में हो गई। लोक-सभा में सर्वसम्मति से उठाई गयी मांग को निरस्त करते हुए नेहरू जी ने किसी भी जांच से इंकार कर दिया। यद्यपि प्रचण्ड जनमत के आगे बाद में उन्हें झुकना पड़ा। शेख अब्दुल्ला को गिरफ्तार करके काश्मीर में बख्शी गुलाम मुहम्मद को वहां का मुख्य मंत्री बनाया गया और धारा-३७० को छोड़ कर शेष सब अवांछित अधिकार राज्य सरकार से छीन लिए गये। जिन्हें पुनः पाने के लिए अब स्वायत्तता का मुद्दा उछाला जा रहा था।

काश्मीर समस्या का समाधान :

जम्मू काश्मीर के निदान के लिए निम्नलिखित परिस्थितियों का मनन करना एवं उचित अवसर पर वांछित कार्यवाही करना ही एक रास्ता है।

१. काश्मीर भारत का वैधानिक तौर पर एक अभिन्न एवं अविभाज्य अंग है, परन्तु पाकिस्तान के पास एक तिहाई भाग अवैध कब्जे में है तथा भारतीय लोक-सभा सर्व सम्मति से उस भाग को पाकिस्तान से खाली कराने का प्रस्ताव पारित करके भारत की सरकार को उचित कदम उठाने का आदेश दे चुकी है।

२. संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा पारित प्रस्ताव पर पाकिस्तान ने जो अपने अवैध कब्जे को समाप्त करने के पहले कदम को न उठा कर तथा भारत द्वारा काश्मीर की विधान सभा जो जनता की चुनी हुई संवैधानिक संस्था है के द्वारा भारत विलय को स्वीकार करके जो स्थिति पैदा कर दी है उससे भारत की ओर से संयुक्त राष्ट्रसंघ प्रस्ताव का भी पालन कर दिया गया है।

३. शिमला समझौते के प्राविधानों के अनुसार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पाकिस्तान द्वारा कोई भी प्रक्रिया न करने से पाकिस्तान का रवैया स्पष्ट है कि वह 'धर्म' के नाम पर अनुचित एवं अमान्य शर्तों को मनवाने के लिए निकृष्ट एवं निरंकुश आतंकवाद का सहारा लेकर जो कार्यवाही कर रहा है उसके उत्तर में भारत को ठोस कदम उठाना ही होगा।

४. घड़ी की सुईयों को पीछे नहीं ढकेला जा सकता। जो मांग पाकिस्तान धर्म के नाम पर कर रहा है, का औचित्य बंगलादेश की घटना ने अमान्य सिद्ध कर दिया है और धर्म के नाम पर दो राष्ट्र सिद्धान्त आज की स्थिति में अतर्क-संगत ही नहीं वरन् अब जनमत कराना पाकिस्तान के अस्तित्व के लिए भी खतरा है अब तो पाकिस्तान में मुजाहिरों द्वारा भी घोषणा की जा रही है कि भारत का विभाजन एक बड़ी गलती एवं दुर्घटना थी। पाकिस्तान अधिकृत काश्मीर मुख्यतः उत्तरी भागों में (गिलगिट, स्कार्दू, वालटिस्तीन) पाकिस्तान से स्वतंत्रता पाने का सुलगता हुआ आन्दोलन भी एक भविष्य की ओर चेतावनी स्वरूप इशारा है।

५. वस्तुतः पाकिस्तान द्वारा आयोजित निकृष्ट एवं निष्फल परन्तु महत्वाकांक्षी आतंकवाद को समाप्त करना ही उसके हित में है ताकि शान्ति स्थापित होने के बाद सौहार्दपूर्ण वातावरण में, समझौते एवं लाहौर घोषणा के अनुसार बातचीत करके दोनों देशों के बीच का झगड़ा समाप्त किये जाने का प्रयास किया जा सके।

—१५/१६, ज्ञान सरोवर, रामघाट रोड, अलीगढ़

भारतीय गौरव के पुरातम प्रतीक "चतुर्वेद"......

कठिन और दुरूह तो नहीं हैं। वेदों के छिपे गूढ़ रहस्यों को लेखों, प्रस्तावों के द्वारा जन-जन तक पहुंचाने में संलग्न, ३३ वर्षों से हिन्दी भाषी जनगण के सेवार्थ समर्पित—

जनज्ञान (मासिक)

आइए, आगे बढ़िए, अपनी पुरानी कल्पना साकार कीजिए

* * *

वेद पढ़िए, वेदज्ञ बनिए

* * *

जनज्ञान के माध्यम से वेदों में प्रवेश सरल हो जाएगा।

* * *

परिपोषक सदस्य – ११,००० रु. (चारों वेद हिन्दी भाष्य उपहार प्राप्त करें)
सहायक सदस्य — ५,१०० रु. (५००रु. का साहित्य उपहार प्राप्त करें)
साधारण सदस्य — २५०० रु. (स्वामी दयानन्द जीवन चरित्र हिन्दी एवं अंग्रेजी)

दान-प्रदाता का 'जनज्ञान' में परिचय प्रकाशित होगा तथा आजीवन 'जनज्ञान' निःशुल्क भेजा जाएगा।
दुरितों को दूर करने व भद्रों को आकर्षित करने के लिए इस महान ज्ञान यज्ञ में भाग लें।

पंडिता राकेश रानी
संपादक "जनज्ञान मासिक"

कार्यालय : २२८६ — आर्य समाज मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-५ दूरभाष : ५७२४७४१, ५८१५४५७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ज्वलंत समस्या

विश्वव्यापी आतंकवाद और भारत

— आनंदशंकर पंडया

आज आतंकवाद सारे विश्व की समस्या बन चुका है। जिसे समय रहते नहीं रोका गया तो अणुबम के इस युग में विश्व के विनाश की भावना उत्पन्न हो सकती है। अत: अमेरिका ने हमारे शांतिवादी देश के प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी के साथ इस विषय पर पूरा सहयोग करने का निर्णय लिया है। भारत की जनता इस खतरे से अनभिज्ञ है अतः उसे इसका ज्ञान कराना आवश्यक है। इस्लामिक कट्टरतावाद से उत्पन्न धर्मान्धिता के कारण सारे संसार में घृणा और भयंकर हिंसा फैल रही है। लेबनान, बोसनिया, सरबिया, अलबानिया, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बांग्लादेश व भारत के अंग काश्मीर में हिंसा इसका उदाहरण है। आतंकवाद बढ़ाने पाकिस्तान की जासूसी संस्था आई. एस. आई. ने सारे भारत में अस्त्र शस्त्र के अड्डे बना रखे हैं तथा काफी धन रखा है ताकि जेहाद लंबे समय तक चलाया जा सकें।

अमेरिकन कांग्रेस के आतंकवाद पर विशेषज्ञ और निदेशंक श्री योसेफ बोडान स्काई चेतावनी देते हैं कि "कश्मीर विश्वव्यापी इस्लामिक तंत्र का प्रथम एजेन्डा है। इसी तरह सऊदी अरब, गल्फ अरब और इस्लामिक आंदोलन के अन्य समर्थकों ने काश्मीर को जेहाद (धर्मयुद्ध) की पहली प्राथमिकता मात्ती है। इसे अल्जीरिया, सूडान, मिस्र इत्यादि ने भी अपनी प्रथम कार्यसूची पर रखा है। इसके लिये सब इस्लामिक देश पाकिस्तान को उसी तरह आर्थिक मदद करेंगे जिस तरह उन्होंने अफगान युद्ध को मदद दी थी। उनका उद्देश्य अफगानिस्तान से इंडोनेशिया तक एक इस्लामिक बेल्ट बनाना है।"

बोडान स्काई आगे कहते हैं कि " इस्लामिक जेहाद को पूरा करने के लिये आई, एस. आई ने मरकज दावर' नामक संस्था बनाई है जो विश्व व्यापी इस्लामिक गतिविधियों का केंन्द्र है। उस के प्रमुख मौलवी जकी आतंकवाद की शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों से कहते हैं कि उनका कर्तव्य है कि वे अल्लाह की भूमि कश्मीर को काफिरों के हाथ से छुड़ावें। १० वर्ष से अधिक युद्ध का अनुभव रखने वाले काश्मीर के आतंकवादियों ने अत्यंत खतरनाक व आधुनिकतम वैज्ञानिक शस्त्र तथा सूचना प्रणाली अलग-अलग अड्डों में एकत्र कर रखी है। ये सिस्टम जापान, नाटो तथा अमेरिका से प्राप्त किये गये है।" श्री बोडान स्काई कहते हैं कि "आई. एस. आई. का उद्देश्य हिंदू समाज में जाति, भाषा और प्रांतों की फूट का लाभ उठाकर सारे भारत पर कब्जा करना है।" इसी तरह पाकिस्तान सारे भारत में अल्पसंख्यकों का आतंकवाद फैलाना चाहता है।

टाइम्स ऑफ इंडिया १२.४.९८ के अनुसार "बिहार और उत्तर प्रदेश के कई मुसलमान अफगानिस्तान की मुस्लिम कट्टरवादी तालिवान सरकार के पूर्ण समर्थक हैं। यह भारत की सुरक्षा के लिये बड़ा खतरा है। इस बात का भय है कि यदि मुसलमान आतंकवादी योद्धा काबुल में सफल हो गये तो भारत में घुसकर आतंकवादी गतिविधियों को बढ़ायेंगे।" आज भारत में यही हो रहा है। पाकिस्तान की जासूसी संस्था आई. एस. आई. ने तालिबान की गतिविधियों को, जिनका उद्देश्य इस्लामिक क्रांति विदेशों में फैलाना है, समर्थन दिया है। चीन के जिन जियांग और मध्य एशिया के देशों में भी क्रांति फैलाना आई. एस. आई का मकसद है। अफगानिस्तान के लड़ाकों ने संपूर्ण दक्षिण एशिया के उत्तरी भाग में हिंसक आंदोलन चलानेवाले नेताओं के साथ संपर्क स्थापित किये हैं। अफगानिस्तान से जम्मू काश्मीर, पंजाब और आगे तराई, उत्तरप्रदेश और पूर्वांचल भारत में आतंकवादियों के अड्डे कायम हो गये हैं जहां भंडार भरा जा रहा है। इन सब गतिविधियों से जुड़ा हुआ है नशीली दवाओं का व्यापार जिसका केंद्र है अफगानिस्तान। यह व्यापार आई. एस. आई. द्वारा भारत के बड़े-बड़े शहरों में फैलाया जा रहा है तथा युवकों को नशे की आदत डालकर उन्हें खोखला बनाने और उनसे धन निचोड़ने का षडयंत्र रचा जा रहा है। साथ ही बर्मा के ड्रग के मुख्य केन्द्र गोल्डन ट्रेंगिल, अफगानिस्तान तथा पाकिस्तान के सहयोग से विश्व में नशीली दवाएँ बेचकर उससे अपार धन प्राप्त कर भारत में आतंकवाद बढ़ाया जा रहा है।

टाइम्स ऑफ इंडिया ने २३ जुलाई ९३ में सावधान किया था कि "१४ मुस्लिम देशों से १५०० आतंकवादी अस्त्र से लैस होकर भारत में काश्मीर तथा अन्य कई मार्गो से घुस रहे हैं तथा ३०० लड़ाकू पाकिस्तान से भारत घुसने का इंतजार कर रहे हैं।"

आबजरवर २० नवम्बर ९३ के अनुसार अमेरिका की रिपब्लिकन पार्टी रिसर्च कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में कहा था कि " आई.एस. आई. के राजनैतिक विभाग के अध्यक्ष ब्रिगेडियर इमतियाज ने ए. के-२ नामक लंबी योजना बनाई है जिसका उद्देश्य काश्मीरी और उत्तर प्रदेश के तराई इलाकों में हिंसा फैलाना है। तथा आसाम के उल्फा और दक्षिण भारत की अनेक आतंकवादी संस्थाओं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

को मदद करके मौका पाकर भारत में अराजकता फैलाना है।" आई. एस. आई. मुस्लिम युवकों को आर. डी. एक्स्. द्वारा पुल, बिल्डिंग इत्यादि उड़ाने की तथा उन्हें सुसाइड ब्रिगेड बनाने की शिक्षा देती है। इसके लिए आजाद काश्मीर, अफगानिस्तान तथा पाकिस्तान में ट्रेनिंग कैम्प हैं। वहां बिन लादेन तथा दाऊद जैसे लोगों द्वारा आतंकवादियों को सब तरह के आधुनिक शस्त्र , विस्फोटक पदार्थ तथा बम दिये जाते हैं। इनमें से अधिकतर युवक बचपन से ही मदरसों में आतंकवाद के लिये कट्टर बनाये जाते हैं। आई. एस. आई. दक्षिण भारत में तमिल उग्रवादियों को भी ट्रेनिंग देती है। ऑर्गनाइजर २७.८.९५ के अनुसार "एक मुस्लिम शिक्षा संस्था २० केन्द्र चला रही है जहां सिर्फ यही शिक्षा दी जाती है कि मुसलमानों की अपनी गरीबी दूर करने के लिये ए.के. ४७ बदूक चलाने की शिक्षा लेनी चाहिए। यह बात राज्यसभा सदस्य भोपाल निवासी श्री सारंग ने अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर कही। उनके अनुसार१० हजार पाकिस्तानी गैरकानूनी ढंग से भोपाल में रह रहें हैं।"

टाइम्स ऑफ इंडिया १. मई. ९५ के अनुसार "अमेरिका की आतंकनाद को रोकनेवाली संस्था के श्री, फिलिप बिलकाक्स का कहना है कि विश्व में आतंकवाद फैलानेवाला प्रमुख देश ईरान है जो विदेशों में इस्लाम के विरोधियों की हत्या करवाता रहता है। ईरान विश्व की सबसे खतरनाक आतंकवादी संस्था हिजबौल्लाह को सीधी मदद देता है।" टाइम्स ऑफ इंडिया १९. फरवरी ९६ के अनुसार "भारत सरकार की जांच करनेवाली संस्थाएं कहती हैं कि आई. एस. आई. भारत में शस्त्रों का गोदाम जगह-जगह बना रही है। उन शस्त्रों का उपयोग ऐसे समय में करेगा जब चुनाव में गड़बड़ी होने लगे और किसी दल की सरकार न बने। इसमें चिंता की बात यही है कि उन शस्त्रों का उपयोग प्रमुख नेताओं और अफसरों की हत्या में किया जा सकता है।"

अमेरिकन कमेटी रिपोर्ट १९९३ कहती है कि "पाकिस्तानी जासूसी संस्था आई. एस. आई. भारत को खंडित करने का प्रयत्न कर रही है। रिपोर्ट के अनुसार इस संस्था का सारे पश्चिमी भारत में जाल बिछा हुआ है। गंगानगर राजस्थान से आधुनिकतम शस्त्र सारे भारत में भेजे जा रहे हैं। आई. एस. आई. का राजनेताओं, सरकारी अफसरों और पुलिस पर अच्छा प्रभाव है।" एशियन एज (१२.३.२०००) के अनुसार पाकिस्तान की आई. एस. आई. आसाम तथा शेष उत्तर पूर्वीय क्षेत्रों में आतंकवादी हिंसा फैला रही है। यह जानकारी वाशिंगटन (अमेरिका) के एक उच्च अधिकारी ने दी। इसमें असम की आतंकवादी संस्था उल्फा भी शामिल है। टाइम्स ऑफ इंडिया (५ अप्रैल २०००) के अनुसार पुनुन काश्मीर के नेता श्री अशोक पंडित ने कहा है कि १० हजार कट्टरवादी अफगान आतंकवादी काश्मीर में ३५ सिक्खों की हत्या उनके कार्यों का एक नमूना है। उनका उद्देश्य सभी भारत के समर्थकों को काश्मीर से निकाल बाहर करने का है। अतः पंडितों को वहां से निकालने के बाद अब वे सिक्खों को वहां से निकाल रहे हैं।

आतंकवादी लोग अब भारत के सुरक्षा दलों पर भी निर्भय होकर हमला कर रहे हैं क्योंकि भाजपा सरकार ने कट्टर पाकिस्तान आतंकवादी मोहम्मद अजहर को छोड़ दिया इससे आतंकवादियों के हौसले बुलंद हो गये हैं।

टाइम्स ऑफ इंडिया (१ अगस्त २०००) के अनुसार पंजाब पुलिस का कहना है कि आई. एस. आई. अब प्रशिक्षित पाकिस्तानियों को पंजाब की शांति भंग करने के लिए भेज रही है। हरकते जेहादी इस्लामी के ३ लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार किया उनसे ये जानकारी प्राप्त हुई। उनके पास से ५ ए. के. ५६ राइफल, ५ किलो आर. डी. एक्स., ग्रेनेड लाचर और हथगोले बरामद हुए।

कुछ समय पहले आबजर्वर ने अपने लेख "इंडिया फॉर सेल" में सावधान किया था "लगभग २५ पाकिस्तानी आतंकवादी गुट नागाफ्रंट और खालिस्तान फ्रंट जैसी ३० उग्रवादी संस्थाओं के साथ मिलकर बम विस्फोट तथा गृह युद्ध द्वारा भारत को बर्बाद करने की योजना बना रहे हैं।" इसी योजना के तहत मुम्बई, दिल्ली, कलकत्ता तथा अन्य स्थानों पर बम विस्फोट किये गये थे। बांग्लादेश से २ करोड़ घुसपैठिये सारे भारत विशेषकर बिहार, पश्चिम बंगाल और आसाम के ७ राज्यों में फैलकर आतंकवाद को मदद कर रहे हैं। इस तरह आज भारत की आजादी खतरे में पड़ रही है। इससे बाजपेयी को पोखरन विस्फोट करना पड़ा। ये सब बातें १५ वर्ष से उस वक्त की सरकारों की जानकारी में थीं पर दुर्भाग्यवश अपने तुच्छ राजनैतिक स्वार्थ के लिये सेक्युलरिजम की आड़ लेकर इन देश विरोधी आतंकवादियों के विरूद्ध कार्य नहीं किया गया ताकि चुनाव में इनमें मदद ली जाय। काश्मीर में चरारे शरीफ और हजरतबल मस्जिदों के मामले पर आतंकवादियों को बिरयानी खिलाकर छोड़ दिया गया था। निरंतर ऐसे तुष्टिकरण से उनकी शक्ति बहुत बढ़ती गई। अमेरिकन कमेटी रिपोर्ट १ साल के परिश्रम से अमेरिका सरकार ने बनाई है। इसमें ये ३ बातें साबित की गई हैं।

१. आतंकवाद का रूप अतंरराष्ट्रीय इस्लाम है। २. आई. एस. आई. के २ उद्देश्य हैं एक तो काश्मीर पर कब्जा करना और दूसरा मुल्लाओं के इस्लामिक उद्देश्य को पूरा करना। ३. उनका उद्देश्य इस्लामिक कट्टरवादी संस्थाओं की मदद से सारे भारतपर कब्जा करना है।

इसलिये भारत की जनता, समाचारपत्र, सरकार, न्यायालय, पुलिस और सेना देश की रक्षा के लिये सावधान हो जाये। विश्व का सब से प्रसिद्ध वाक्य याद रखे "निरंतर सावधानी ही आजादी की कीमत है।"

— ३६ फिरोजा मैंशन, ग्रांट रोड, स्टेशन (पूर्व) मुम्बई

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ज्ञान-विज्ञान

चन्द्रमा : कितने तथ्य कितनी धारणाएं

प्रतिदिन चन्द्रमा पिछले दिन की अपेक्षा लगभग डेढ़ घंटे विलम्ब से निकलता है। अमावस्या के दिन चन्द्रमा एवं सूर्य का उदय एक साथ होता है और दोनों का अस्त भी एक साथ होता है। पूर्णिमा के दिन सूर्य के अस्त होते ही चन्द्रमा का उदय होता है और सूर्योदय के साथ चन्द्रमा का अस्त हो जाता है।

बच्चे आकाश की ओर उंगली उठाकर अपनी मां से पूछते हैं कि आकाश में चमक रहा वह क्या है ?तब मां कहती है कि वह चंदा मामा है। एक ओर बहुत आसान सवाल है लेकिन इसका जवाब देने में हममें से बहुत लोग मुश्किल में पड़ जाते हैं। सवाल यह है कि चन्द्रमा किस दिशा से उगता है या निकलता है ? सूर्य और चन्द्रमा को हम रोज देखते हैं। बचपन से किस्से कहानियों में इनके बारे में बताया जाता है। चन्द्रमा को तो 'मामा' की संज्ञा भी दी गई है। सूर्य और चन्द्रमा के बारे में जानने की उत्सुकता कभी खत्म नहीं होती, मनुष्य इसी उत्कन्ठा की पूर्ति के लिए चांद पर जाकर भी आ गया है। जब सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण होता है, तब इनके बारे में हमारी उत्सुकता और बढ़ जाती है। सूर्य हमारे सौर मंडल का सबसे प्रमुख सदस्य है। हमारी पृथ्वी ग्रह है। सौर मण्डल में पृथ्वी सहित कुल नौ ग्रह हैं। चन्द्रमा पृथ्वी का उपग्रह है। इन सबका आकार कमोबेश गोल है। पृथ्वी सूर्य के चारों तरफ परिक्रमा करती है। एक बार परिक्रमा पूरा करने में उसे ३६५-१/४ दिन लगते हैं। चन्द्रमा को पृथ्वी की एक परिक्रमा में करीब २५-१/२ घंटे लगते हैं। सूर्य स्थिर है, भले ही हमें लगता हो कि सूर्य घूमता है। सूर्य पूर्व दिशा में उगता है, जिसे सूर्योदय कहते हैं और पश्चिम दिशा में डूबता है जिसे सूर्यास्त कहा जाता है। सूर्योदय के साथ दिन प्रारम्भ होता है और सूर्यास्त होते ही दिन खत्म हो जाता है और रात हो जाती है। पृथ्वी अपनी धुरी पर पश्चिम से पूर्व दिशा की ओर परिक्रमा करती रहती है।

जिस तरह सूर्य पूर्व दिशा से उगता है, उसी तरह चन्द्रमा भी पूर्व दिशा से उगता है। चन्द्रमा की परिक्रमा गति पूर्व दिशा से पश्चिम दिशा की ओर है। सूर्योदय के समय में करीब डेढ़ घंटे का परिवर्तन होता रहता है यानि कभी ५.३० बजे तो कभी ६.३० बजे। लेकिन चन्द्रोदय के समय में काफी ज्यादा परिवर्तन होता है। प्रतिदिन चन्द्रमा पिछले दिन की अपेक्षा लगभग डेढ़ घंटे विलम्ब से निकलता है। अमावस्या के दिन चन्द्रमा एवं सूर्य का उदय एक साथ होता है और दोनों का अस्त भी एक साथ होता है। पूर्णिमा के दिन सूर्य के अस्त होते ही चन्द्रमा का उदय हो जाता है, इसे समझने के लिए सूर्यग्रहण को समझना होगा। सूर्यग्रहण अमावस्या के दिन होता है सूर्य और पृथ्वी के बीच में चन्द्रमा का आना ही ग्रहण है। यह स्थिति अमावस्या को ही पड़ती है, जिससे हम कह सकते हैं कि अमावस्या को चन्द्रमा दिन में हमारे ऊपर सूर्य के समान्तर रहता है।

अंग्रेजी की तिथियां सूर्य पर आधारित हैं। इस्लाम में तिथियां गणना चन्द्रमा पर आधारित हैं। जबकि भारतीय तिथियों में चन्द्रमा और सूर्य दोनों की गणना की गई है। भारतीय तिथि गणना में पूर्णिमा, अमावस्या, कृष्णपक्ष, शुक्लपक्ष आदि का उल्लेख है। ताकि चन्द्रमा की स्थिति को भी ध्यान में रखा जाये। चन्द्रमा के पूर्णरूपेण प्रतिबिम्ब होने की रात को पूर्णिमा कहा जाता है। इस दिन चन्द्रमा अपने सम्पूर्ण गोलाकर रूप में प्रकाशित होता है। पूर्णिमा के अगले दिन से कृष्णपक्ष की शुरूआत होती है। कृष्णपक्ष की चौदस तक चन्द्रमा घटता जाता है। पन्द्रहवें दिन को अमावस्या कहा जाता है। अमावस्या के अगले दिन को शुक्लपक्ष का कहा जाता है। अब चन्द्रमा का आकार उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है। पूर्णिमा को चन्द्रमा का पूर्ण प्रकाशित भाग पृथ्वी की ओर होता है। जबकि अमावस्या को पूर्ण अंधकारमय भाग पृथ्वी की ओर होता है। इसी परिवर्तन के कारण चन्द्रमा हमें दिन एवं रात दोनों समय देखने में आता है। एक अन्य महत्वपूर्ण खगोलिय घटना है-ग्रहण जब सूर्य और पृथ्वी के बीच चन्द्रमा आ जाता है तो उसे सूर्यग्रहण कहते हैं। सूर्य ग्रहण अमावस्या को ही होता है। चन्द्रग्रहण सिर्फ पूर्णिमा के दिन होता है।

ग्रहण वास्तव में एक खगोलिय घटना मात्र है, आकाश में खगोलीय घटनाएं प्रत्येक क्षण घट रही हैं। यहां तक कि आकाश में विभिन्न ग्रह अनेकोंनेक बार एक दूसरे को ढकते हैं या यह कहा जाये कि खगोल में अनेक बार ग्रहण लगते हैं लेकिन इनका प्रभाव हम पर नहीं पड़ता। पृथ्वी के जिस भाग से ग्रहण दिखाई देता है उसी भाग पर ग्रहण का असर माना जाता है अन्य भागों पर नहीं। इससे डरने की, भयभीत होने की कोई आवश्यकता नहीं है। यह घटनायें हमारे जानने, समझने एवं उनके पहलुओं के प्रति उत्सुकता बढ़ाती हैं। शीत ऋतु में दिन छोटे और रातें बड़ी होती हैं। ग्रीष्म ऋतु में दिन बड़े और रातें छोटी होती हैं। २१ जून का दिन साल का सबसे बड़ा दिन होता है क्योंकि उस दिन सूर्यास्त ६.५७ मिनट पर होता है। इस प्रकार दिन की अवधि १३ घंटे ३५ मिनट लंबी हो जाती है। २१ मार्च और २१ सितम्बर को दिन और रात दोनों की अवधि सामान्य बराबर होती है। (संकलन-संजय)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नशा व सामिष भोजन : बढ़ता रोग व उपचार

— श्री रामनिवास लखोटिया (अध्यक्ष मा. शा. परिषद्)

भारतीय समाज में एक नई समस्या उभर कर सामने आई है वह है सामिष भोजन की बढ़ती हुई, प्रवृत्ति। शराब, धूम्रपान, अफीम, गाँजा, और विभिन्न प्रकार के मादक द्रव्यों की बढ़ती सेवन की प्रवृत्ति, नशों में धुत्त होने की आदत और बाद में लत आज समाज के सभी तबकों के लोगों में दृष्टिगोचर हो रही है। विशेषकर मदिरापान के क्या नुकसान हैं और इस प्रवृत्ति को कैसे रोका जा सकता है इसका विवेचन यहां करने का प्रयास किया गया है।

मदिरापान से हानियाँ

नशा चाहे जैसा हो, वह स्वास्थ्य के लिए घातक है। विशेषकर मदिरापान की प्रवृत्ति और भी घातक है क्योंकि यह स्वभावतः मांसाहार और विषय विकार के प्रति मनुष्य को आकृष्ट करता है। इसी बात को सन्त कबीर ने ठीक ही कहा है :-

"मांस मछरिया खात है, सुरापान सो हेत।
सो नर जड़ से जाहिगें, ज्यों मूरीका खेत।"

शराब के नशे के सम्बन्ध में कुछ विद्वानों और धर्म ग्रन्थों के उद्‌गार मनन योग्य हैं। महान चिन्तक ग्लेडस्टोन के अनुसार युद्ध अकाल और महामारी ने मिलकर मानव-जाति का इतना अहित नहीं किया, जितना अकेली शराब ने किया है। शराब के नशे की आदत से उत्पन्न आर्थिक, मानसिक, सामाजिक और पारिवारिक दुष्प्रभावों का दायरा अत्यन्त व्यापक है। शराब पीने के कुछ ही देर बाद उसमें मौजूद अल्कोहल रक्त में शामिल होकर रक्त-कोशिकाओं के माध्यम से सारे शरीर में फैल जाता है। अल्कोहल से हमारा तात्पर्य ईथाइल एल्कोहल से है। परन्तु बहुधा मिलावटी शराब में अत्याधिक विपाक्त मिथाइल एल्कोहल भी पाया जाता है। भिन्न-भिन्न प्रकार की शराब में भिन्न-भिन्न मात्रा में एल्कोहल पाया जाता है। जैसे देशी शराब में ३५ से ५० प्रतिशत, बियर में ४ से ८ प्रतिशत या १० प्रतिशत, स्प्रिट में ४० से ५० प्रतिशत, वाइन में ८ से १५ प्रतिशत। केन्द्रीय स्नायु तंत्र : शराब के प्रभाव से कुन्द (डिप्रेस्ड) होजाता है। स्नायु तंत्र के उच्च केन्द्रों पर रोक लगने पर मनुष्य कुछ समय के लिए खुशहाली का अनुभव करता है जिससे वह आसानी से क्रोधित हो जाता है, बेवजह हंसता है, तथा बातें करता है और उसका व्यवहार असामाजिक हो जाता है। ऐसी स्थिति में वह कोई भी अपराध कर सकता है। बिटामिन "बी" समूहों की कमी, आंखों पर दुष्प्रभाव, हृदय गति का तीव्र होना, गैस ट्राइटिस और अल्सर आदि का बनना यकृत की खराबी होकर असाध्य बीमारी (सिर्होसिस ऑफ लीवर) होने की संभावना बढ़ना आदि शराब के नशे के दुष्परिणाम हैं। शराब का नशा करने वाले व्यक्ति प्रायः अपच, अनिद्रा, पौरूष हीनता आदि गम्भीरतम रोगों के शिकार हो जाते हैं।

जो शराब पीते हैं वे तो अनर्थ करते ही हैं, उनके स्पन्दन सारे वातावरण को प्रदूषित करते हैं। रूस के महान चिंतक टाल्स्टाय ने अपने एक निबंध में ठीक ही लिखा था। **एक स्थान पर कत्ल होता है। उससे कुछ हीं गज की दूरी पर एक आदमी शराब पीता है। टाल्स्टाय का कथन था कि उस कत्ल के लिए वह शराबी भी जिम्मेदार है, क्योंकि उसके स्पन्दन उस दुष्कृत्य को करने में सहायक हो रहे थे। धर्म शास्त्रों में इसका निषेध किया गया है। निरूक्त के अनुसार सात महा पापों में शराब पीना भी सम्मिलित है (निरूक्त ६/२७) छान्दोग्योपनिषद में यह स्पष्ट कहा गया है कि " शराब सभी पापों का कारण है"। चरक संहिता में लिखा है — "शराब सभी कुकर्म कराने वाला और देह को नाश करने वाला है। शराब पीने वालों के लिए कोई भी औषधि असर नहीं करती है।"** जब शराब की आदत इतनी बुरी है और इसके भयंकर दुष्ट परिणाम होते हैं तो उसके रोकने के लिए क्या कारगर प्रयत्न किये जायें यह एक चिन्तनीय विषय है।

मदिरापान मांसाहार है :

शाकाहारी परिवारों में कई नवयुवकों को हमने यह कहते सुना है कि 'आज मंगलवार है इसलिए मैं शराब नहीं पीऊंगा। इसी प्रकार कुछ प्रौढ़ व्यक्ति भी नवरात्रि के दिनों में यह कहते हुए सुने जाते हैं कि **"नवरात्रों में मैं शराब नहीं पीऊँगा"। इसका अर्थ स्पष्ट है शराब कोई अच्छी चीज नहीं है और देवी देवताओं के पूजन में इसे अपवित्र मानकर ही लोग इसका त्याग करते हैं।** इसके अलावा कई लोग भ्रमित हो कर यह भी कहते हुए सुने जाते हैं कि —"वैसे तो हम पूर्णतः शाकाहारी हैं लेकिन शराब पीना तो मांसाहार नहीं है"। कुछ दिन पूर्व

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ही मैंने इन्टरनेट पर डब्लू डब्लू डब्लू विगमन सोसाइटी का एक "पोर्टल" देखा जिसमें यह स्पष्ट किया गया है कि अधिकांश शरावों में खून, हड्डी, चर्वी, और कई प्रकार के जानवरों और कीड़ों के हिस्सों का मिश्रण होता है। इसी प्रकार कुछ किस्मों की शराब में मछली का तेल, और जिलेटिन तथा इजिगिलास मिलाये जाते हैं। इजिंगिलास एक प्रकार का वह जिलेटिन पदार्थ है जो स्वच्छ पानी की मछलियों में और विशेषकर स्टरजन मछलियों के ब्लेडर से निकाल कर प्राप्त किया जाता है। इसी प्रकार, जानवरों की कोशिकाओं और चमड़ी और उनके अन्य शरीर के हिस्सों को उवाल कर एक जेली का निर्माण होता है जिसे "जिलेटिन" कहते हैं। जब ये पदार्थ अधिकांश शरावों में मिलाये जाते हैं तो शराब मांसाहार ही हो जाती है।

दृढ़ संकल्प एवं समाज :

हमारा कर्त्तव्य है कि हम स्वयं भी शराब के नशे से बचें और नशे से होने वाले दुष्ट परिणामों से अपनी नई पीढ़ी को बचायें। शराब ही नहीं, तम्बाकू का सेवन भी और विशेषकर गुटखे का सेवन भी समाज में बहुत बढ़ रहा है। इससे मुंह का कैंसर होने की आशंका बहुत रहती है। केवल एक बार दृढ़ संकल्प कर लिया तो नशा छूट सकता है। ऐसी आदत या लत से ग्रसित व्यक्ति उनकी सामाजिक भर्त्सना होनी चाहिए। किसी भी हालत में समाज के किसी भी पद पर ऐसे व्यक्तियों को स्थान कभी भी नहीं मिलना चाहिए। इस बारे में सामाजिक आचार संहिता का दृढ़ता से पालन होना नितान्त आवश्यक है।

सामिष भोजन त्याज्य है :

जहां एक ओर नशे की आदत बढ़ रही है, वहीं लोग बाग भारत में अंडा चिकनसूप, मछली आदि सामिष भोजन अर्थात् मांसाहार की ओर भी अग्रसर हो रहे हैं। यह एक विडम्बना ही है कि जहाँ विदेशों में नैतिकता या स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के कारण जगह-जगह लोग मांसाहार से शाकाहार की ओर आ रहे हैं वहीं फैशन के कारण कहिये या अज्ञानता के कारण, युवकों में और विशेषकर कालेज में पढ़ने वालों में यह प्रवृत्ति बहुत तेजी से साथ बढ़ रही है। वे चोरी-छिपे आमलेट, चिकन सूप, आदि का सेवन करते हैं। मांसाहार नैतिकता की दृष्टि से एकदम गलत है। महाभारत में स्पष्ट लिखा गया है कि जो व्यक्ति मांसाहार करता है, मांस बेचता है, खरीदता है, या उसके क्रय विक्रय में सहायक होता है वह भी मांसाहारी है।

अण्डा स्वास्थ्यवर्धक नहीं :

प्रायः यह सुनने में आ रहा है कि बच्चोंको अण्डे आदि के सेवन से अधिक स्वस्थ बनाया जा सकता है। यह एक भ्रांति है, जिसका निराकरण १९८५ के नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ. माइकल एस. ब्राउन तथा डॉ. जोसेफ एल. गोल्डस्टीन नामक दो अमेरिकन डाक्टरों ने किया जब उन्होंने यह साबित कर दिया कि हृदय के रोग के कारण ही अधिकांश मौतें होती हैं। उनके अनुसार कॉलस्टेरोल नामक तत्त्व को रक्त में जमने से रोकना बहुत आवश्यक है। और, कॉलस्टेरोल अंडों में सबसे अधिक मात्रा में अर्थात् १०० ग्राम अण्डे में लगभग ५०० मि. ग्रा. पाया जाता है। यह वनस्पतियों एवं फलों में नहीं के बराबर होता है। परन्तु मांस, अंडों, और जानवरों से प्राप्त वसा में प्रचुर मात्रा में होता है। अब यह भी सिद्ध हो गया है कि अंडा सुपाच्य नहीं है। बल्कि अंडे के छिलके पर लगभग १५,००० सूक्ष्म छिद्रों के द्वारा कई जीवाणु अंडे में प्रवेश कर जाते हैं। जो अंडे को खराब कर देते हैं। इससे हृदय रोग शुरू हो जाता है। इससे गुर्दे के रोग एवं पथरी जैसी बीमारियों को बढ़ावा मिलता है। यही कारण है कि "इंटरनेशनल वेजिटेरियन यूनियन" एवं शाकाहारी संस्थाओं द्वारा शाकाहार को विदेशों में बहुत सम्मान की दृष्टि से देखा जा रहा है।

शाकाहार ही पौष्टिक

कई बार मांसाहार के पक्ष में यह भी तर्क दिया जाता है कि पौष्टिकता और बच्चों में अधिक ताकत दिलाने की दृष्टि से उन्हें मांसाहार कराया जाना चाहिए। लेकिन यह बात सही नहीं। प्रोटीन, कैलोरी और कार्बोहाइड्रेट आदि की दृष्टि से स्वास्थ्य के लिए शाकाहार पौष्टिक आहार है। जैसे प्रति १०० ग्राम खाद्य में दालों में २४ प्रतिशत प्रोटीन व सोयाबीन में ४३ प्रतिशत प्रोटीन होता है, वहां अंडे में कुछ १३ प्रतिशत व अन्य मांस में १८ से २२ प्रतिशत तक प्रोटीन होता है। विशुद्ध शाकाहारी जानवर मांसाहारी जानवरों की तुलना में अधिक शक्तिशाली हैं, जैसे-घोड़ा, गेण्डा व हाथी। मांसाहार की अपेक्षा शाकाहार विभिन्न रोगों की रोकथाम में अधिक सहायक सिद्ध हुआ है। विश्व स्वास्थ्य संघ ने ऐसी १६० बीमारियों के नाम अपने समाचार पत्र में घोषित किए हैं जो मांसाहार से फैलती हैं। इन बीमारियों में मिर्गी की बीमारी प्रमुख है। मानव पर सैकड़ों प्रयोगों से यह सिद्ध हो चुका है कि पशुओं वाली चिकनाई से रक्त में "कालेस्ट्राल" की मात्रा बढ़ जाती है। और वनस्पति की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चिकनाई उसे कम करती है। इस बात के लिये प्रचुर प्रमाण यह है कि "आर्स्टिरियोस्कलेरोसिस" तथा "कोरोनरी हृदय रोगों में कोलेस्ट्राल बड़ा कारण है। लॉस एंजिल्स (अमेरिका) के डॉ. मारिसन का कथन है कि कोलेस्ट्राल बड़ा कारण है। कोलेस्ट्राल से अन्य कितने ही मानव रोग उत्पन्न होते हैं, यथा-पथरी। शरीर विज्ञान के सम्बन्धित प्रयोगशाला के डॉक्टर मूर ने यह प्रदर्शित किया है कि मांसाहार से हृदय का क्रियाकलाप बढ़ जाता है। इसी प्रकार रक्तचाप, आर्टरी की कठोरता और गुर्दे के रोगों से पीड़ित व्यक्तियों के लिए भी मांसाहार हानिकारक है। स्वास्थ्य प्रेमियों के लिए अपने स्वयं के स्वास्थ्य हेतु यह आवश्यक है कि वे अंडे और अन्य मांसाहारी पदार्थों का सेवन कतई न करें।

—एस-२२८ ग्रेटर कैलाश- ॥, नई दिल्ली - ४८

जनज्ञान के सदस्यों से

डाक व्यय बढ़ जाने से वार्षिक शुल्क की वी.पी. भेजने में अब २२ रुपये लगते हैं अतः मनीआर्डर या दिल्ली के चैक द्वारा शुल्क भेजें। कार्ड पर उत्तर अवश्य देने की कृपा करें।

— सम्पादक

चार लाख रुपये के सहयोग का आह्वान, क्या वेद प्रेमी जन देगें इस पर ध्यान ?

परमपिता परमात्मा की अमर वाणी वेद को देश विदेश में आर्य हिन्दू परिवारों तथा ज्ञान पिपासु जिज्ञासु जन तक पहुंचाने के अभियान में दयानंद संस्थान विगत तीस वर्षों से सतत प्रयत्नशील है। अब तक लगभग दो लाख परिवारों एवम् अनेक मंदिरों और देवालयों में वेद का पावन आलोक फैलाने की अपनी उपलब्धि पर दयानंद संस्थान स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर सकता है। जहां यह सत्य है, वहां यह भी एक सुस्पष्ट तथ्य है कि संस्थान के सहयोगियों और जनज्ञान के सैकड़ों पाठकों ने मुक्त हस्त से जो योगदान दिया है, उसी का यह सुखद परिणाम है।

अब संस्थान ने चारों वेदों का हिन्दी भाषा भाष्य को कम्प्यूटर कम्पोजिंग की विधा के माध्यम से अधिक आकर्षक रूप में जन साधारण को उपलब्ध कराने का निश्चय किया है। कार्य प्रारम्भ कर दिया है। इसकी संपन्नता के लिए लगभग चार लाख रुपए की धनराशि अपेक्षित है। यदि केवल अस्सी संपन्न बंधु पांच-पांच हजार रुपए की सहयोग राशि प्रदान करें तो यह लक्ष्य पूर्ण हो सकता है। ग्यारह हज़ार देने वालों के चित्र भी छापे जायेंगे।

हमारा अनुरोध है उन सबसे जो "वेद की ज्योति जलती रहेगी" का जय घोष और निनाद अपनी पूरी शक्ति से गुंजाते हैं। हमारा आग्रह है उन सबसे जिन्होंने अपने परिश्रम से धनोपार्जन किया है और जो दो हाथों से कमाओ और सहस्त्र हाथों से दान दो के वैदिक आ ान को व्यवहार में उतारने को तत्पर हैं। हमारा अनुरोध आप स्वीकार करेंगे, यह हमारा विश्वास है।

यह याचना नहीं-कर्तव्य पालन का है आह्वान्।
क्या वेद अनुरक्त जन देंगे इस पर ध्यान॥

पांखडों के तूफान अज्ञान की आंधी, अंध विश्वासों के बढ़ते चरण नए - नए भगवानों की छलभरी सेना के विरूद्ध है संघर्ष का यह क्षण, सहयोग का हाथ बढ़ाइए-प्रभु का आशीर्वाद पाइए।

अपनी सहयोग राशि "दयानन्द संस्थान" के नाम मनिआर्डर, बैंकड्राफ्ट अथवा देहली के चैक द्वारा भी भेज सकते हैं।

दयानन्द संस्थान, २२८६ आर्यसमाज मार्ग,
करोल बाग, नई दिल्ली -५
दूरभाष : ५७२४७४१, ५८१५४५७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भ्रष्ट आचरण की वकालत

—अनुरूप मिश्र

आखिर असत्य पर आधारित कोई भी कार्य तात्कालिक लोकहित अथवा व्यापक लोकहित में कैसे उपयोगी सिद्ध हो सकता है ?

तर्कशास्त्र एक अद्भुत शास्त्र है तथा निरपेक्ष दृष्टि से देखें तो पर्याप्त रोचक व्याख्यायें देता है। यदि एक सफल तर्कशास्त्री को पकड़ा जाए तो वह सिद्ध कर सकता है कि कछुआ हमेशा शरगोश से तेज दौड़ सकता है। और यह भी कि नरसिंहराव ने व्यापक लोकहितों के अंतर्गत ही झारखंड मुक्ति मोर्चा के सांसदों का समर्थन खरीदा था। यह एक व्याख्या है और हम इसे तार्किक व्याख्या कहते हैं। तार्किक व्याख्याओं को सिद्ध करते समय वेदव्यास से लेकर आईंस्टीन तक को खुला उपयोग दिया जा सकता है। तथा प्रमाण एकत्रित करने के लिए पाणिनि की अष्टाध्यायी से लेकर कौटिल्य का राजनीतिशास्त्र और अमर्त्यसेन की आर्थिक व्याख्याओं तक का उपयोग किया जा सकता है। दरअसल तर्क से कुछ भी सिद्ध करने की आवश्यकता तभी पड़ती है, जब सत्य के समानातर बल्कि विपक्ष में एक बड़ा किन्तु अर्जित- कृत्रिम सत्य खड़ा करना होता है। जैसे दशहरे वाले दिन बाँस की खपच्चियों के सहारे एक राक्षसी पुतले को खड़ा किया जाता है। ठीक वैसे ही तार्किक, व्याख्याओं की खपच्चियों पर हम कुछ राक्षसी सत्यों को खड़े होते देखते हैं। वे आसपास के प्राकृत सत्यों की तुलना में दानवाकार तथा शक्तिशाली प्रतीत होते हैं। दरअसल उनकी सारी चमक-दमक बाहर चिपकाये गये उद्धरणों तथा व्याख्याओं के चमकीलेपन के कारण होती है। उनका वास्तविक रूप कुछ देर के बाद सामने आता है। जब देर तक शोर-शराबा करने के बाद वह राक्षसी कृत्रिमता अपने संपूर्ण खोखलेपन के साथ जमीन पर गिरती है। कहा जा रहा है कि प्रधानमंत्रियों को नियमों से ऊपर ही रखो। कहा यह भी गया है कि प्रधानमंत्रियों के ऊपर वे नियम लागू नहीं होने चाहिए जो सरकारी कर्मचारियों पर लागू होते हैं। क्या तर्क दिया जा सकता है ?

तर्क है कि प्रधानमंत्रियों को लोकहितों का ध्यान रखना होता है इसलिए वे बेचारे सत्य का दामन पकड़ कर नहीं चल सकते। उनके लिये लोकहित ही सर्वोपरि होते हैं। लोकहित में वे कुछ भी कर सकते हैं। आपातकाल लागू कर सकते हैं। और लोकहित में जबरन नसबंदियां करवा सकते हैं। प्रेस की स्वतंत्रता पर अंकुश लगा सकते हैं। और अपने बिगड़ैल बेटेको भारत के संपूर्ण संवैधानिक तंत्र के सिर पर बैठा सकते हैं। संत भिंडरावाले को प्रश्रय देकर पंजाब की राजनीति में आतंकवाद के बीज बो सकते हैं और फिर जहरीली फसल को काटने के लिए आपरेशन ब्लू स्टार भी करवा सकते हैं। राजीव गांधी की तरह लिट्टे प्रमुख प्रभाकरण के साथ प्रधानमंत्री आवास पर चाय पी सकते हैं। और फिर बाजी पलट जाने पर देश के हज़ारों सैनिकों की बलि चढ़ाने के लिए शांतिसेना भेज सकते हैं। चन्द्रशेखर की तरह चन्द्रास्वामियों से मित्रतायें निभा सकते हैं। और नरसिंहराव की तरह अपनी सरकार को बचाने के लिए जनता के धन का उपयोग विपक्षी सांसदों को खरीदने में कर सकते हैं। आगे चलकर प्रधानमंत्री लोकहित में देश की गोपनीय सूचनायें बाहर भेजने के लिए भी अधिकृत हो जायेंगे। क्योंकि लोकहित क्या है, यह तो केवल वही सर्वशक्तिमान सर्वबुद्धिमान प्रधानमंत्री ही बता सकता है। ईश्वर इन व्याख्याओं को उचित दीर्घायु दे। तर्क का सत्य से स्वाभाविक बैर है, क्योंकि तर्क कुछ भी सिद्ध करने का शास्त्र है और सत्य को सिद्ध होने की आवश्यकता नहीं होती है। वह सारे तर्कों से परे स्वयंसिद्ध होता है, किन्तु फिर भी तर्कशास्त्री अपने तर्कक्षेपणों से सत्य को सिद्ध करने का पराक्रम करते हैं और समान्य सत्य से इतर किसी नये सत्य को नवउद्घाटित सत्य के रूप में प्रतिष्ठापित करते हैं। स्वार्थग्रस्त बुद्धिजीविता की यही शाश्वत गति है। वह हमेशा कुछ काल्पनिक और कुछ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उद्घाटित सत्यों के उद्घाटन का मार्ग ढूँढ़ती है तथा प्रसन्न रहती है। इसने इतिहास क्रम में अपनी स्थिति तथा उपयोगिता प्रमाणित कर दी है। ऐसा नहीं होता, क्योंकि वास्तविक तथा सर्वमान्य सत्य अपनी अकाट्य स्थिति में दोबारा सूर्य के समान चमकने लगता है। यह मध्य का एक घटाटोप विभ्रम होता है। जो सूर्य के लुप्त हो जाने की प्रतीति देता है। तथ्यों पर लौटें, क्योंकि सत्य तक की यात्रा के वही प्रमाणिक पाथेय हैं।

भ्रष्टाचार तथा लोकहित की कौन सी संगति है? असत्य पर आधारित कोई भी कार्य तात्कालिक लोकहित अथवा व्यापक लोकहित में कैसे उपयोगी सिद्ध हो सकता है? अब तक कब ऐसा हुआ है कि असत्य के कंधे पर चढ़कर जो व्यवस्था तलाशी गयी हो वह व्यापक अर्थों में लोकगामी रही हो? वे सारे आदर्श तथा मानक जो सत्य से परे किसी लोकहित को तलाशने के पुरूषार्थ क्रम थे, कालांतर में देश-देशान्तरों में सामान्य लोकजीवन के लिए कौन से हितकारी आदर्श लेकर उपस्थित हुए? राम ने सीता के सत्य पर विश्वास न करके जो लोकहितकारी आदर्श प्रस्तुत किया था, उसकी अंतिम गति क्या थी? कथाएं कहती हैं कि राम के साथ संपूर्ण अयोध्या की प्रजा सरयू के जल में समा गयी थी?

हम कथाओं को तथ्य कैसे कह सकते हैं किन्तु यदि हमने पौराणिक आख्यानों को ही उनके तमाम क्षेपकों तथादंत कथाओं के साथ प्रमाणिक तथ्यों के रूप में स्वीकार करना शुरू कर दिया है तो निष्कर्ष निकालने से पहले हमें कथाओं के धरातल तक की यात्रा भी पूरी ईमानदारी के साथ करनी चाहिए। एक नारी के सत्य पर अविश्वास करके लोकप्रशंसा अर्जित करने का लाभ कालांतर में इतना भीषण पाप साबित हुआ कि उसके परिमार्जन की प्राकृत व्यवस्था में राम सहित पूरी अयोध्या सरयू में डूब मरी थी। जलसमाधि एक सुसंस्कृत तथा शालीन शब्द है, किन्तु डूब मरना एक महज सत्य है। असत्य के कंधों पर टिकी लोकहितकारी व्यवस्थायें इसी तरह अकाल मृत्यु को प्राप्त होती हैं, डूब मरती हैं। कांग्रेस एक समय की स्वतंत्रादायिनी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जो कभी गांधी के पीछे एक न रूकने वाले तूफान की तरह उठी थी। स्वतंत्र्योत्तर सत्ता प्राप्ति के काल में अपने बुद्धिजीवी दरबारियों के असत्य-प्रलापों में गले तक डूब गयी। तब आपालकाल अचानक अनुशासन पर्व हो गया, इंदिरा इज इंडिया एक जीवन दर्शन बन गया, संजय गांधी की ऐय्यशियों और उनके साथियों की सत्ता क्रीड़ाएं युगधर्म बन गयीं और एक लंबे समय तक माना गया कि प्रधानमंत्री के रूप में इंदिरा गांधी जो कुछ कहतीं और करती जा रही थीं वह सब देशहित में ही था।

जब आपालकाल चल रहा था तब भी कुछ स्वनामधन्य बुद्धिजीवी थे जो संजय गांधी को आने वाले कल का प्रभाव प्रमाणित कर रहे थे और उनके साथियों अकबर अहमद डम्पी तथा संजयसिंह सरीखे तत्कालीन युवा कांग्रेसियों की घृणित हरकतों का युवारक्त का स्वाभाविक उफान बता रहे थे। आपालकाल की कुछ व्यथायें इतनी घृणित हैं कि उनकी चर्चा करना भी भारतीय लोकतंत्र के शर्मनाक पृष्ठों को पलटने जैसी अनुभूति देता है। यह वही समय था जब सत्य को लोकहितों के नाम पर दबाया गया तथा हमने एक लंबी काली अंधेरी रात के दर्शन किये। किन्तु लोकतंत्र का सूर्य दोबारा चमका और वही सारे तर्क जो एक लंबे वक्त तक आपातकाल को लोकहितकारी और देशहितकारी सिद्ध कर रहे थे, जो बता रहे थे कि परिवार नियोजन के लिए बरती जा रही बर्बरताएं कितनी व्यापक मानवीय दृष्टि से संचालित हो रही थीं और प्रेस की स्वतंत्रता को दबाने के पीछे कितने दूरगामी लोकहितकारी दर्शन कार्य कर रहे थे, वे सारे लुप्त हो गये।

मैं जब भारतीय राजनीति के इतिहास के पृष्ठ पलटता हूँ तो पता चलता है कि देश की राजनीति, समाजनीति तथा अधिक नीतियां के क्षेत्रों में जो भी रूग्णातायें मौजूद हैं वे इसलिए नहीं हैं कि देश के राजनेता भ्रष्ट हो गये हैं या फिर नौकरशाही इस जगह पर हावी है या फिर संवैधानिक व्यवस्थाओं में छिद्र हैं या फिर अंग्रेजों के द्वारा छोड़े गये कानून अपनी विसंगतियां प्रकट करते रहते हैं, बल्कि हमारी व्यवस्था की तमाम विसंगतियां केवल इसलिए जीवित हैं तथा संपूर्ण व्यवस्था पर प्रभावी हैं, क्योंकि इन विसंगतियों को संगत व्याख्यायें देने वाले विचित्र मस्तिष्क लगभग हर क्षेत्र में हैं। वे यह भी बताते हैं कि कश्मीर समस्या को उलझाते रहने से कौन से फायदे हैं, श्रीलंका में तमिल उग्रवादियों को भारत का कूटनीतिक समर्थन देना कितना जरूरी हो गया था तथा कारगिल में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

पाकिस्तानी कब्जों के समय भारत के रक्षा मंत्रालय को गहरी नींद आने के कितने फायदे देश के खाते में आये हैं। दरअसल ये लोग वही होते हैं जो झूठ को तर्कपूर्ण तरीके से सच बनाने के माहिर माने जाते हैं और क्योंकि वे स्वयं को इस क्षेत्र के विशेषज्ञ के रूप में प्रमाणित कर चुके होते हैं। उनकी उपयोगिता हर ऐसी जगह पर तलाश ली जाती है जहाँ पर झूठ का सच के रूप में बदलना जरूरी हो जाता है। वे अपनी इस विशेषज्ञता के लिए पहचाने जाते हैं तभा इसके लाभ उठाते हैं। राजनीति हो या व्यापार हो, ताली हमेशा दो हाथों से बजती है। लेकिन बुद्धिजीविता के क्षेत्र में विशेष लाभ यह है कि इधर हाथों में हाथ एक ही व्यक्ति के हो सकते हैं। देखें और ध्यान दें। वही लोग जो उस समय मनमोहन सिंह की उदारवादी आर्थिक नीतियों के घनघोर आलोचक थे तथा इसे भारत के विरूद्ध बहुराष्ट्रीय कंपनियों का एक षड्यंत्र बताते थे, अब बहुराष्ट्रीय कंपनियों के पक्ष में हैं।

यह साबित किया जा रहा है कि सारी गड़बड़ियां इसलिए हैं क्योंकि इसमें हमने प्रधानमंत्री को भी संवैधानिक सीमाओं में बांध कर रख दिया है। वह बेचारा संवैधानिकसीमाओं में रहकर देश के लिए क्या कर सकता है ? अब तक जो भी प्रधानमंत्री देश के लिए कुछ नहीं कर पाये वह इसीलिए, क्योंकि उनके ऊपर संविधान नामक एक सत्ता काम कर रही थी। विद्वान व्याख्याकार चाहते हैं कि संविधान की शपथ खाने के बाद देश के प्रधानमंत्री का पदभार लेने के बाद एक व्यक्ति को हम संविधान की शक्ति से ऊपर स्थापित कर दें। सम्मानित व्याख्यता मानते हैं कि ऐसा करके हम प्रधानमंत्री को लोकतंत्र के संचालन को उपयुक्त अधिकार क्षमता प्रदान कर देंगे। तब वह सुनिश्चित भाव में सांसदों को खरीद सकेगा, और न बिकने वाले सांसदों को व्यापक लोकहित में रास्ते से हटा सकेगा। या फिर अपनी सरकार बचाने के लिए अमेरिका, रूस, चीन या पाकिस्तान से खुला सहयोग भी ले सकेगा। व्याख्याकार सिद्ध करते हैं कि प्रधानमंत्रियों को उन सारे संवैधानिक निर्धारणों से ऊपर रहना ही चाहिए जिनके अंतर्गत देश की सभी लोकहितकारी व्यवस्थायें संचालित होती हैं और व्याख्याकार सिद्ध करते हैं कि समस्या यही है कि मुख्य सत्तर्कता आयुक्त, न्यायिक मजिस्ट्रेट वगैरह को देश के प्रधानमंत्री से ऊपर मान लिया है। हमने ऐसा करके बहुत बड़ा अपराध किया है जिसका परिणाम हम भोग रहे हैं। इस उल्टी तर्कगंगा को जरा सीधा करके देखें तो क्या यह पूरा प्रकरण इसलिए घटित हुआ है, क्योंकि हमने प्रधानमंत्रियों को संवैधानिक तंत्र के अधीनस्त बनाये रखा है बल्कि ठीक इससे उलट यह प्रकरण सिर्फ इसलिए घटित हुआ है, क्योंकि हमने पदासीन मुख्यमंत्रियों, राज्यपालों, विधान सभाध्यक्षों, लोकसभाध्यक्षों तथा प्रधानमंत्रियों को संवैधानिक तंत्र के ऊपर खुद को प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त वैधानिक मार्ग दे रखे हैं।

अशांत दैनिक जीवन के कोलाहल के बीच शांति, प्रार्थना, जाप के संगीतमय स्वर भक्ति भाव जगाने, तथा क्रोध को नियंत्रित करने एवं मानसिक शांति के लिए सुनें

श्री कंचन कुमार के वैदिक भजन कैसेट्स

उड़ेगा हंस अकेला

सत्संग प्रसाद -1

प्रार्थना सुमन

ओउम् जपो

सत्संग प्रसाद -2

परदेसी हंसा

वेदकथा वार्षिकोत्सव में भजन सत्संग सेवा उपलब्ध है

कैसेट प्राप्ति स्थान – कंचन कुमार (भजनोपदेशक) 208-B निकट खातिर रेस्टोरेंट, पश्चिम विहार एक्सटेंशन नई दिल्ली-६३
थोक एवं फुटकर कैसेट विक्रेता सम्पर्क करें।

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैं हिन्दू क्यों हूं ?

—लता मंगेशकर

प्रत्येक व्यक्ति उस धर्म से, जिसमें उसने जन्म लिया, उतना ही प्रेम करता है, जितना मछली पानी से अथवा पक्षी हवा से। बहुत कम ऐसा होता है कि कोई अपने जन्म और पालन-पोषण वाले धर्म पर आक्षेप करें। हां, यह बात दूसरी है कि किसी गम्भीर असामंजस्य के तत्त्व किसी के अस्तित्व में प्रवेश करें अथवा किसी की जीवन स्थिति में प्रतिकूल ढंग से प्रवेश कर जायें।

मेरा अस्तित्व हिन्दुत्व से जुड़ा हुआ है।

मेरे जन्म और पालन-पोषण का अर्थ हिन्दुत्व (वैदिक धर्म) है। मेरा अस्तित्व इससे जुड़ा हुआ है। इसने मेरे जीवन में मुझे प्रेरित किया है और मेरा रक्षा की है। इसने मेरे अन्दर आन्तरिक और बाह्य संसार से सामंजस्य की गहरी समझ पैदा की है— प्रकृति और सामंजस्य।

संगीत हिन्दुत्व का आवश्यक अंग है।

जैसे हिन्दुत्व स्थान और समय अर्थात् भारत के लिए आवश्यक है, सामंजस्य की भावना भी हिन्दुत्व के लिए आवश्यक है। हिन्दुत्व की व्यापक भावना सामंजस्य पैदा करती है। हिन्दुत्व ने भारत को जो प्रकृति और संस्कृति प्रदान की है, वह समृद्ध और विविध है। मेरे विचार में संगीत हिन्दुत्व का आवश्यक तत्त्व है।

मैं अपने धर्म के प्रति कृतज्ञ हूँ।

इस धर्म के सब कर्मकाण्ड और पर्व संगीतमय हैं। मेरा प्राथमिक कर्त्तव्य यह है कि मैं संगीत जगत् में कर्मकाण्ड और पर्वो को प्रविष्ट करूं। मैं संगीत की महान् देन के लिए अपने धर्म के प्रति सदैव कृतज्ञ हूँ।

हिन्दुत्व ब्रह्माण्ड के नियमों के अनुकूल है।

ऊर्जा और समय के संसार चक्र का नियम भारतीय संगीत का एक पवित्र तत्त्व है। यह भी ब्रह्माण्ड विज्ञान की प्राचीन गाथाओं में ब्रह्माण्ड के नियमों में गुंथा जाकर वर्णित है। हमारी धर्म पुस्तकों में बारम्बार इसका वर्णन किया गया है। हमारी प्राचीन गाथायें कितनी लोकप्रिय हैं और हमारे कवि और संगीत उनके कितने कृतज्ञ हैं ?

हमारी भूमि का प्रभामण्डल दैवी है।

उनकेविकास के लिए सर्वव्यापक भावना गहनता से टौर निरन्तर अन्तर्निहित है। इस प्रकार अस्तित्व की भावना में अनिवार्यता प्राणवान् है और दृश्य-श्रव्य की अपनी ठोस सत्ता है। हमारीं नदियां और पर्वत, हमारे अच्छी पृथ्वी और अन्य सब बातें, जो इसके वरदानों से लाभ उठाती हैं, भौतिक आकार युक्त हैं और उसका अपना दैवी प्रभामण्डल है। हिन्दुत्व मनुष्य को प्रकृति के उपेक्षापूर्ण दोहन से रोकता है।

आज के युग के लिए हिन्दू जीवन पद्धति धर्म निरपेक्षता और विज्ञान के आज के युग की मान्यताओं को अनुकूलता के साथ सन्तुलित कर सकते हैं। धर्म निरपेक्षता और विज्ञान सम्भवतः व्यक्तिवाद और भौतिकता केअहंकार केन्द्रित पहलुओं पर आवश्यकता से अधिक जोर देते हैं। पर्यावरण का संदेश न तो वैदिक (हिन्दू) विचार के सन्दर्भ में अप्रासंगिक है और न नया है।

हिन्दुत्व सम्पूर्ण अस्तित्व के साथ एकता की भावना को बढ़ाता है।

हिन्दुत्व की समृद्ध विभिन्नता स्वभावतः हिन्दू मस्तिष्क में सहिष्णुता और सह-अस्तित्व का संवर्धन करने वाली भावना भरती है। इसकी अनिवार्य एकता सारे अस्तित्व की एकता की भावना बढ़ाती है।

सारा संसार हिन्दुत्व के नियमों का पालन कर सकता है।

हिन्दुत्व न तो जड़ है और न यह सिद्धान्त की लम्बी चौड़ी बहस में पड़ता है। हिन्दुत्व के नियमों में परिवर्तन होते रहते हैं और यह अपने सत्तात्मक पहलू में लोचदार है। इसके बावजूद यह शाश्वत है। यह ऐसा है कि सारा संसार इसके नियमों का पालन कर सकता है। अपने वैयक्तिक, सार्वभौम और भावातीत पहलुओं में हिन्दुत्व का ढांचा सर्वग्राही है, लेकिन इसके बावजूद यह किसी को विवश नहीं करता कि उसे ग्रहण किया ही जाये।

जन-जन की भाषा है हिन्दी, भारत माता के मस्तक की बिन्दी

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। हिन्दी का प्रचार प्रसार करना हम सभी का दायित्व है। अत: आप अपने सभी लेखन कार्य, पत्र तथा निमन्त्रण पत्र अपने हस्ताक्षर आदि देवनागरी लिपी में ही लिखने का निर्णय करें।— संपादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऐतिहासिक कहानी

अपूर्ण बलिदानी वह बालक राजा

— राजेश्वरनाथ मिश्र

दक्षिण भारत में हैदराबाद के निकट जोरापुर की एक छोटी सी रियासत थी। यहां का राजा व्यं. राव बहुत कम उम्र का बालक था। १८५७ ई. के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारियों का वह प्रबल पक्षधर था। अंग्रेजों से लोहा लेने के लिए उसने अरब और रूहेला पठानों की एक शक्तिशाली सेना संगठित की थी। तत्कालीन हैदराबाद का निजाम अफजलुद्दौला अंग्रेजों का पक्का मददगार था। ब्रिटिश शासकों ने उसे विशेष रूप से पुरस्कृत किया था। निजाम को बरार प्रांत लौटा दिया गया तथा उसके ऋण को भी माफ कर दिया गया। निजाम का प्रधान मंत्री सालारजंग भी अंग्रेजों का पूर्णभक्त था। वह देशभक्त स्वाधीनता संग्राम सेनानियों को पकड़वाकर अंग्रेजों के हवाले करा देता था। उसकी इसी वफादारी के कारण ब्रिटिश सरकार ने उसे सर की उपाधि प्रदान की थी। यूरोपीय इतिहासकारों ने ग्वालियर के मंत्री सर दिनकरराव तथा हैदराबाद के मंत्री सर सालारजंग की राजभक्ति की बहुत प्रशंसा की है।

जब सालारजंग को जोरापुर रियासत के इस वीर बालक राजा की सैनिक गतिविधि की गुप्त सूचना मिली तो वह चौकन्ना हो गया। उसने एक सुनियोति षडयंत्र रचा। फरवरी १८५८ ई. में बालक राजा को हैदराबाद आमंत्रित किया गया। यहां आने पर सालारजंग ने विश्वासघात का सबसे निकृष्टतम नमूना पेश करते हुए उसे कैद कराकर अंग्रेजों को सौंप दिया। गिरफ्तारी के वाद भी बालक राजा के वीरोचित व्यवहार में कोई परिवर्तन परिलक्षित नहीं हुआ। देश-भक्ति की भावना से ओतप्रोत उसका आचरण सदैव प्रशंसनीय बना रहा। मीडोल टेलर नाम का एक अंग्रेज अधिकारी राजा की निगरानी रखता था। धीरे-धीरे बालक राजा इसके साथ काफी हिलमिल गया और उसे प्यार से अप्पा कहकर पुकारता था।

एक बार मीडोज टेलर बालक राजा से मिलने जेल आया। राजा उससे बड़े हर्ष के साथ मिला। तरह-तरह का प्रलोभन देकर उसने राजा की अगाध देशभक्ति को बदलने की चेष्टा की। अंग्रेज रेजीडेन्ट से मिलकर क्षमा याचना करने की उसने राय दी। उसे सुनकर बालक राजा ने कहा, 'आपकी यह नेक सलाह मेरे गले के नीचे नहीं उतरती। रेजीडेन्ट को यह विश्वास होगा कि उसके समक्ष नतमस्तक होकर मैं अपनी प्राणरक्षा के लिए प्रार्थना करूंगा, परन्तु उसका यह सोचना नितांत गलत है। मैं कायरतापूर्ण जीवन जीने की अपेक्षा मृत्यु का वरण श्रेयस्कर समझता हूं।' जब मीडोज टेलर ने उससे अन्य क्रांतिकारी नेताओं के बारे में जानना चाहा तो वह क्रोध से उबल पड़ा और गर्वीले स्वर से बोला—'मैं देशभक्त वीरों के नाम बताकर देशद्रोह का 'कलंक अपने सिर कभी नहीं ले सकता। ऐसा करना जघन्य अपराध होगा। एक बार फिर मीडोज टेलर ने बालक राजा को फुसलाकर विद्रोहियों के गुप्त ठिकानों के बारे में कुछ जानना चाहा तो बालक राजा टेलर को फटकारते हुए बोला-'ऐसा पूछते हुए आपको शर्म आनी चाहिए। मैं मृत्यु का सहर्ष आलिंगन करने के लिए तैयार हूँ। तोप फांसी तथा कालापानी से भी बढ़कर देशवासियों के साथ गद्दारी करना होता है।' जब टेलर ने कहा कि क्रांतिकारियों की मदद करने के अपराध में उसे मृत्यु दंड दिया जायेगा तब बालक राजा ने बड़ी निर्भीकता से कहा, 'देश हित में प्राण त्याग करने में मैं अपना परम सौभाग्य समझूंगा। आप से मेरा एक ही निवेदन है कि कुछ ऐसा उपाय कीजिये जिससे चोर-डाकू की तरह मुझे फांसी पर न लटकाया जाय। तोप के गोले से मुझे उड़ा दिया जाय। ऐसी मृत्यु पाकर मुझे अपार गौरव का अनुभव होगा।' टेलर के सारे प्रयत्न व्यर्थ हो गये। बालक राजा अपने दृढ़ संकल्प पर अटल रहा। मीडोज टेलर के प्रयासों के परिणाम स्वरूप मृत्यु दंड दण्ड के स्थान पर बालक राजा को कालापानी की सजा सुनाई गई। जब सुरक्षा कर्मी उसे पानी के जहाज से अंडमान (कालेपानी) ले जा रहे थे तो बालक राजा ने एक अंग्रेज पहरेदार से खेल के बहाने उसकी पिस्तौल मांग ली। थोड़ी देर तक इस पिस्तौल के साथ वह खेलता रहा, फिर मौका पाकर उसने अपने सीने में गोली मार ली। कुछ क्षण के बाद उसके प्राण पखेरु उड़ गये। मृत्यु के एक दिन पूर्व बालक राजा ने कहा था - 'कालेपानी की अपेक्षा मैं मृत्यु को गले लगाना ज्यादा

(शेष पृष्ठ ४४ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जो इतिहास बनाते उनका तू इतिहास बनाती

—सुन्दर लाल 'अरूणेश' — नया सरदारी खेड़ा, आलमवाग, लखनऊ

नारी तू अनुरक्ति शक्ति है अप्रतिम नर के कर की।
तू ही तो है भक्ति मनुज के भावुक अभ्यन्तर की।
तू प्रतिभा है त्याग, दया, करूणा धीरज, ममता की।
खुली हुई पावन पुस्तक है, क्षमता की, समता की।
सहन शक्ति धरती-सी तुझ में, अम्बुधि-सी गहराई।
गंगाजल-सा निर्मल मन है, पर्वत-सी ऊंचाई॥
तू शुचि-संचालिका गृहस्थी जैसे तप-वन की है।
तू मोहक मुस्कान मनुज के तन की है, मन की है॥
तू है नौका एक निराली, इस संसृति-सागर की।
जीवन-रथ की धुरी, साथ ही परिपूरक है नर की।
अगर न तू होती तो वसुधा, मरघट-सी दिखलाती।
तेरा प्यार न मिलता, नर की शक्ति न कुछ कर पाती॥

जो पुरुषार्थ पुरुष करता है, उसमें कितना बल है।
उसमें अन्तर्निहित साधिके। तेरा दृढ़ सम्बल है॥
तेरे बिना मनुज का जीवन रहता सदा अधूरा।
पा तेरा सहयोग हुआ करता हर सपना पूरा॥
मां, बेटी, भगिनी, भाभी का तूने रूप उतारा।
तू बन सहधर्मिणी मनुज को देती रही सहारा॥
तू ही दुर्गावती सती, हाड़ी रानी दीवानी।
जीजा, पन्ना और पद्मिनी, तू झांसी की रानी।
अपने अतुल तेज से पतझड़ को मधुमास बनाती।
जो इतिहास बनाते उनका तू इतिहास बनाती॥
मुक्ति-मुक्ति की तू देवी है विधि की काबिल कला है।
तुझको अबला कहना मिथ्या, नारी। तू सबला है।

(पृष्ठ ४३ का शेष)

पसंद करता हूं। मेरी प्रजा का सबसे तुच्छ व्यक्ति भी जेल की दीवारों में रहना स्वीकार नहीं करेगा।

मैं राजा होकर कैद और काला पानी की सजा कैसे बर्दाश्त कर सकता हूं। इस वीर बालक राजा की अमर कहानी का विस्तृत विवरण मीडोज टेलर ने अपनी अंग्रेजी पुस्तक "द स्टोरी आफ माई लाइफ" (इडिन वर्ग. लंदन १९७८) में दिया है। जोरापुर के राजा का एक साथी नारकुण्ड का राजा भास्करराव बाबासाहब था। उसने भी अंग्रेजों के विरूद्ध २५ मई १८५८ ई. में युद्ध का ऐलान किया था। अंग्रेजी सेना को उसने बुरी तरह पराजित किया। बाद में सौतेले भाई की गद्दारी के कारण वह पराजित हुआ। अंग्रेजों ने उसे गिरफ्तार कराकर १२ जून १८५८ ई. में फांसी पर लटका दिया था। उसकी रानी और मां दोनों ने मालप्रभा नदी में कूदकर आत्महत्या कर ली। ऐसे शहीदों की गौरव गाथाएं देशवासियों के लिए सदैव प्रेरणा का स्रोत बनी रहेंगी। □ □ □

गजानन्द आर्य परोपकारिणी सभा के प्रधान

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा अजमेर में हुए त्रिवार्षिक चुनाव में वैदिकविद्वान् कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री गजानन्द आर्य (कलकत्ता) को सर्वसम्मति से प्रधान तथा डॉ. धर्मवीर (अजमेर) मंत्री एवं श्री ओमप्रकाश झंवर (ब्यावर) को सभा का संयुक्त मन्त्री चुना गया। परोपकारिणी सभा की बैठक में प्रधान पद के लिए श्री गजानन्द आर्य के नाम का प्रस्ताव प्रख्यात संन्यासी एवं सभा के निवर्तमान प्रधान स्वामी सर्वानन्द ने रखा। सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी ने किया। स्वामी धर्मानन्द (आबूपर्वत), प्रो. शेरसिंह (दिल्ली) तथा श्री मित्रसेन (रोहतक) उपप्रधान श्री कर्मचन्द गुप्त (अजमेर) कोषाध्यक्ष, श्री रामगोपाल गर्ग (अजमेर) सह-कोषाध्यक्ष तथा पुस्तकालयाध्यक्ष पंडित डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई) को चुना गया।

तिलक धारण का वैज्ञानिक रहस्य

हमारे ज्ञान-तंतुओं का विचारक केन्द्र भूकटि और ललाट का मध्य भाग है। जब हम मस्तिष्क से अधिक काम लेते हैं तो इसी केन्द्र में वेदना अनुभव होने लगती है। अतः हमारे महर्षियों ने तिलक धारण करने का विधान किया। चंदन की महिमा सभी वैद्य-हकीम-डाक्टर जानते हैं। मस्तिष्क के केन्द्र बिन्दु पर चंदन का तिलक ज्ञान तन्तुओं को संयमित एवं सक्रिय रखता है। ऐसे जातक को कभी सिर-दर्द नहीं रहता तथा उसकी मेधाशक्ति तेज रहती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

३१अक्तूबर २००० को सड़क दुर्घटना में दिवंगत

स्वाध्यायप्रिय धर्मसिंह

— मनमोहन कुमार आर्य

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में शिक्षा पूरी करने पर गुरु शिष्य को दीक्षा में जिन व्रतों का उपदेश करता था उसमें एक उपदेश होता है कि "हम जीवन में स्वाध्याय से प्रमाद कभी न करें।" देहरादून में आर्य समाज के निष्ठावान अनुयायी श्री धर्मपाल सिंह ने इस शिक्षा को अपने जीवन में प्रमुख स्थान दिया था जिससे देहरादून जनपद सहित अन्यत्र भी वह एक सजग, सक्रिय, स्वाध्यायशील विद्वान के रूप में जाने जाते थे। इस गुण से उनके व्यक्तित्व में भी एक विशेष परिवर्तन आया था जो अन्यों में दुर्लभ ही देखा गया है। महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज के प्रति पूर्ण निष्ठावान श्री धर्मपाल सिंह का जन्म १८ जुलाई १९५३ को देहरादून में हुआ था। आप के पिता श्री शेरसिंह भी आर्यसमाज के अनुयायी थे। आर्यसमाज के प्रति अनुराग व निष्ठा धर्मपाल जी को अपने पिता से दायभाग में प्राप्त हुई थी। लगभग १२ वर्ष की अवस्था में पिता का साया आपके सिर से उठ गया था। परिवार में बड़े भाई मानसिक रूप से क्षीणबुद्धि होने के कारण आपकी माता की सूझबूझ व धर्मपाल जी के अध्यवसाय से परिवार न केवल सामान्य रूप से जीवन निर्वाह करने में सफल हुआ। अपितु सभी भाई बहन अपनी-अपनी बौद्धिक क्षमताओं के अनुरूप शिक्षित होकर समाज में सम्मानित जीवन व्यतीत कर रहे हैं। शिक्षा की दृष्टि से आप विज्ञान स्नातक, अर्थशास्त्र में स्नात्कोत्तर उपाधि तथा अपूर्ण स्नातकीय विधि शिक्षा में प्रवीण हुए। सन् १९८२ के पूर्वाद्ध में आपने आर्य समाज की विचारधारा के अनुरूप, जन्म पर आधारित जाति के विपरीत, शिक्षित एवं कार्यरत कन्या आयुष्मति आशा जी से विवाह किया। आपके ३ पुत्र हुए। बड़े पुत्र का शैशव अवस्था में ही एक दुर्घटना में देहान्त हो गया था। व्यवसायिक दृष्टि से आपने डाक विभाग में पोस्टमैन के पद से कार्य आरम्भ किया। कुछ ही महीनों के बाद आप केन्द्रीय जल संरक्षण विभाग में नियुक्त हुए और इसके पश्चात सन् १९९० में आप उत्तर प्रदेश राज्य में लेखा सेना में नियुक्त हुए। इस समय आप पौड़ी एवं रामनगर स्थित कार्यालयों के खण्डीय लेखा अधिकारी के पद पर कार्यरत रहते हुए अपने परिवार के साथ सुखी जीवन व्यतीत कर रहे थे। श्री धर्मपाल ने अपनी युवावस्था के दिनों से ही अपना अधिकांश समय वैदिक साहित्य के स्वाध्याय, सत्संगों में उपदेश श्रवण एवं आर्यसमाज के यत्र तत्र होने वाले आयोजनों में भाग लेने में व्यतीत किया। नियमित व निरन्तर स्वाध्याय के गुण के कारण आर्यसमाज के सिद्धान्तों, आन्दोलन के इतिहास व समाज के महापुरूषों के प्रति उनका ज्ञान निरन्तर बढ़ता ही गया।

आर्यसमाज के सिद्धान्तों, इतिहास एवं साहित्य के इतिहास के संबंध में ज्ञान की दृष्टि से धर्मपाल जी देहरादून जनपद में इने गिने अग्रणीय लोगों में से एक थे। अपने निजी अनुभव के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि आर्यसमाज संबंधी विभिन्न विषयों पर वार्ता करने का जो आनन्द उनसे बातचीत में किसी को हो सकता था वैसा व्यक्ति देहरादून में दूसरा नहीं है। यही कारण है कि उनसे इन पंक्तियों के लेखक का सम्पर्क पहले मित्रता में परिवतर्तित हुआ और बाद में उनके प्रभाव से वह भी आर्यसमाज का अनुयायी बना। स्वाध्याय के लिए श्री धर्मपाल के पास अपनी निजी पुस्तकों का विशाल संग्रह था जो निःसंकोच किसी भी स्थानीय आर्य पुस्तक के भण्डार में सर्वाधिक ही कहा जा सकता है। विगत बीस-तीस वर्षों में प्रकाशित हुई सभी महत्वपूर्ण पुस्तकें, अपवाद को छोड़कर, सभी उनके पास थीं। आर्यसमाज में कुछ प्रकाशक हैं जो आज की विपरीत परिस्थितियों में भी अप्राप्य एवं नूतन साहित्य का प्रकाशन कर रहे हैं। धर्मपाल जी का ध्यान भी इस ओर सक्रिय रहता था कि आगामी प्रकाशनों में क्या आना चाहिये। सम्प्रति वह डा. भवानीलाल भारतीय की "नवजागरण के पुरोधाः महर्षि दयानन्द सरस्वती" के संशोधन व परिवर्धन की आवश्यकता अनुभव करते थे।

मास्टर लक्ष्मण आर्योपदेशक रचित स्वामी दयानन्द की उर्दू जीवनी के हिन्दी अनुवाद व प्रकाशन के प्रति भी वह लम्बे समय से उत्सुक थे और समय-समय पर प्रेरित करते रहते थे। हमने पहले प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी से स्वामी जगदीश्वरानन्द जी से इस संबंध में निवेदन किया सम्प्रति उर्दू जीवनी की वृहद भूमिका का हिन्दी अनुवाद "मतमतान्तरों का आदि-स्रोत- वेद" नाम से पृथक से प्रकाशित हो चुका है। धर्मपाल जी समय-समय पर आर्य समाज में सत्यार्थप्रकाश का पाठ कर उसके कठिन स्थलों की व्याख्या भी किया करते थे। वेदप्रचार समिति, देहरादून द्वारा आयोजित सत्संगों में भी आप समय-समय पर आर्य समाज की विचारधारा पर प्रवचन करते थे। उनका जीवन, सरकारीसेवा कार्यालय, देहरादून से अति दूर एवं पर्वतीय व दुर्गम स्थान में होने के कारण अत्यन्त व्यस्त रहता था। इस पर भी वह आर्यसमाज के आयोजनों में पहुंच जाते थे और पर्याप्त समय देते थे।

वे निष्ठावान एवं कट्टर आर्यसमाजी थे। उनके

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हृदय में किसी के प्रति असम्मान व द्वेष नहीं था। देहरादून में जब भी आशाराम बापू, सुधांशु जी महाराज, गायत्री परिवार या अन्य किसी मत या संस्था के सत्संग आयोजित किए गए तो वह वहां परिवार सहित अवश्य जाते थे और बाद में आर्यसमाज के विचारों से उसकी तुलना कर मित्रों में आर्यसमाज की महत्ता प्रकाशित करते थे। धर्मपाल जी की आर्यसमाजी मित्रों की मण्डली काफी विस्तृत थी। वह एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने विपन्नता में सभी की आर्थिक सहायता की।

श्री धर्मपाल का जीवन अत्यन्त सरल था। उन्हें न तो कीमती वस्त्रों का शौक था और न ही सुसज्जित निवास में रहने की कामना या आवागमन में निजी कार का प्रयोग। इनकी अनुपस्थिति के कारण उनके मन में कभी विषाद का कोई चिन्ह नहीं देखने को मिला। ऐसा नहीं था कि साधनों का कोई अभाव था। उनकी बातों से अनुभव होता था कि साधन सम्पन्न होकर भी मनुष्य को अपने पारिवारिक जनों के स्तर व सामर्थ्य का ध्यान रखते हुए स्वं को प्रायः वैसा ही रखना चाहिये। पिछले दिनों उन्होंने एक पाश कालोनी में भव्य आवास का निर्माण कराया था जो गृह प्रवेश के लिए तैयार है। इससे पूर्व कि वह नये आवास में गृह प्रवेश करते उसे अपने परिवार के अन्य सदस्यों के लिए तैयार कराकर संसार से ही चल दिए। दीपावली से एक दिन पूर्व २५ अक्तूबर को उन्होंने परिवार के सदस्यों के साथ अपने नये निवास में वैदिक यज्ञ किया था। अपने परिवार के सभी भाई-बहिनों-पत्नी एवं उनके परिवारों तथा मित्रों के प्रति उनमें पूर्ण स्नेह, सहायता एवं सहयोग की भावना थी।

— १९६ ब्लाक दो चुक्खूवाला, देहरादून

वेद प्रचार यज्ञ में प्राप्त सहयोग

सर्वश्री :- डा. मोहनी कुमार, नई दिल्ली - ५१०००रु.। कृष्ण कुमार मिश्रा, समस्तीपुर- ५००० रु.। प्रभादेवी, न्यूयार्क २०००रू.। दीनानाथ मल्होत्रा, दिल्ली ५०० रु.। स्व. रामदेव एवं कमलादेवी पुस्तकालय, दिल्ली - २५० रु.। रमेश प्रसाद गुप्ता, सिलीगुड़ी - ३०० रु.। कपिल देवमिश्र, चमोली २०० रू.। रतीराम शर्मा, सिलीगुड़ी-२०० रु.। रामहेतसिंह, मुजफ्फरनगर- २०० रु.। महेन्द्र कुमार- अलीगढ़ - १५१ रु.। मोहन लाल, सिहोर- १५० रु.। आर्य समाज, नीमच-५० रु.। चतुरानन्द मिश्रा, बक्सर - ५० रु.। रामनारायण शर्मा, सरगुजा-५० रु.। भरतसिंह आर्य, कलकत्ता - ५०रु.। एतवारी लाल गुप्ता, गिरीडीह - ५० रु.। शिवकुमार, मुजफ्फरपुर - ५० रु.। जे. मिस्त्री, गांधी नगर ४१ रु.। रामशरण वैश्य, सुल्तानपुर - ४० रू.। नागेन्द्र सिंह, उन्नाव- ३१ रु.। जे. सी. गिरधर, दिल्ली - ३१ रु.। शिवदास शर्मा मेरठ - ३१ रु.। एल. के. सहगल, ठाणे- ३१ रु.। भरतसिंह, सिंहभूमि,- ३१ रु.। शंकरप्रसाद, इलाहाबाद - ३० रु.। ईश्वरलाल -गढ़हरा- ३० रु.। आर्य समाज, धरौली -२० रु.। एस. के. मुरारका, शिलांग- २० रु.1बजरंग लाल अग्रवाल, कालाहांडी- २५ रु.। प्रतापसिंह नागपुर- २५ रु.। मुन्नीदेवी, गाजीपुर - २५ रु.। नरोत्तम जेठालाल, बम्बई - २५ रु.। हरनारायणलाल, सिद्धार्थ नगर - २५ रु.। रामनारायण सिंह - बांका- २५ रु.। बी. डी. वार्ष्णेय, बरेली - २५ रु.। कमलचौहान, मुम्बई - २५ रु.। पन्नालाल महेशचन्द्र, जौनपुर २५ रु.। केदारनाथ गुलाटी, लखनऊ २५ रु.। महिला आर्य समाज, चांदपुर २५ रु.। सूर्यदेव पंडित, सीतामढ़ी, २५ रु.। प्रो. कृष्ण किंकरसिंह, बांका - १५ रु.।

१०१ रु. देने वाले

सर्वश्री :- नरेन्द्रमोहन, दिल्ली। शशीभूषण आर्य, देवरिया। पं. शंकरलाल हंस-दिल्ली। डा. बी. बी छित्तल, गुड़गांव। चन्द्रमोहन टिक्कू उज्जैन। डा. सत्यवीर त्यागी। दिल्ली। ओमप्रकाश पारीक, अहमदाबाद।

१०० रु. देने वाले

सर्वश्री :- संजीवकुमारसिंह, बरेली। ब्रिजेन्द्रपालसिंह, पीलीभीत। डा. आनन्दस्वरूप, रूड़की। लाखनसिंह कुशवाहा, टीकमगढ़। यशपाल, बीकानेर। जे. एस. चूड़ासभा, मुम्बई। छीमावती, हरिद्वार। बलवीरसिंह, कानपुर। गनेशराज मिश्रा, मुम्बई। छोगालाल मदनलाल, नागौर। रामकिशोर गर्ग, बाढ़मेर। शिवनाथराम, संतकबीरनगर। एतवारीलाल गुप्ता, अलीगढ़। सत्यवती अलुवालिया, दिल्ली। इन्द्रजीतसिंह, बस्ती। रामशरण वैश्य, सुल्तानपुर। हीरालाल मुन्शीलाल, सिक्किम। डा. हरिशंकरलाल, सिद्धार्थनगर। डा. यदुत्तमसिंह, रीवां। जितेन्द्रनाथ सिंह, आजमगढ़। विशनदास आर्य, करनाल।

५१ रु. देने वाले

सर्वश्री :- रामचरित्र गुप्ता, गोरखपुर। मुन्नीदेवी, इलाहाबाद। कन्हैयासिंह, रानीगंज। सुनीत बंसल, दिल्ली। डा. रामवती कनौजिया, हरदोई। विद्यासागर झालानी, जयपुर। राधेश्याम,सोनभद्रा। श्यामलाल गुप्ता। चौ. रतीराम वर्मा, दिल्ली। हरपालसिंह -बरेली। के. वी. गुप्ता, बहादुरपुर।

२१ रु. देने वाले

सर्वश्री :- पी. डी. ओबेराय, दिल्ली। शिवधारी सिंह, मुंगेर। डा. डी. एन. असमवार-वर्धा। रामकिशोर गुप्ता, बिसौली। राजेन्द्रप्रसाद भभुआ। हंसराज कोतवाल, पौढ़ी। अभिताभ कु. जायसवाल, सोनभद्र। सत्यनारायण अग्रवाल, कलकत्ता। योगराज, मण्डी। रामचन्द्र मिश्र, दरभंगा। शिकारीलाल, चम्पारण। श्रीनिवास, पारीक, संदम। आर. एस. थोराट, औरंगाबाद। मोहनलाल दुबे, नागपुर। जयकरणलाल जायसवाल, प्रतापगढ़। छोटे लाल, सीतापुर,। रामभरोसेलाल आर्य, बरेली। डा. त्रिवेणीदत्त आजमगढ़। छोटेलाल गुप्ता, हरदोई। सोमनाथ कपूर, लखनऊ। कृष्णदत्त शर्मा कालिम्पोंग। जगदीशचन्द्र, कलकत्ता। प्रहलादसिंह श्रीवास्तव, रायबरेली।

(सभी दानदाताओं का धन्यवाद)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तद् बहिष्कारः

— लक्ष्मीदत्त दीक्षित

देश की आर्थिक स्थिति को सुधारने के उद्देश्य से, विदेशी वस्तुओं तथा रहन-सहन का बहिष्कार करने और स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने की प्रेरणा करते हुए दयानन्द ने बड़े जोरदार शब्दों में लिखा है "इतने ही से समझ लेओ कि (यूरोपियन) अपने देश के जूतों का भी जितना मान प्रतिष्ठा करते हैं उतना भी अन्य देशस्थ मनुष्यों का नहीं करते। देखो! कुछ सौ वर्ष से ऊपर इस देश में आये यूरोपियनों को हुए और आज तक यह लोग वही कपड़े आदि पहनते हैं जैसे कि स्वदेश में पहनते थे परन्तु उन्होंने अपने देश का चाल-चलन नहीं छोड़ा और तुम में से बहुत से लोगों ने उनकी नकल कर ली। इससे तुम निर्बुद्धि और वे बुद्धिमान ठहरते हैं। अनुकरण करना किसी बुद्धिमान का कार्य नहीं। वे अपने देश वालों को व्यापार आदि में सहाय देते हैं, इत्यादि गुणों और अच्छे कर्मों से उनकी उन्नति है।"

❑ संस्कार विधि में भी महर्षि ने विवाह संस्कार के प्रकरण में विशुद्ध स्वदेशी, वस्त्रों का प्रयोग करना ठहराया है :-

"अन्य देशस्थ मनुष्यों का इतना भी मान नहीं करते जितना अपने देश के बने जूते का।' ❑ महर्षि दयानन्द के हृदय में विदेशी शासन और विदेशी वस्तुओं के प्रयोग के प्रति कितनी तीव्र घृणा होगी। छावनी निवासी ठाकुर ऊधोसिंह को विदेशी वेश-भूषा में देखकर महर्षि ने बड़े मार्मिक शब्दों में कहा था— "क्या तुम इस विदेशी कपड़े से बने नये वेष से विभूषित होकर अपने पिता से अधिक सुसंस्कृत हो गये हो ? अपने ही देश की वस्तु वेष को अपनाने में शोभा है।" ❑ वास्तव में स्वामी जी के आचार-विचार रहन-सहन, वेष-भूषा, मस्तिष्क, हृदय, सभी पर स्वदेश की छाप थी। उनका अन्दर और बाहर सभी स्वदेशी के रंग में रंगा था।

आप हमारी सहायता इस प्रकार भी कर सकते हैं

१. परमात्मा की अमरवाणी "चारों वेदों का हिन्दीभाष्य" मूल्य १६०० रु. अभी १२०० रू. में। आदेश के साथ सम्पूर्ण धन १२००रू. भेजकर २०० रू. का साहित्य उपहार में प्राप्त करें। आज ही वेद भाष्य अपने तथा अधिक से अधिक अपने मित्र परिवारों में लायें। डाक में मंगाने पर अस्सी रूपये अधिक लगेंगे।

२. बढ़िया पेपर पर छपा चारों वेदों का हिन्दी भाष्य मूल्य ३२०० रू. अभी २२५० रू. में प्राप्त करें। साथ ही ३५० रू. का उत्तम साहित्य भी उपहार में दिया जा रहा है।

३. विगत चौंतीस वर्षों में लगातार वैदिक धर्म में प्रचार में संलग्न मासिक "जनज्ञान" के सदस्य बनें और अपने मित्रों को बनायें। वार्षिक शुल्क ८० रुपये है। ५०१ रुपये में आजीवन सदस्य बनकर २००/- रु. का श्रेष्ठ साहित्य भी उपहार में प्राप्त करें।

४. प्रतिमास "जनज्ञान" की कम से कम दस प्रतियां प्रचारार्थ ४०/- रूपये में मंगाकर बांटे तथा "जनज्ञान" मासिक में विज्ञापन देकर हमारे राष्ट्र जागृति अभियान" में सहयोग प्रदान करें।

५. संस्थान ने बीस से अधिक ट्रैक्ट वेद प्रचार तथा हिन्दू जागरण अभियान को गतिमान बनाने हेतु प्रकाशित किए हैं, जिसकी सूची प्रतिमास "जनज्ञान मासिक" में प्रकाशित होती है। अधिक से अधिक संख्या में मंगाकर बांटे तथा नये संस्करण छापने में सहयोग देकर इस धर्मप्रचार कार्य में हमारे सहयोगी बनें।

६. वेद मन्दिर गौशाला में गौदान करें तथा गऊओं के लिए चारा आदि की व्यवस्था हेतु मुक्तहस्त से दान देकर गौरक्षा अभियान में सहयोगी बनें।

दयानन्द संस्थान २२५६, आर्य समाज मार्ग, करौलबाग, नई दिल्ली-११०००५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समाचार दर्शन

आर्यसमाज नया बांस का वार्षिकोत्सव

दिल्ली/ राजधानी की पुरानी आर्य समाजों में अग्रण आर्यसमाज नया बांस का वार्षिकोत्सव दिनांक २७ से ३१ दिसम्बर तक आयोजित होगा। आर्य समाज के प्रधान श्री ओमप्रकाश कपड़ेवाले मंत्री श्री धर्मपाल एवम् श्री ब्रह्मानन्द ने क्षेत्रीय जनता से उत्सव में बड़ी संख्या में भाग लेने का आह्वान किया है। वार्षिकोत्सव के अवसर पर अनेक प्रमुख आर्य विद्वान वैदिकधर्म की महत्ता एवम् वर्तमान परिस्थितियों में महर्षि दयानंद के चिंतन दर्शन की उपादेयता पर प्रकाश डालेंगे।

आर्य-उपदेशकों का अभिनन्दन

अलीगढ़/ वेदप्रचार मण्डल, आर्यसमाज विद्युतगृह कासिमपुर (अलीगढ़) द्वारा दि. २१ से २३ अक्तूबर २०००ः तक यज्ञ, वेदकथा, सम्मेलन और रात्रि प्रचार के विस्तृत कार्यक्रमों के साथ आपरेटर्स क्लब में महोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री महेशचन्द्र संगीतरत्न तथा आर्यलेखक- कवि पं. देवनारायण भारद्वाज, अध्यक्ष वेद-मनीषा-न्यास अलीगढ़ का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया।

आर्य लेखक का सम्मान

(हाथरस) बाल हितैषी संघ दिल्ली का २५ वाँ स्थापना दिवस दि. १० से १२ नवम्बर २००० तक सासनी (हाथरस) में समारोह मनाया गया। संघ के संस्थापक एवं महामंत्री आचार्य महावीरसिंह राठी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को प्रदर्शित करने वाली विशाल समाजोत्थान प्रदर्शनी के एल. इन्टर कालिज सासनी में लगाई गई। छात्र-छात्राओं के भाषण एवं संगीत प्रतियोगिता हुई जिसमें कन्या गुरुकुल हाथरस की ब्रह्मचारिणियों ने भी भाग लिया। इस अवसर पर कविगोष्ठी के साथ-साथ सम्मान समारोह डॉ. गोपीनाथ मिश्र अलीगढ़ की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें आर्यलेखक पं. देवनारायण भारद्वाज, अध्यक्ष वेद-मनीषा-न्यास अलीगढ़, लेखक कवि सम्पादक वृन्दावन त्रिपाठी प्रतापगढ़, तथा सामाजिक कार्यकर्ता चौ. भगवानसिंह हाथरस को अभिनन्दन के उपरान्त समाज हितैषी सम्मानापाधि से अलंकृत किया गया।

तीन दिवसीय ऋषि मेला संपन्न

अजमेर/ महर्षि दयानन्द का वेदों का ज्ञान विश्व भर में फैलाने का संकल्प विश्व को आर्य बनाने एवं वेदों का ज्ञान संसार में फैलाने की इच्छा अभी पूरी नहीं हुई है। आर्य समाज को इस मिशन को पूरा करने के लिए सामाजिक कुरीतियों एवं धार्मिक रूढ़ियों के खिलाफ जोरदार अभियान चलाना होगा। इस संकल्प के साथ परोपकारिणी सभा के तत्त्वावधान में यहां ऋषि उद्यान में महर्षि दयानन्द के ११७ वें निर्वाण दिवस की स्मृति में आयोजित तीन दिवसीय ऋषिमेला पांच नवम्बर को संम्पन्न हो गया। ऋषि मेले का शुभारंभ प्रख्यात संन्यासी स्वामी सर्वानंद सरस्वती ने वैदिक ध्वज फहराकर किया। उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि वेद परमात्मा की वाणी है और इसकी शिक्षाओं पर चलकर ही व्यक्ति मोक्ष प्राप्त कर सकता है। वेद सभी विद्याओं का भंडार है। इसलिए महर्षि दयानंद ने मानव मात्र को केवल वेद की शिक्षाओं पर ही चलने का उपदेश दिया। वेदों के ज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए ही महर्षि ने आर्यसमांज की स्थापना की। समारोह में परोपकारिणी सभा के कार्यकारी प्रधान स्वामी ओमानंद सरस्वती ने भी विचार व्यक्त किए। परोपकारिणी सभा के मंत्री गजानंद आर्य ने वाहर से आए सभी श्रद्धालुओं का स्वागत किया। आर्यवीरों ने ध्वज गीत प्रस्तुत किया। ऋषि मेले के प्रथम दिन शुक्रवार को दोपहर में स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में आर्य युवक सम्मेलन संपन्न हुआ। ऋषि मेले के अवसर पर परोपकारिणी सभा एवं अंतर्राष्ट्रीय दयानंद वेदपीठ की ओर से वेदों में पदार्थ विद्या विषय पर वेद गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें डॉ. सुरेन्द्रकुमार, झज्जर, डॉ. कृष्णपाल, देवर्षि दिनेश, वेदपाल शास्त्री, प्रदीप नैष्ठिक तथा महावीर मीमांसक आदि वैदिक विद्वानों ने शोध लेख पढ़े। ऋषि मेले के अंतिम दिन कर्मचन्द स्मृति न्यास की ओर से कई पीढ़ी पुराने आर्य परिवारों का सम्मान किया गया। सम्मान समारोह में श्री गजानंद आर्य ने बीकानेर के रामनारायण स्वामी, सुजानगढ़ के सोहनलाल लड्ढा, राजगढ़ के मथुरा प्रसाद एवं व्यावर की श्रीमती रामकृष्ण रावत को सम्मान स्वरूप शाल भेंट किया। सभा के कोषाध्यक्ष श्री कर्मचन्द जी गुप्त ने श्रीफल भेंट किया।

मानव सेवा प्रतिष्ठान (दिल्ली)

दिल्ली। मानवसेवा प्रतिष्ठान की ओर से छात्रवृति प्रदान समारोह १० दिसम्बर को गुरुकुल में आयोजित किया जायेगा । **मुख्य अतिथि** :- डॉ. योगानन्द जी शास्त्री, मन्त्री (दिल्ली सरकार) होंगे। **संयोजक** - श्री जगवीरसिंह, प्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

1.	चारों वेदों का हिन्दी भाष्य	मूल्य 1600 रु.
2.	सामदेव : आध्यात्मिक भाष्य	201 रु.
3.	वेद ज्योति चारों वेदों के चुने हुये (100-100 मन्त्रों की व्याख्या)	45 रु.
4.	वेदांजलि : (वर्ष के 365 दिनों के लिए 365 वेद मंत्रों की व्याख्या)	75 रु.
5.	सोमसरोवर : (सामवेद के पावमान पर्व की व्याख्या	60 रु.
6.	भारत के वीर बच्चों की कहानियां	8 रु.
7.	धरती का स्वर्ग	8 रु.
8.	सरस्वतीन्द्र जीवन (दयानन्द काजीवन चरित्र)	50 रु.
9.	महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन परिचय)	12 रु.
10.	धर्म का सार (धर्म का रहस्य बताने वाली कथाएं)	8 रु.
11.	स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (जीवन परिचय)	4 रु.
12.	वैदिक सम्पत्ति	151 रु.
13.	धर्म का मार्ग (धर्म के दस लक्षणों की सरल व्याख्या)	8 रु.
14	योगासन	4 रु.
15.	योग और ब्रह्मचर्य	8 रु.
16.	Inside the Congress	60 रु.
17.	Life and Teachings of Swami Dayanand	200 रु.
18.	The History of the assassins	60 रु.
19.	Concept of God	50 रु.
20.	श्रीमद्दयानन्द प्रकाश	60 रु.
21.	Light of Truth	150 रु.
22.	प्रकृति और सर्ग (आचार्य उदयवीर शास्त्री)	10 रु.
23.	वैदिक गीता का सरल हिन्दी भाष्य	60 रु.
24.	संक्षिप्त महाभारत	50 रु.
25.	संक्षिप्त रामायण	15 रु.
26.	ऋग्वेद शतकम	8 रु.
27.	चतुर्मास की चार पूर्णिमाएं	25 रु.
28.	सत्संग पद्धति	4 रु.
29.	वैदिक सान्ध्य गीत	8 रु.
30.	A Short Life Story of Swami Dayanand	30 रु.
31.	गायत्री मन्त्र का चार्ट, हिन्दी व्याख्या सहित दोनों ओर पत्ती लगा, कम से कम दस प्रति मंगायें	4 रु.

100 रु० से अधिक साहित्य पर 15 प्रतिशत 300 रु० से अधिक लेने पर 20 प्रतिशत तथा 500 रु० से अधिक लेने पर 25 प्रतिशत होगा। आदेश के साथ चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

हिन्दू धर्म रक्षक साहित्य बांटिये

1.	क्या आप सारा भारत दारूल इस्लाम बनने देंगे?	1.00 रु.
2.	हिन्दुओं को चेतावनी-वेदभिक्षुः	1.00 रु.
3.	भारत के मुसलमानों का क्या करें? - वेदभिक्षुः	1.00 रु.
4.	हम सब हिन्दू हैं- वीर सावरकर	1.00 रु.
5.	इस्लाम में क्या है? "राकेश रानी"	1.00 रु.
6.	इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियाँ - जहीर नियाज़ी	1.00 रु.
7.	हिन्दू जागो! देश बचाओ	1.00 रु.
8.	इस्लाम - एक परिचय	1.00 रु.
9.	पोप की सेना का भारत पर हमला - वेदभिक्षुः	1.00 रु.
10.	पादरियों को चुनौती	1.00 रु.
11.	बाईबल की चुनौती	1.00 रु.
12.	क्या ईसा खुदा का बेटा था?	1.00 रु.
13.	और पादरी भाग गया	1.00 रु.
14.	हमने इस्लाम क्यों छोड़ा?	1.00 रु.
15.	क्या भारत का एक और विभाजन होगा?	1.00 रु.
16.	हिन्दू राष्ट्र के नाम मां का संदेश	1.00 रु.
17.	हिन्दू जागेगा, देश का संकट भागेगा।	1.00 रु.
18.	A challange to the Christian Faith	50 पैसे
19.	वीर सावरकर - संक्षिप्त जीवन परिचय	1.00 रु.
20.	मोपला (उपन्यास) - वीर सावरकर	8.00 रु.
21.	जनज्ञान का 'सावरकर विशेषांक'	7.00 रु.

एक रुपये वाली "हिन्दू धर्म रक्षक" साहित्य की 1000 पुस्तकें मंगाने पर 50 प्रतिशत और 500 पुस्तकें मंगाने पर 25 प्रतिशत कमीशन है। प्रत्येक आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा कम से कम चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

व्यवस्थापक – दयानन्द संस्थान
2286-आर्य समाज मार्ग, नई दिल्ली-5

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान (मासिक) वेद मन्दिर— महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम, तेग्रामनगर (इब्राहीमपुर) पो. आ. मुखमेलपुर दिल्ली-36	मार्गशीर्ष २०५७ दिसम्बर-२०००	Posted at N.D. PSO on Date 5 & 6 -Delhi Postal Registration No. DL-11185/2000 R.N. 10719/65

ओ३म्

जो भी है हिन्दू का घर, गूंजे वहां वेद का स्वर

ऋग्वेद सामवेद यजुर्वेद अथर्ववेद

परमात्मा की अमरवाणी

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य -१६००/- रु.
अभी लेने पर -१२००/- रु.

☆ ☆ ☆

(मन्त्र-शब्दार्थ-छन्द-स्वर देवता आदि सहित
२३x३६ से. मी. साइज में पृष्ठ २२००
बढ़िया सुनहरी जिल्दें। वजन लगभग ८ किलो
आज ही अपने तथा अपने मित्र परिवारों में लायें।

☆ ☆ ☆

श्रेष्ठ बढ़िया पेपर पर ३०००/- रु. अब २२५०/- रु. में प्राप्त करें

आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा ½ धन अग्रिम भेजें।

व्यवस्थापक : दयानंद संस्थान, २२८६ आर्य समाज मार्ग करोल बाग नई दिल्ली -५
दूरभाष :- ५७२४७४१, ५८१५४५७

प्रधान कार्यालय : महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम, वेदमन्दिर, इब्राहीमपुर, दिल्ली - ३६
दूरभाष :- ७२०२२४९

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi